वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 239

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार

भारत यात्रा

-लेखक-

विजय कुमार जैन (कानपुर)

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में जन्मभूमि दिगम्बर जैन समिति एवं बिहार सरकार पर्यटन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक आयोजित कुण्डलपुर महोत्सव एवं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 70वें जन्मजयंती समारोह के अवसर पर प्रकाशित

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	10 अक्टूबर, 2003	मूल्य
1100 प्रति	शरद पूर्णिमा	30.00

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल, खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं बृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया था और कैलाशपर्वत से निर्वाणपद को प्राप्त किया था। हुण्डावसर्पिणी काल का कुछ ऐसा अभिशाप रहा कि लोग भगवान ऋषभदेव को तो भूल गए और चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक मानने लग गए। पाठ्यपुस्तकों में भी यह पढ़ाया जाने लगा कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक थे अगर कोई बच्चा इस बात का विरोध करता तो उसे डांटकर चुप करा दिया जाता और वह बच्चा चुप होकर बैठ जाता। लेकिन जैसा कि आप लोग यह अच्छी तरह से जान चुके हैं कि ज्ञानमती माताजी को आगम विरुद्ध बात सुनने की आदत नहीं है। उन्होंने जब पाठ्य पुस्तकों में यह देखा कि हमारे अंतिम एवं चौबीसवें तीर्थंकर को जैनधर्म का संस्थापक बताया जा रहा है तो उन्हें बड़ा कष्ट हुआ और उन्होंने खूब चिन्तन-मनन करके भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया। सर्वप्रथम उन्होंने भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या में जाकर वहाँ का विकास कार्य करवाया, वहाँ दो नए मंदिरों का निर्माण करवाया और उस "राम जन्मभूमि " अयोध्या को "ऋषभ जन्मभूमि" अयोध्या के नाम से विश्व के क्षितिज पर पहुँचाने में सफलता प्राप्त की पुनः उन्होंने राजधानी दिल्ली में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थंकरों के २४ कल्पद्रुम मण्डल विधानों का आयोजन कराया। जिसमें राजधानी सहित देश के विभिन्न स्थानों के भक्तों ने भाग लिया।

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार भी उन्हीं की प्रेरणा का प्रतिफल है। २२ मार्च १९९८ को दिल्ली के लाल किला मैदान से लाखों जनसमुदाय के मध्य प्रवर्तित समवसरण श्रीविहार को ९ अप्रैल १९९८ को भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित किया। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, म.प्र., महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में इस समवसरण श्रीविहार के माध्यम से अहिंसा एवं शाकाहार का खूब प्रचार-प्रसार हुआ और जैन ही नहीं जैनेतर बन्धुओं ने भी इससे खूब लाभ प्राप्त किया। सम्पूर्ण भारत में प्रवर्तित यह समवसरण वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली" प्रयाग-इलाहाबाद तीर्थ पर विराजमान है।

समवसरण का श्रीविहार पूरे भारत देश में हुआ यहाँ तक तो ठीक है परन्तु अब प्रश्न यह उठता है कि इसका सफल संचालन एवं संयोजन किसने किया? किसने इस समवसरण श्रीविहार के साथ पूरे भारत की यात्रा की? किसने लाखों-लाख लोगों को समवसरण का दर्शन कराकर महान पुण्य अर्जित किया? तो आपको जानना है कि तिवरी (जबलपुर) के ख्यातिप्राप्त विद्वान् पं. सुधर्मचन्द्र शास्त्री ने इसका सफल संचालन किया उन्होंने अपने ओजस्वी वक्तव्य के द्वारा हजारों मांसाहारियों को शाकाहारी बनाया, सैकड़ों अधर्मियों को धार्मिकता का पाठ पढ़ाया तथा इसका कुशल संयोजन किया कानपुर निवासी युवारत्न श्री विजय कुमार जैन (पिंकू) ने। जिन्होंने अपने अमूल्य समय को इस महान कार्य के लिए समर्पित किया। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने अपने खट्टे-मीठे अनुभवों का सुन्दर वर्णन किया है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन्होंने भारत भ्रमण में हुए कष्टों को कभी महसूस नहीं किया हमेशा हंसकर उसका सामना किया। किसी भी तरह के विरोध को वे बड़ी ही शांति से सुलझा देते थे यह युवा जोश के साथ उनकी कार्यकुशलता का परिचायक है।

इस प्रकार "भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार भारत यात्रा" नामक इस पुस्तक को पढ़कर आप भी घर बैठे सम्पूर्ण देश की यात्रा का आनन्द प्राप्त करें। इन संस्मरणों को पढ़कर मुझे भी लगभग १५-२० साल पहले के संस्मरण याद आ जाते हैं जब पूज्य माताजी की प्रेरणा से ४ जून १९८२ को दिल्ली के लाल किला मैदान से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी ने "जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति" का उद्घाटन किया था। उस समय मुझे भी कई जगह उस ज्ञान ज्योति यात्रा में जाने का अवसर प्राप्त होता था। उस समय लोगों की भक्ति, लोगों का उत्साह देखकर मन में बहुत प्रसन्नता होती थी। कहीं-कहीं तो अगर हम समयाभाव के कारण ज्ञानज्योति को नहीं ले जा पाते थे तो लोग सड़क पर ही लेट जाते थे और ज्ञानज्योति को अपने नगर में ले जाकर ही संतुष्ट होते थे। उन सभी संस्मरणों को तो आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने "ज्ञान ज्योति की भारत यात्रा" नामक पुस्तक में लेखनीबद्ध किया है।

अब आप प्रस्तुत पुस्तक को पढ़कर इस समवसरण की महिमा से परिचित हों तथा अपने जीवन को ज्ञानमयी बनाएं यही इस पुस्तक की सार्थकता होगी।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

सरस्वती लक्ष्मी जहाँ, नितप्रति करें प्रणाम।
पुण्यमयी उस धाम का, समवसरण है नाम।।

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भारत की धरती पर सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या नगरी में जन्म लेकर प्रयाग-इलाहाबाद में केवलज्ञान प्राप्त किया था। तब सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने अर्धनिमिषमात्र में ही आकाश में अधर दिव्य समवसरण की रचना कर दी थी।

उस समवसरण की महिमा का वर्णन करते हुए आचार्य कहते हैं—

"जिस मार्ग से भगवान का श्रीविहार हो जाता है वह मार्ग अपने चिन्हों से एक वर्ष तक यह प्रगट करता था कि यहाँ भगवान का विहार हुआ है तथा रत्नवृष्टि से वह मार्ग ऐसा सुशोभित होता था जैसे नक्षत्रों के समूह से ऐरावत हाथी सुशोभित होता है। भगवान से अनुग्रहीत भूमि में दो सौ योजन तक विप्लव आदि नहीं होते थे तथा पचास वर्ष तक उस भूमि में कोई भी उपद्रव आदि नहीं होते थे। यह भगवान की महिमा ही समझनी चाहिए।"

इसी प्रकार भगवान के समवसरण के दर्शन की महिमा का उदाहरण बहुत ही सुन्दर है—

"एक बार भगवान के समवसरण में सम्राट चक्रवर्ती भरत के विवर्द्धन कुमार आदि नौ सौ तेईस पुत्र (राजकुमार) पहुँचे। वे जन्म के गूँगे थे और वहाँ पहुँचते ही भगवान के दर्शन करके बोल पड़े, भगवान की स्तुति करने लगे पुनः वहीं पर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली। वे सभी नौ सौ तेईस जीव सीधे निगोद से आए थे उन्होंने इसके पूर्व कभी त्रसपर्याय ही नहीं पाई थी। समवसरण के प्रभाव से वे प्रतिबोध को प्राप्त हो गए और एकदम दीक्षा लेकर उसी भव से मुक्ति को प्राप्त कर लिया।"

वास्तव में कितनी महिमा है भगवान के समवसरण की!

आमतौर पर समवसरण में भगवान की दिव्यध्वनि तीन या चार बार तो खिरती ही

है इससे अतिरिक्त समय में श्री गणधरदेव, इन्द्र या चक्रवर्ती के प्रश्नों से असमय में भी दिव्यध्वनि खिर जाती है क्योंकि यह स्वाभाविक है कि केवलज्ञान होने के बाद भगवान की इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं सब कुछ निसर्गता ही हो जाता है। कहा भी है-

अनात्मार्थं बिना रागैः शास्ता शास्ति सतो हितम्।
ध्वनन् शिल्पिकरस्पर्शान् मुरजः किमपेक्षते?

जिस प्रकार मृदंग को चाहे जो कोई बजाए उसमें ध्वनि होने लगती है वह किसी व्यक्तिविशेष की अपेक्षा नहीं रखता है ठीक उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान की वाणी बिना किसी राग के अथवा बिना किसी प्रयोजन के सज्जन पुरुषों के हित के लिए असमय में भी खिर जाती है।

भगवान के समवसरण में स्त्री-पुरुष, मनुष्य-पशु किसी का भी भेदभाव नहीं रहता है वहाँ रात्रि-दिन का भी भेद नहीं रहता है।

हमने भले ही उस साक्षात् समवसरण के दर्शन नहीं किए परन्तु २२ मार्च१९९८ को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से प्रवर्तित "भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ" के अंदर स्थापित धातुनिर्मित समवसरण के दर्शन करके अपने जीवन को सौभाग्यशाली समझा। इस समवसरण श्रीविहार के दर्शन करके कितने पतितों का उद्धार हो गया, अनेकानेक लोगों की समस्याएं सुलझ गईं, कितनों को मनवांछित फल की प्राप्ति हो गई तथा कितने ही प्राणियों ने मिथ्यात्व का त्यागकर सम्यग्दर्शन को ग्रहण कर लिया।

सम्पूर्ण भारत में इस यात्रा का सफल प्रवर्तन करने हेतु विजय कुमार जैन (कानपुर) को संयोजक पद का भार प्रदान किया गया था, जिसका उन्होंने पूरी तरह निर्वहन किया है तथा श्रीविहार यात्रा में हुए अपने अनुभवों को इस पुस्तक में सुन्दर ढंग से लेखनीबद्ध किया है जो कि प्रशंसनीय कार्य है। वे आगे भी इसी प्रकार धर्मरूपी रथ को हमेशा आगे बढ़ाने में सफलता प्राप्त करें यही उनके उज्जवल भविष्य के लिए मंगल कामना है।

इस पुस्तक को पढ़कर आप सभी पाठकगण घर बैठे ही भारत यात्रा का आनन्द प्राप्त करें यही इसकी सार्थकता होगी।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। सन् १९७२ में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् १९७५ से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, कमरे, फ्लैट, कोठियां आदि बन चुके हैं, निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन होते रहते हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन सन् १९७४ से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही सन् १९७४ में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से २५० से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् १९७५ से प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति ५ वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से ४ महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९८२ में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का १०४५ दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् १९९८ में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं वर्तमान में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से प्रवर्तित "**भगवान महावीर ज्योति**" रथ के

भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान प्राप्त कर रहा है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में ४ फरवरी सन् २००० को प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित "भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव" सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् २०००-२००१ में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रयाग, इलाहाबाद में "**तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली**" तीर्थ का नवनिर्माण हुआ है तथा ६ अप्रैल सन् २००१ को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य माताजी द्वारा रचित "विश्वशांति महावीर विधान" का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर २००१ में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत वर्तमान में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से चल रहा है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का वीर नि. सं. २५२९, ईसवी सन् २००३ का यह चातुर्मास "कुण्डलपुर" में हो रहा है। माताजी ने चातुर्मास में ८-८ कोश तक चारों दिशाओं की सीमा रखी है उसी के अंतर्गत पावापुरी और राजगृही आ जाने से माताजी ने राजगृही में "वीरशासन जयंती पर्व समारोह" में सानिध्य प्रदान किया है एवं दीपावली के समय पावापुरी में सानिध्य प्रदान करेंगी, यह प्रसन्नता का विषय है।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

समवसरण श्रीविहार की सम्प्रेरिका

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का

~:जीवन परिचयः~

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण स्वर्णिम इतिहास का एक नवीन पृष्ठ है, जिनका प्रत्येक कदम एक नये तीर्थ के निर्माण का प्रारंभ है, जिनकी विचार परम्परा का प्रत्येक बिंदु अपने में सागर की गहराईयों को समाहित किये हुए है, जिनकी लेखनी से निकला प्रत्येक शब्द जिनागम का सार है और जिनकी प्रत्येक चर्या 'मूलाचार' को साक्षात प्रस्तुत करती हुई दिखायी पड़ती है, ऐसी परम आदरणीय पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से जहाँ एक ओर कितने ही तीर्थक्षेत्रों-हस्तिनापुर, अयोध्या, माँगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि का पुनर्निर्माण एवं विकास हुआ है, वहाँ ही अपनी प्रेरणाओं के द्वारा वह समाज को नित-नवीन पथ प्रदान कर रही हैं।

पूज्य माताजी का जन्म २२ अक्टूबर १९३४, आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) को टिकैतनगर, जिला-बाराबंकी (उ.प्र.) में श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी की पवित्र कुक्षि से हुआ था। बचपन में ही धार्मिक ग्रंथों (मुख्यतः **पद्मनंदिपंचविंशतिका**) के स्वाध्याय एवं पूर्व जन्मों में उपार्जित पुण्य के प्रभाव से आपकी वैराग्य भावना प्रबल होती गयी और १८ वर्ष की अल्प आयु में आपने सन् १९५२ में शरद पूर्णिमा के ही दिन आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज द्वारा आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं सप्तम प्रतिमा के व्रतों को ग्रहण कर गृहत्याग कर दिया। पुनः १९५३ में आचार्य श्री से ही श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर चैत्र कृष्णा एकम को क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर '**क्षुल्लिका वीरमती**' नाम प्राप्त किया। सन् १९५६ में वैशाख कृष्णा दूज के दिन माधोराजपुरा (राज.) में परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्ट शिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर '**आर्यिका ज्ञानमती**' नाम प्राप्त किया। इस प्रकार पूज्य माताजी ने बीसवीं सदी में प्रथम **बालब्रह्मचारिणी आर्यिका** का पद प्राप्त कर क्रम से युग प्रवर्तिका, **चारित्रचंद्रिका, तीर्थोद्धारिका** एवं **गणिनीप्रमुख** जैसे उच्चतम

पदों को सुशोभित किया है।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़ एवं मराठी भाषाओं में सरल साहित्य का निर्माण आपके जीवन का अभिन्न अंग रहा है और इसीलिए २५० से भी अधिक ग्रंथों की रचयित्री होने से आपको वर्तमान समाज की प्रथम लेखिका साध्वी के रूप में स्वीकृत किया जाता है। वर्तमान में आप '**षट्खण्डागम**' ग्रंथ की संस्कृत टीका लिख रही हैं, जिसका प्रथम भाग (हिन्दी सहित) प्रकाशित हो चुका है और इस समय आप षट्खण्डागम के चतुर्थ खंड की १२वीं-१३वीं पुस्तक की टीका का लेखन चल रहा है। सतत ज्ञानाराधना करते हुए जहाँ एक ओर पूज्य माताजी ने अनेकों भव्य जीवों को अपनी वात्सल्ययुक्त प्रेरणा से धर्ममार्ग में आरूढ़ करके चेतन तीर्थों का निर्माण किया है, वहीं दूसरी ओर धर्मप्रभावना का उद्देश्य रखकर न जाने कितने तीर्थों के जीर्णोद्धार एवं विकास का महान कार्य भी सम्पन्न किया है तथा प्रतिक्षण इसी भावना में आप तन्मय हैं जैसे हस्तिनापुर की पावन धरा पर जैन भूगोल को प्रदर्शित करती हुई विश्व की अद्वितीय '**जम्बूद्वीप रचना**', '**शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या**' में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक के साथ तीर्थ का जीर्णोद्धार, '**मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र**' पर सहस्त्रकूट कमलमंदिर का निर्माण कराया एवं वहाँ पर्वत पर भगवान ऋषभदेव की १०८ फुट ऊँची प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा तथा मांगीतुंगी यात्रा के मध्य कई तीर्थों एवं नगरों में अनेक नवनिर्माण की प्रेरणा आदि। इसी क्रम में पूज्य माताजी की दृष्टि सन् १९९३ से २४ तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों पर पड़ी और उनके विषय में प्रचलित नाना भ्रान्तियों के बारे में जब उन्होंने जाना तो उन्होंने प्राचीन आचार्यों के द्वारा प्रणीत ग्रन्थों से साररूप चौबीसों तीर्थंकरों के जीवनवृत्त को निकालकर सभी को उस विषय में अनेक ग्रंथों के लेखन द्वारा परिचित करवाया, साथ ही उनकी जन्मभूमियों के विकास हेतु एक शंखनाद किया और उस शंखनाद की गूंज जब सम्पूर्ण भारतवर्ष के जनमानस ने सुनी तो उन सबमें भी नई चेतना जागृत हुई और वर्षों से उपेक्षित अनेकों जन्मभूमियों का विकास कार्य पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रारंभ हो गया। वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा से "भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ" पर विकास कार्य द्रुतगति से चल रहा है इसके अतिरिक्त राजगृही, पावापुरी, गुणावां, सम्मेदशिखर आदि तीर्थों पर भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से विकास कार्य चल रहे हैं। पूज्य माताजी की कई वर्षों से आंतरिक इच्छा थी कि इन तीर्थंकर

भगवन्तों की जन्मभूमियों का सरस भाषा शैली में गुणानुवाद कर, उनका विधान रचकर जनमानस को उससे परिचित करवाया जाए, उन्होंने इस कार्य हेतु मुझे प्रेरणा प्रदान की और मैंने उनके शुभाशीर्वाद को प्राप्त कर इस विधान की रचना की जो कि वर्तमान में तीर्थंकर भगवन्तों के जीवनवृत्त को, जनमानस को सुगमता से बोधित कराकर मिथ्या भ्रांतियों के निराकरण में सहकारी होगा और आगे भी सभी को दिशाबोध प्रदान करेगा ऐसा मुझे विश्वास है।

इन सभी विविध कार्यों की प्रेरणा में पूज्य माताजी का विशेष लक्ष्य जैनधर्म की प्राचीनता एवं इनके सर्वोदयी सिद्धान्तों को जन-जन में पुनर्स्थापन करना ही है। इसी संदर्भ में माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में विविध राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों की श्रृंखला में राजधानी दिल्ली में ''**चौबीस कल्पद्रुम विधान**'' जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में ''**भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन**'', दिल्ली में ''**भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव**'', ''**कैलाश पर्वत मानसरोवर यात्रा**'' तथा अनेक अंतर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय सेमिनारों के आयोजन आदि भी हुए। धर्मप्रभावना की दृष्टि से सम्पूर्ण भारतवर्ष में माताजी की प्रेरणा से जहाँ ''**जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति**'' रथ (सन् १९८२ में) एवं ''**भगवान ऋषभदेव समवसरण श्री विहार**" (सन् १९९८ में) का प्रवर्तन हुआ वहीं वर्तमान में ''**भगवान महावीर ज्योति**'' (सन् २००३ में)का भारत भ्रमण सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी जिनवाणी का उद्घोष करते हुए चल रहा है। इन समस्त कार्यकलापों के मध्य पूज्य माताजी की सर्वतोमुखी परिकल्पना का नया आयाम भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि प्रयाग (इलाहाबाद) में ''**तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली**" प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थ के रूप में भी विश्व को प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी के व्यक्तित्व की गहराईयों, उनकी समर्थ चिंतन परम्परा एवं प्रतिक्षण कर्मठता की वृत्ति का सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण तो किसी भी प्रकार संभव नहीं है, मात्र कुछ बिंदुओं को स्पर्श करने का ही प्रयास किया गया है। जिनेन्द्र भगवान से यही प्रार्थना है कि कलियुग की यह सरस्वती माता युगों-युगों तक जीवन्त रहें, ताकि उनके ज्ञानरूपी अमृत का संसार को सदैव-सदैव रसास्वादन प्राप्त होता रहे और अज्ञान अंधकार में भटक रहे प्राणी को ज्ञानरूपी सूर्य द्वारा योग्य मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे, यही भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

समवसरण श्रीविहार की सम्प्रेरिका

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का

मंगल-आशीर्वाद

नमः ऋषभदेवाय, धर्मतीर्थ प्रवर्तिने।
सर्वा विद्या कलायस्भादाविर्भूता महीतले।।

जब तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है तो सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर अर्धनिमिष मात्र में ही आकाश में अधर एक दिव्यसभा की रचना कर देता है जिसका नाम है ''समवसरण''। समवसरण अर्थात् जहाँ पर सबको समान रूप से शरण प्राप्त हो उसे कहते हैं 'समवसरण'। इस समवसरण में ८ भूमियाँ होती हैं, ३ कटनी होती हैं पुनः उसके ऊपर गंधकुटी में भगवान विराजमान रहते हैं। समवसरण में स्थित भगवान की इतनी महिमा रहती है कि वे पूर्व दिशा में मुख करके विराजमान रहते हैं फिर भी चारों दिशाओं में उनका मुख दिखता है। इसलिए वे ''चतुर्मुखी ब्रह्मा'' कहलाते हैं। समवसरण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बारह सभाओं में गणधर मुनि, आर्यिका, देव, देवी, मनुष्य, चक्रवर्ती आदि के साथ पशुओं के लिए भी एक कोठा निश्चित रहता है जहाँ परस्पर में जन्मजात विरोधी पशु भी मित्रता के साथ रहते हैं, यह व्यवस्था जैन शासन के अतिरिक्त कहीं भी देखने में नहीं आती है। आज से लगभग १०-१२ वर्ष पूर्व जब मैंने सुना कि लौकिक शिक्षा की पाठ्य पुस्तकों में भगवान महावीर को जैनधर्म के संस्थापक रूप में पढ़ाया जा रहा है तो मुझे बड़ा कष्ट हुआ और मैंने भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार की प्रेरणा दी। शास्त्र के आधार से भगवान ऋषभदेव का समवसरण धातु से निर्मित करवाकर एक रथ पर विराजमान किया गया और यह श्रीविहार यात्रा भारत भ्रमण के लिए प्रधानमंत्री जी की शुभकामनाओं के साथ शुभारंभ की गयी। मुझे प्रसन्नता है कि इस श्रीविहार के माध्यम से हजारों लोगों के

मन से यह धारणा निकल गई कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक थे सबने एक स्वर से यह स्वीकार किया कि भगवान महावीर २४वें तीर्थंकर हैं उनसे पहले २३ और तीर्थंकर हो चुके हैं अतः भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हो सकते हैं। कुछ लोग कह देते हैं कि भगवान ऋषभदेव जैनधर्म के संस्थापक होंगे तो ऐसा भी नहीं है। इस अनादिनिधन, शाश्वत जैनधर्म की स्थापना किसी ने नहीं की, यह प्राकृतिक धर्म है, अनादिकाल से चला आ रहा है और अनंतकाल तक चलता रहेगा।

इस श्रीविहार यात्रा के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करने का श्रेय प्राप्त किया इसके संचालक पं. सुधर्मचंद जी शास्त्री (तिवरी) एवं संयोजक विजय कुमार जैन (कानपुर) ने। इन्होंने बहुत ही सूझबूझ के साथ इस दुरूहकार्य को सम्पन्न किया है। इस पुस्तक के लेखक विजय कुमार जैन के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है कि वे अपने जीवन में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए अपने मनुष्य जन्म को सार्थक करें तथा जीवन में ऐसे-ऐसे महान कार्य करें कि वे भी शीघ्र ही साक्षात् समवसरण के स्वामी बनने का पुण्य अर्जित कर सकें। इसके अतिरिक्त जितने भी कार्यकर्ताओं एवं श्रद्धालु भक्तों ने इस यात्रा में अपना तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया है उन सभी के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

-गणिनी ज्ञानमती

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का

मंगल-आशीर्वाद

इस भारतभूमि में न जाने कितनी बार तीर्थंकर भगवान के समवसरण आए परन्तु उस समय हम लोग न जाने किन योनियों में भ्रमण कर रहे थे क्योंकि यह तो सच है कि अगर हमने उस समय समवसरण का सच्चा दर्शन कर लिया होता तो अवश्य ही संसार सागर से पार हो चुके होते।

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मस्तिष्क में ऐसे ही विचार आते हैं जो कभी किसी और ने न सोचा हो। किसी ने पहले यह नहीं सोचा कि भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या की वीरानियत को दूर करके उसका विशालस्तर पर विकास कराया जाये, २४ कल्पद्रुम विधानों का आयोजन कराया जाये, पाठ्य पुस्तकों में संशोधन कराया जाए कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हैं, या भगवान ऋषभदेव समवसरण का श्रीविहार पूरे भारतदेश में कराया जाये। ज्ञानमती माताजी केवल सोचती ही नहीं है उस काम को पूरा करके ही संतुष्ट होती हैं।

२२ मार्च १९९८ को भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का शुभारंभ राजधानी दिल्ली से हुआ पुनः ९ अप्रैल को माननीय प्रधानमंत्री जी ने भारत भ्रमण हेतु इसका प्रवर्तन किया और इसके सफल प्रवर्तन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं तथा सबसे महत्वपूर्ण बात उन्होंने यह कही कि-"कौन कहता है कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक थे? मेरे प्रधानमंत्री कार्यालय में आज भी २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है।" यह बात सुनकर सभी को अपार प्रसन्नता का अनुभव हुआ। सभी को यह विश्वास हो गया कि अब किसी को समझते देर नहीं लगेगी कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हैं बल्कि वे तो इस युग के २४वें एवं अंतिम तीर्थंकर हैं।

इस युग में सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया तथा

यौवन अवस्था में राजकार्य का संचालन करते हुए उन्होंने प्रजा को असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन छह क्रियाओं का उपदेश दिया तथा अपनी पुत्री ब्राह्मी को अक्षरविद्या और सुन्दरी पुत्री को अंक विद्या सिखाकर विद्याओं का सूत्रपात किया साथ ही अपने १०१ पुत्रों को अनेक प्रकार की शस्त्र विद्या सिखाकर जीवन जीने की कला सिखाई। जिन भगवान ऋषभदेव ने संसार के प्राणियों को जीवन जीने की कला सिखाई हो भला उनके अस्तित्व को कैसे नकारा जा सकता है?

इसी क्रम में हस्तिनापुर में १६वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ ने जन्म लिया। आज भी संसारी प्राणी शांति की इच्छा से भगवान शांतिनाथ का नाम स्मरण करते हैं।

भगवान पार्श्वनाथ, जो कि २३वें तीर्थंकर हैं उनका भी रोमांचक कथानक सभी लोग जानते हैं कि किस प्रकार कमठ और मरुभूति इन दो भाइयों में से कमठ ने मरूभूति से कई भवों तक एकतरफा बैर किया और अंत में सर्वंसहा मरुभूति पार्श्वनाथ भगवान बन गए। इस प्रकार भगवान महावीर के पूर्व के तीर्थंकरों का जीवन चरित्र भी जानने का प्रयास करना चाहिए।

जब से इस समवसरण श्रीविहार यात्रा का शुभारंभ हुआ तब से लेकर श्रीविहार समापन तक के समय में न जाने कितने प्राणियों ने मांसाहार का त्याग किया, कितनों ने अन्य व्यसनों का त्याग, कितनों ने अहिंसा धर्म को अपनाया और न जाने कितनों ने जैनधर्म की शाश्वत सत्ता को समझा। जन-जन को समवसरण के दर्शन कराने का, उसकी महिमा से परिचित कराने का श्रेय प्राप्त किया इस श्रीविहार के संचालक पं. सुधर्मचंद शास्त्री (तिवरी) तथा संयोजक विजय कुमार जैन (कानपुर) ने। जहाँ इस दुनिया में अच्छे लोग है वहीं कुछ दुराग्रही लोग भी रहते हैं उन सबका सामना करते हुए इन लोगों ने जिस पुरुषार्थ के साथ इसे ३ वर्षों तक पूरे भारत में घुमाया है, वह वास्तव में सराहनीय कार्य है। मेरा इस श्रीविहार यात्रा के संचालक के साथ-साथ इस पुस्तक के लेखक संयोजक विजय कुमार के लिए बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है कि वे जीवन में खूब उन्नति करें तथा एक दिन साक्षात् समवसरण का दर्शन प्राप्त करें तथा इस यात्रा के साथ कार्यरत अन्य सभी कार्यकर्ताओं के लिए भी मेरा खूब-खूब मंगल आशीर्वाद है।

-आर्यिका चन्दनामती

पूज्य पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज का

मंगल-आशीर्वाद

धर्मप्रचार के अनेक माध्यमों में से रथप्रवर्तन भी एक सशक्त माध्यम है। रथ प्रवर्तन कराना परिश्रम वाला कार्य है किन्तु सफलता कई गुनी प्राप्त होती है। देशभर के जैन तथा जैनेतर भाई-बहनों को अपने मिशन से परिचित कराने का सक्षम साधन है।

मुझे सन् १९८२ से १९८५ तक जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन कराने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ था। समाज के बंधु कितनी आत्मीयता से रथ प्रवर्तन में अग्रसर होते थे उसे शब्दों में लिखना कठिन है। अपने नगर से दूर तक जाकर भक्तिभाव से रथ की अगवानी करके उल्लासपूर्ण वातावरण में नगर प्रवेश कराते थे। नगर को सजाते थे। जय जयकार करते थे। रथ के साथ चलने वाले बंधुओं का भावभीना स्वागत करते थे। शोभायात्रा में रथ पर बैठने के लिए बढ़-चढ़ कर बोलियां लेते थे, जिन्हें बोलियां नहीं मिल पाती थीं वे बिना बोली के अपनी राशि दानस्वरूप भेंट करते थे। शोभायात्रा के मार्ग में दर्शकों को प्रसाद देते थे।

बिना किसी भेदभाव के सभी धर्म व जाति के बंधु रथ का स्वागत करते थे, आरती करते थे।

समाज के लगनशील कार्यकर्ता मुख्यमंत्री, मंत्री, राज्यपाल, सांसद, विधायक, नगरपालिकाओं के अध्यक्ष, महापौर, शिक्षाविद्, विभिन्न विभागों के उच्च पदाधिकारियों, नगर पंचायत के सरपंचों, पंचों आदि को आमंत्रित कर उनसे रथ का स्वागत कराते थे तथा उन्हें जैनधर्म की महानता से परिचित कराते थे। आने वाले अतिथि भी अपने भाग्य की सराहना करते थे तथा बुलाने वालों का धन्यवाद करते थे कि उन्हें ऐसा शुभ अवसर प्रदान किया गया।

रथ प्रवर्तन से हमें देश के हजारों नगरों में जाने का, हजारों जिनमंदिरों के दर्शन का, लाखों धर्मस्नेही भाई बहनों से मिलने का, उन्हें अपना उद्देश्य बताने का, भिन्न-भिन्न प्रदेशों की संस्कृति व सांस्कृतिक ऐतिहासिक वैभव देखने का जो स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ, जितना सम्मान मिला, जितना स्नेह मिला वह लाखों करोड़ों रुपया खर्च करने पर भी किसी को प्राप्त नहीं हो सकता।

जिन ग्रामों को छोटे समझकर छोड़ दिया जाता था वहाँ के धर्मबंधु जानकारी

मिलने पर बिना पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के भी रास्ते में आकर रथ रोककर स्वागत व आरती कर लेते थे तथा अपनी श्रद्धाभक्ति से अर्थांजलि भी भेंट करते थे। कहीं-कहीं नगरभ्रमण भी कराना पड़ता था।

कहीं-कहीं निर्धारित समय से दो चार घंटे विलम्ब से पहुँचने पर भी लोग उलाहना न देकर उत्साहपूर्वक कार्यक्रम करते थे। कहीं-कहीं रात्रि में १२ बजे तथा कहीं प्रातः ४ बजे भी सभाएं हुईं तथा शोभायात्रा निकाली गयी। कुछ नगरों में बरसती बरसात में भी शोभायात्रा निकाली गई।

कहीं ऐसा भी हुआ कि वहाँ पहुँचने पर नगरवासियों ने कहा कि हम कार्यक्रम नहीं कर पावेंगे हम आरती करके मात्र ५००/-रु. भेंट में दे देंगे। हमने कहा कि हम मात्र रुपया लेने नहीं आए हैं। हम किसलिए आये हैं सबसे पहले यह सुनें। हमारे पास लाइट, माइक, बिछायत सभी साधन हैं मात्र आप लोग कुछ देर के लिए बैठ जावें और सुनें तभी हमारे आने का उद्देश्य पूरा होगा। हमारे विचारों से प्रभावित होकर पूरा कार्यक्रम करते तथा बाद में बताते कि हम डर रहे थे कि कैसे स्वागत करेंगे इत्यादि। अनेक नगरों-ग्रामों की ग्रामीण जनता ने शराब, अंडे, मांस, मछली खाने का त्याग किया।

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ भी उसी के अनुरूप प्रवर्तित हुआ। जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन से हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का अति आकर्षक निर्माण हुआ तथा समवसरण रथ प्रवर्तन से प्रयाग-इलाहाबाद में ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली'' का भव्य निर्माण हुआ।

इन रथों के प्रवर्तन से तत्संबंधी तीर्थों को देखने का भी जनमानस में आकर्षण उत्पन्न हुआ है। तपस्थली प्रयाग में अब देश के विभिन्न भागों से जैन व जैनेतर यात्रियों का निरंतर आगमन हो रहा है।

यह पुस्तक रथ प्रवर्तन कार्यक्रम को चिरकाल तक स्मरण कराती रहेगी तथा आगे आने वाली पीढ़ी को जैन संस्कृति को दिग्दिगंत व्यापी प्रचारित करने में प्रेरणास्त्रोत बनेगी। सभी के मंगल के लिए शुभभावना।

नंद्यावर्त, कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार **पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर**
२४-९-२००३

मेरा अनुभव

-विजय कुमार जैन (संयोजक)

आज सारे देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी जैनधर्म का संस्थापक भगवान महावीर स्वामी को मानते हैं लेकिन वास्तविकता से लोगों का परिचय नहीं है। ऐसे में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने समवसरण रथ के माध्यम से जो ऐतिहासिक कार्य किया है शायद ही इसकी कोई मिशाल मिले। पूज्य माताजी का यह समयोचित कार्य था। जैसा कि सभी कार्यों का समय निश्चित होता है उसी प्रकार से समय की यह मांग थी कि जैनधर्म की ऐतिहासिका से जन-जन को परिचित कराया जाये। राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान से एक ज्योति को लेकर सारे देश के नगर-नगर व डगर-डगर पर जाना व इसके माध्यम से एक जन जागरण का कार्य करना व हिंसकों को अहिंसक बनाना, मांसाहारियों को शाकाहारी बनाना। दूसरों को तो हमने अपनी आँखों से देखकर इस पुस्तक में लिख दिया लेकिन वास्तविकता में जब उद्घाटन सत्र में मैं दिल्ली आया और कार्यक्रम देखा मन खुश हो गया और और सोचने लग गया कि १०-१५ दिन इसके साथ मैं भी घूम लूं लेकिन कार्य व्यस्तता के कारण सिर्फ सोच ही सकता था।

सबसे पहले मोरीगेट के मंदिर में महाराज जी (मोतीसागर) ने मुझसे कहा कि तुम्हें इसके संग जाना है। तब तो मैं सोच भी नहीं सकता था कि जाऊँ। क्योंकि मैं तो सिर्फ मंदिरों में चावल चढ़ाने के सिवाय और कुछ जानता ही नहीं था, समाज के सामने जाना और कार्यक्रम करना एकदम असंभव कार्य था। दूसरे दिन छोटी माता जी (चंदनामती) ने मुझसे उसी बात को दोहराया, मन न होते हुए भी संकोच वश माता जी को मना नहीं कर पाया। मन में मैंने सोचा कि जब मैं कार्य नही कर पाऊँगा तो अपने आप भाई जी मना कर देंगे। इसी लक्ष्य को लेकर रथ के साथ हरियाणा एक महीने के लिए चला गया।

शुरू-शुरू में बड़ा अजीब सा लगता था लेकिन धीरे-धीरे मन लग गया। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे अपने अन्दर बहुत परिवर्तन सा महसूस होने लगा। पं. सुधर्म चंद शास्त्री शायद मेरे बाबा की उम्र के होंगे लेकिन वे एकदम मित्र की तरह कंधे से कंधा मिलाकर चले, एक तरह से कहिए कि माइक पर आना, भाषण करना आदि सब कुछ मैंने उन्हीं के द्वारा सीखा। सभी स्थानों पर लोगों के द्वारा असीम स्नेह प्राप्त हुआ। मैं एक महीने के लिए हाँ करने में सोच रहा था और सारे देश का प्रवर्तन सम्पन्न हो गया। यह सब एक दिवा स्वप्न की तरह से लगता है। लेकिन पूज्य माताजी का मैं तो आशीर्वाद मानता हूँ कि निर्विघ्नतया इतना बड़ा कार्य सम्पन्न हो गया।

हम सभी लोग जब कार्यक्रम सम्पन्न हो जाता तो सोचते कि अब दूसरे गांव में पता नहीं कैसी समाज मिलेगी? हमसे क्या प्रश्न करेगी हमारी क्या व्यवस्था रहेगी? जैसेदुल्हन विदा होते समय सोचती है कि कैसी ससुराल होगी? कैसे लोग होंगे? ठीक उसी प्रकार से। लेकिन धीरे-धीरे सभी कार्यक्रमों को प्रश्नों की तरह हल करते हुए आगे बढ़ने लगे। अब तो यदि किसी ग्राम का कार्यक्रम सरलता से हो जाये तो लगता कि कुछ हुआ ही नहीं, क्योंकि बनी में तो सब बना लेते हैं बिगड़ी में बनाये तो मजा आता था। हमारे पं. जी ऐसेथे कि यदि कोई मना कर दे कि हमारे यहाँ रथ मत लाना तो जरूर ले जाते थे।

मैं जब कभी भी रथ में अकेला होता और घबरा जाता था तो रथ के पास जाकर भगवान के समवसरण के समीप आंख बंद करके खड़ा हो जाता और मन में कहता कि भगवान अब मैं हार गया अब आप ही सब कुछ करो उसके पश्चात् सब कुछ कैसे हो जाता मुझे पता नहीं। कार्यक्रम खूब शानदार हो जाता था। मन में हमेशा यही सोचता था कि जैसे भी हो जो जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है वह निर्विघ्न पूरी हो और हो गयी। समवसरण का सानिध्य साढ़े तीन वर्ष रहा बहुत सुन्दर लगा। लेकिन आज मन में सोचता हूँ कि यदि उस समय जाने को मना कर देता तो शायद एक स्वर्णिम अवसर खो देता।

समय-समय पर भाई जी कार्यक्रमों में आते तो बहुत अच्छा लगता था। क्योंकि बहुत दिन बीत जाते थे किसी घर के सदस्य को देखे मैं ही नहीं सारे स्टाफ के लोगों को जब मैं बताता कि अमुख तारीख को भाई जी आ रहे हैं तो सभी लोग दिन गिनना शुरू कर देते थे। संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों का भी समय-समय पर सहयोग मिला। सभी ब्र. बहनों ने समय-समय पर पधाकर धर्मप्रभावना में अपना सहयोग प्रदान किया। भाई जी के सफल निर्देशन में यह यात्रा सम्पन्न हुई। पं. सुधर्मचंद जी की तो जितनी प्रशंसा करें कम है क्योंकि इस अवस्था में भी इस तरह कार्य करना एक प्रशंसनीय बात है। सभी स्टाफ के सदस्यों ने एक ड्राईवर से लेकर संचालक तक सभी का सहयोग सराहनीय है क्योंकि जैसे गाड़ी का नट भी निकल जाये तो इतनी बड़ी गाड़ी बेकार है उसी प्रकार से व्यवस्था में एक भी कर्मचारी बीमार पड़ जाये तो कार्य बिगड़ जाता है।

अंत में सारे देश की दिगम्बर जैन समाज का मैं धन्यवाद करना चाहूँगा, जिन्होंने इस यात्रा का अपने नगर में स्वागत कर तन-मन-धन से सहयोग दिया। यदि किसी ग्राम या नगर का विवरण इस पुस्तक में रह गया हो तो मैं क्षमा चाहूँगा क्योंकि जहाँ तक हो सका है मैंने सभी कार्यक्रमों के विवरण का संकलन करके इसमें प्रकाशित किया है।

समवसरण की इस सफल यात्रा में मैं सर्वप्रमुख पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद ही अपना संबल मानता हूँ अतः उनके चरणों में नमन करता हुआ समवसरण श्रीविहार भारत यात्रा की यह लघु कृति पूज्य माताजी के करकमलों में समर्पित करता हूँ।

समवसरण मंगल यात्रा एवं संयोजक के प्रति दो शब्द

भगवान ऋषभदेव के श्रीविहार रथ में मुझे भी अनेक स्थानों पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब मैंने समाजों में समवसरण की भक्ति के साथ-साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के प्रति लोगों की जो उमड़ती श्रद्धा देखी वह वास्तव में मेरे लिए अनुकरणीय रही।

राजस्थान में तो उसे लोग समवसरण का रथ न कहकर यही कहते थे कि हस्तिनापुर से ज्ञानमती माताजी का रथ आया है। इतना ही नहीं, वे जम्बूद्वीप की प्रशंसा करते-करते भावविह्वल हो जाते और समवसरण की आरती करने के पश्चात् उसी रथ पर पूज्य माताजी की प्रतिकृति के रूप में उनकी फोटो विराजमान करके खूब भक्तिभाव से आरती करते।

अनेक स्थानों पर देखा कि लोग खुले दिन से अपने नगर में समवसरण के आगमन पर खूब प्रसाद वितरित करते थे। प्रमुखरूप से दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान में इस समवसरण रथ के प्रवर्तन में जाने और प्रवचन करने का अवसर प्राप्त हुआ तो समाज का अपने प्रति अपार स्नेह देखकर मन में परम आह्लाद होता था, आज भी जब वे भ्रमण के क्षण याद आते हैं तो समवसरण का सारा दृश्य मस्तिष्क में घूम जाता है और ऐसा महसूस होता है कि शायद धरती पर साक्षात् भगवान ऋषभदेव का युग अवर्तीण हुआ हो और उनकी पुत्री ब्राह्मी माता के रूप में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने सभी को ऋषभदेव से परिचित कराने का संकल्प लिया है।

मुझे प्रसन्नता हो रही है कि उस समवसरण श्रीविहार के लगभग साढ़े तीन वर्षों के संस्मरण मेरे छोटे भाई विजय (पिंकू) ने लिखकर पुस्तकरूप में प्रस्तुत किया है। विजय ने पूज्य बड़ी माताजी, पूज्य चंदनामती माताजी, एवं क्षुल्लक मोतीसागर महाराज की प्रेरणा पाकर उस रथप्रवर्तन का देशभर में सफल संयोजन किया। इस बीच कभी किसी से उनका झगड़ा नहीं हुआ और वैसी स्थितियों के यदा-कदा उपस्थित होने पर भी हमेशा सबको शांत करके स्वस्थ वातावरण उत्पन्न कर देना उनकी अपनी विशेषता रही है। यही कारण रहा कि मेरी माँ भी पहले तो पिंकू को अपने से दूर जाते देखकर दुखी होतीं किन्तु उसकी हमेशा प्रशंसा सुनकर वे भी खुश होकर यही कहती हैं कि मेरे बेटे में पूज्य माताजी के आशीर्वाद से ही यह सब योग्यता आई है।

ऐसी योग्यता विजय में आगे भी बढ़ती रहे यही उनके उज्जवल भविष्य के लिए मेरी मंगलकामना है तथा यह समवसरण भारतयात्रा पुस्तक सभी को समवसरण श्रीविहार की याद दिलाती रहे यही भगवान से प्रार्थना है।

नंद्यावर्त महल, कुण्डलपुर
२८-९-०३

ब्र. कु. बीना जैन
(संघस्थ)

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' का निर्माण सन् १९७४ में किया गया। तबसे अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् १९९० से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

१. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, सुपुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-६।
२. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
३. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी १६, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
४. श्री महिपाल जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
५. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
६. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।

परम संरक्षक

१. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
२. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, ७६२ विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
३. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
४. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
५. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद(म.प्र.)।
६. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
७. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
८. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
९. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , चाँदनी चौक, दिल्ली।
१०. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
११. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
१२, श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
१३. श्री प्रदीप कुमार, शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, म.प्र.।

संरक्षक

१. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ
२. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द्र भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (उ.प्र.)।
३. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।

४. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
५. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
६. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
७. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीष कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
८. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सतारा) महा.।
९. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
१०. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
११. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
१२. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
१३. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
१४. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
१५. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
१६. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
१७. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
१८. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
१९. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
२०. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
२१. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली।
२२. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
२३. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
२४. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
२५. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
२६. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
२७. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्ला, देहरादून (उ.प्र.)।
२८. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
२९. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र. अध्यक्ष- श्री सरोज कुमार जैन, मंत्री-श्री मुन्ना लाल, जैन कोषाध्यक्ष-श्री ओम प्रकाश जैन।
३०. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
३१. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
३२. श्री अमोलक चन्द प्रकाश चन्द जैन सर्राफ सनावद (म.प्र.)।

३३. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
३४. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
३५. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
३६. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
३७. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
३८. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
३९. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन दिल्ली।
४०. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
४१. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
४२. श्री प्रभा चन्द गोधा, ४५ भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-६ (राज.)।
४३. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
४४. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
४५. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
४६. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) ३५ एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
४७. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-१/२० मॉडल III, टाउन दिल्ली।
४८. श्री कैलाश चंद जैन, ४५ भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
४९. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, ४०५ डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
५०. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
५१. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
५२. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
५३. श्री सुकुमाल जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
५४. श्री अनिल कुमार सेठी, १३/४४२६ पहाड़ी धीरज, दिल्ली-११०००६।
५५. श्री चन्द्रमोहन बंसल, ११, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-५।
५६. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
५७. श्री सतीश चन्द जैन, ३१ सिविल लाइन, म.नं.-१०, सेक्टर-२, टाइप-५ झांसी।
५८. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
५९. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
६०. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
६१. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
६२. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला मुरादाबाद (उ.प्र.)।
६३. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।

६४. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन ३१, सिविल लाईन, सीतापुर।
६५. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन वारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
६६. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
६७. श्री पन्नालाल सेठी, पो. डीमापुर (नागालैंड)।
६८. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, पो. आगरा (उ.प्र.)।
६९. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नोवल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
७०. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
७१. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन, इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
७२. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. इंजीनियर श्री कैलाश चन्द जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
७३. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
७४. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
७५. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां-सीतापुर (उ.प्र.)।
७६. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
७७. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
७८. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
७९. श्रीमती पु पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
८०. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
८१. डॉ. अनुपम जैन, इंदौर (म.प्र.)।
८२. श्री विनय कुमार जैन, दरीबाकलां, दिल्ली।
८३. श्री आनन्द प्रकाश जैन "शान्तिप्रिय", जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
८४. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लौहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
८५. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
८६. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
८७. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
८८. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
८९. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-९२।
९०. श्रीमती कृ णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
९१. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
९२. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
९३. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज बिहार।
९४. कुमारी अदिती पिता अपोलो जी सौगानी, इंदौर।
९५. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।

G G G G G

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का

भारत भ्रमण

ऋषभदेव तीर्थेश प्रभु, समवसरण के ईश।
श्रीविहार से शुभ करें, नमूं नमाकर शीश।।१।।

कभी पढ़ा था, सुना था, लेकिन देखा नहीं था। क्या नहीं देखा था? अपने नगर में समवसरण का आगमन, अपने दरवाजे पर समवसरण का आना। समवसरण रथ को अपने द्वार पर देख कर लोग लालायित हो उठते थे, उसके स्वागत के लिए, मैंने कभी माताजी के द्वारा सुना था कि लोग ज्ञान ज्योति ले जाने के लिए सड़क पर लेट जाते थे, लेकिन अपनी आँखों से देखा कि लोग घंटों पहले से मार्ग में खड़े रहते थे कि कब रथ आये और नाचते गाते इसे नगर में ले चलें।

कई नगरों में नगर के बाहर फीता लगाकर उसे काट कर नगर में प्रवेश कराते थे। कई लोग रंग गुलाल उड़ाते हुए रथ ले जाते थे। इतना भव्य स्वागत होता था कि देखकर गौरव होता था कि मैं रथ को लेकर चल रहा हूँ, इसका संयोजक हूँ। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज तक मैंने हर क्षेत्र में भ्रमण किया लेकिन कभी भी कोई दुर्घटना नहीं हुई, कहीं भी कोई अशुभ बात नहीं हुई। कई बार पत्रकार

लोग पूछते कि आपको कभी किसी प्रकार की परेशानी हुई और जब उत्तर न में मिलता तो बड़ा आश्चर्य करते कि तीन वर्ष में कभी परेशानी नहीं हुई।

सभी प्रांतों में एवं नगरों में एक से बढ़कर एक कार्यक्रम हुए। छोटे-छोटे नगरों में सिर्फ रथ को देखने के लिए अपार जन-समूह एकत्र होता था। छोटे-छोटे नगरों में जहाँ ८-१० घर की समाज होती थी मैं तो सुनकर सोचता कि आठ दस घर वाले कैसे कार्यक्रम करेंगे लेकिन गाँवभर को आमंत्रित करके ऐसा कार्यक्रम करते कि देखने वाले कहते कि वाकई कार्यक्रम हुआ है। कई स्थानों पर गेट बनाकर, तोरण द्वार बनाकर, बैनर लगाकर, फल, मीठा, नारियल, पेय पदार्थों को बाँटकर लोग स्वागत करते थे।

आज २५०० साल बाद भारत की इस पावन वसुन्धरा पर समवसरण आया है भले ही यह समवसरण की प्रतिकृति है लेकिन शास्त्रोक्त विधि से इसमें एक-एक चीज बनायी गयी है। इस समवसरण में आठ जिनबिम्ब प्रतिष्ठित विराजमान हैं जो सर्वथा पूज्य हैं। जीवन में सब कुछ देखा होगा, लेकिन समवसरण के विचरण का विहंगम दृश्य नहीं देखा होगा। पूज्य माताजी की कृपा प्रसाद से हमने व आपने जिस दृश्य की कभी कल्पना भी नहीं की होगी वह दृश्य हमने अपनी आँखों से देखा। आज समवसरण सिर्फ तीर्थों पर या मंदिरों में पाये जाते हैं लेकिन इस समवसरण के माध्यम से न जाने कितने जीवों का कल्याण हो गया। यह यात्रा एक ऐतिहासिक एवं यादगार यात्रा है। आज इस यात्रा को सिर्फ हम किताबों में पढ़कर ही महसूस कर सकते हैं क्योंकि ये बीते हुए पलों की यादें है। समय बीत जाता है सिर्फ यादें रह जाती हैं।

भगवान महावीर का समवसरण जिस समय विपुलाचल पर्वत पर आया तो सारी राजगृही नगरी खाली हो गयी थी। सभी नर-नारी ऐसे भागे जा रहे थे जैसे बहुत बड़ी निधी मिल गई हो, जो जैसे था वैसे ही भागा जा रहा था। नर-नारी तो जा ही रहे थे एक मेंढ़क भी भगवान की भक्तिवश मुख में कमल की पाँखुड़ी दबाये चला जा रहा था। मार्ग में राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे आ जाता है और दबकर मर जाता है। समवसरण को देखा नहीं, दर्शन पाये नहीं, भगवान महावीर

कौन हैं उसे मालूम नहीं, मात्र भावनाओं का यह फल है कि तत्क्षण स्वर्ग में देव हो गया और तुरंत अपने अवधिज्ञान से जान लिया कि मैं कहाँ से आया हूँ और राजा श्रेणिक से पहले भगवान के समवसरण में पहुँच जाता है। अब आप सोचिये कि मात्र भावना भाने से यह फल प्राप्त होता है आप तो समवसरण के साक्षात् दर्शन कर रहे हैं आपके करोड़ों जन्मों का पुण्य है कि आपने समवसरण देखा एवं उसके दर्शन किये।

चंडीगढ़ के अंदर इतना भव्य जुलूस निकला कि सौ वर्षों का इतिहास पिछड़ गया। जयपुर व शिवपुरी में इतना विहंगम दृश्य देखने को मिला कि मन चाहता है कि रोज ऐसा दृश्य देखें। सागर में पूरा जन सैलाब उमड़ पड़ा यहाँ तक कि रात्रि में लोगों को हटाना पड़ा और कहना पड़ा कि हमें अगले गांव जाना है। इम्फाल के अंदर राज्यपाल महोदय सभा में आये और समवसरण रथ का स्वागत कर अपना सौभाग्य माना। इलाहाबाद शहर में २६०० बच्चे ध्वजायें लेकर चल रहे थे। इंदौर में शोभायात्रा में इतना जन सैलाब था कि सड़कों पर पैर रखने की जगह नहीं थी। अनेक क्षेत्रों की पदरज लिए हुए व सभी आचार्य उपाध्याय साधुओं का आशीर्वाद लेकर यह यात्रा चल रही थी।

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी जैसे संतों ने जैसे ही सुना कि समवसरण आया है तुरंत ही रथ के समक्ष आये। १२८ पिच्छीधारियों के साथ पौन घंटे तक समवसरण देखते रहे और गद्गद हो गये। चतुर्थकाल जैसा दृश्य प्रतीत हो रहा था। आचार्य वर्द्धमान सागर जी महाराज पूरी शोभायात्रा में साथ चले एवं सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद प्रदान किया। अनेक शासकीय अधिकारी नेतागण पधारे और समवसरण का स्वागत कर अपने आप को धन्य माना।

यह रथयात्रा सिर्फ जन-जन की भावनाएं एकत्र करने के लिए होती है हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक हर किसी की भावना जुड़े। हर किसी के अंदर यह भावना आये कि चीज हमारी है अपनत्व की भावना जुड़े और इन्हीं भावनाओं के साथ आपको ले चलता हूँ समवसरण श्रीविहार रथ भ्रमण की संक्षिप्त झलकियों की ओर।

२५०० वर्षों बाद धरती पर समवसरण का विहंगम दृश्य उपस्थित हुआ

दिल्ली उद्घाटन कार्यक्रम

२२ मार्च १९९८ चैत्र कृष्णा नवमी का दिन भारत के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ बनकर रह गया। आज भारत की राजधानी दिल्ली के चाँदनी चौक में क्या पूरी दिल्ली नगरी में एक अजीब उल्लास है, उमंग है, सारी नगरी को तोरण द्वारों से सजाया गया है। ऐसा लगता है आज कुछ विशेष उत्सव नगरी में होने जा रहा है। जी हाँ! यह विशेष उत्सव ही है। आज २५०० वर्षों के बाद इस अवनीतल पर भगवान ऋषभदेव का समवसरण उतर रहा है जो कि आज से करोड़ों वर्ष पूर्व निर्मित भगवान ऋषभदेव के साक्षात् समवसरण का आभास दिला रहा है।

इन सभी उमंगों को देखते हुए प्रश्न उठता है कि कौन है इस समवसरण को इस पंचम काल में धरती पर अवतरित करने वाला कौन है जिसने पुनः इस भूतल पर साक्षात् चतुर्थ काल का आभास करा दिया है? जिज्ञासा को शान्त करने वाला उत्तर मिलता है। वह है भगवान की ब्राह्मी पुत्री सम इस युग की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी, इस युग के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा की सर्वोच्च साध्वी, जम्बूद्वीप रचना आदि अनेक रचनाओं की पावन प्रेरिका, गणिनीप्रमुख पूज्य आर्यिकारत्न १०५ श्री ज्ञानमती माताजी। जिनके मस्तिष्क में यह बात आई है। आज जब हमारा भारत गारत बना जा रहा है, यहाँ हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है, अण्डों को शाकाहारी कहा जा रहा है, माँसाहार, शराब, बूचड़खानों का खुलकर प्रचार हो रहा है ऐसे संवेदनशील समय में उन्होंने पूरे भारत में अहिंसा, भाई-चारा, सुख-शांति, क्षेम सुभिक्ष का संदेश देने के लिए एक योजना बनाई भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार की। उस श्रीविहार का उद्घाटन समारोह आज भारत की राजधानी दिल्ली के चाँदनी चौक स्थित लाल किला मैदान से होने जा रहा था इसलिए आज जनमानस उमड़ रहा था लालकिला मैदान की ओर। अनेक सुदूरवर्ती प्रान्तों महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश आदि से अनेक महानुभाव पधार रहे थे। आइए, हम भी ले चलते हैं आपको उसी लाल किला मैदान के प्रांगण में जहाँ

से अहिंसा का बिगुल बजा, प्राणीमात्र को शांति, भाईचारे का संदेश दिया गया। तो हम भी चलें उस महान् उत्सव में भाग लेकर पुण्यार्जन करने—

१२.३५ बजे कार्यक्रम स्थल (लालकिला मैदान) में पूज्य गणिनी श्री ससंघ के पधारते ही सारा सभामण्डप भगवान ऋषभदेव व गणिनीमाताजी की जय-जयकारों से गुंजायमान हो उठा। पूज्य माताजी के मंच पर पधारते ही आज के अध्यक्ष महोदय माननीय नवनिर्वाचित सांसद एवं पूर्व नागरिक उड्डयन मंत्री श्री धनन्जय कुमार जैन अपने नियत समय पर सपत्नीक पधारे गये। अब सभा की कार्यवाही प्रारंभ की गयी। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों कु. चन्द्रिका एवं कु. इन्दू के मंगलाचरण से हुआ-

पुरुदेव नमस्तुभ्यं, युगादिपुरुषाय ते।
इक्ष्वाकुवंशसूर्याय, वृषभाय नमो नमः।।
प्रभु समवसरण के श्रीविहार से धरती धन्य हुई है.....।।

तत्पश्चात् इस धर्म सभा की अध्यक्षता करने वाले नवनिर्वाचित माननीय सांसद महोदय सपत्नीक का गुलाब के सुन्दर पुष्पहार, बैज एवं दुपट्टे द्वारा विशिष्ट महानुभावों द्वारा स्वागत किया गया। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा उन्हें जैन वाङ्मय का ज्ञान कराने वाली पुस्तकों का सेट प्रदान किया गया तथा पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज द्वारा उन्हें समवसरण श्रीविहार का प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया। स्वागत की इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस विशाल जुलूस में सौधर्म इन्द्र बने श्री प्रेमचंद जैन खारी बावली, धनकुबेर श्री अनिल कुमार जैन कागजी, भरत चक्रवर्ती बने श्री राजकुमार जी जैन बीरा बिल्डर्स, राजा श्रेयांस बने श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर एवं सर्वाण्ह देव बने श्री विजय कुमार जैन दरियागंज दिल्ली का स्वागत माननीय सभाध्यक्ष द्वारा किया गया। हेलीकाप्टर से पुष्पवृष्टि करने वाले श्री नरेश बंसल पूसा रोड, अजय कुमार जैन सरस्वती विहार, सुशील कुमार जैन पहाड़ी धीरज, सुरेन्द्र कुमार जैन त्रिनगर तथा समवसरण की प्रथम आरती का सौभाग्य प्राप्त करने वाले श्री अजय कुमार जी का भी स्वागत किया गया।

महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहे महाराष्ट्र प्रान्त तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष

डा. पन्नालाल जी पापड़ीवाल ने इस अवसर पर कहा कि इसे जल्दी से जल्दी महाराष्ट्र प्रांत में भेजें, हम सब बहुत उत्सुक हैं इसका स्वागत करने के लिए। आपके विचार में यह बात अवश्य आती होगी कि पूज्य माताजी को ऋषभदेव की बात ही क्यों जँची? जब माताजी ने देखा कि लोग महावीर भगवान को जैन धर्म का प्रवर्तक मान रहे हैं तब उनकी कल्पनाओं की तरंगों ने इस बात को पकड़ लिया जिससे उन्होंने बीड़ा उठाया भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार का जिससे जैनधर्म की प्राचीनता का ज्ञान हो सके।

इन्दौर, मध्यप्रदेश से पधारे श्री शांतिलाल जी दोशी (अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज हूमड़ जाति के अध्यक्ष) ने कहा कि ऋषभदेव भगवान ने जो उपदेश दिया हम उसका पूर्णरूपेण पालन करते हैं व करेंगे। परन्तु जो बीड़ा पूज्य माताजी ने उठाया है वह प्रशंसनीय है। मैं मध्यप्रदेश की तरफ से आश्वासन देता हूँ कि इसका हम हार्दिक स्वागत पूर्णरूपेण करेंगे।

वक्तव्य की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए जैन समाज के वरिष्ठ नेता टाइम्स ऑफ इण्डिया के कार्यकारी निदेशक साहू श्री रमेशचंद जैन ने कहा कि मैं अपने पुण्य का उदय मानता हूँ कि इस धार्मिक सभा में मुझे भी दो शब्द बोलने का मौका मिला। यह कार्यक्रम जो आज हो रहा है यह हमारे आदि तीर्थंकर के समवसरण श्रीविहार का कार्यक्रम है वह जग को शान्ति देगा। पूज्य माताजी के सानिध्य में होने वाले इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अहिंसा, शाकाहार का प्रचार होगा क्योंकि आज लोगों का खान-पान बिगड़ गया है। हम उस परम्परा को मानने वाले हैं जिसके बारे में कहा है—

"परहित सरस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई" हम उसी संस्कृति के हैं जिसकी प्रेरणा स्रोत हमारी माताजी जैसी गुरुवर हैं। हमें विश्वास है कि हम उनके बताये पदचिन्हों पर चल सकेंगे। इसके साथ ही उन्होंने माँस निर्यात का विरोध किया। श्री स्वदेश भूषण जी ने कहा कि हम दिल्लीवासियों का सौभाग्य है कि यहाँ से समवसरण श्रीविहार का प्रवर्तन हो रहा है। हमारे जैन समाज का प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक कार्यों में योगदान रहा पर हमें दुःख है कि जैन समाज को

राजनीति के क्षेत्र में भुला दिया जाता है। शायद यह हमारी कमजोरी है कि हम जैन बंधु इसकी सरकार से माँग नहीं करते। हम आज के दिन यह भावना करते हैं कि प्रधानमंत्री जी इस बार जैन समाज के प्रतिनिधि के रूप में माननीय सांसद श्री धनन्जय जी को प्रतिनिधित्व प्रदान करें।

इस पावन पवित्र समारोह में जैन समाज के वरिष्ठ नेता साहू श्री अशोक कुमार जी तथा श्री रमेश जैन-पी.एस.जैन के शीघ्र स्वस्थता की मंगल कामना की गयी।

कार्यक्रम के मध्य प्रज्ञाश्रमणी पूज्य आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी द्वारा रचित समवसरण श्रीविहार विषयक सामयिक भजनों की कैसेट का श्री धनन्जय कुमार जी (माननीय सांसद महोदय) द्वारा तथा श्री नरेशजी बंसल-पूसा रोड द्वारा विमोचन कराया गया तथा अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की पत्रिका "ब्राह्मी देशना" के विशेषांक का विमोचन महामंत्री एवं प्रधान सम्पादिका श्रीमती सुमन जैन ने महासभा के महामंत्री श्री गजराज जी गंगवाल से करवाया।

इन समस्त कार्यक्रमों के मुख्य कार्यकर्ता इस समवसरण श्रीविहार को सफल बनाने में पूर्ण नेतृत्व प्रदान करने वाले कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने समवसरण श्रीविहार का पूरा प्रारूप प्रस्तुत करते हुए बताया कि इसी शताब्दी में पाँच रथ प्रवर्तित हो चुके हैं और अब यह छठा प्रवर्तन समवसरण श्रीविहार का है। पूज्य माताजी के मस्तिष्क में बहुत दिनों से यह बात आ रही है कि "जैनधर्म को भगवान महावीर ने चलाया" इस भ्रामक प्रसार को दूर करने के लिए तथा जैन धर्म की प्राचीनता बताने हेतु उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए समवसरण श्रीविहार का रथ पूरे भारत के चप्पे-चप्पे में जाकर धर्म का प्रचार-प्रसार करेगा।

समवसरण का अपना एक विशेष महत्व होता है। इसमें मनुष्य क्या पशु भी बैर भाव को तजते हैं। आज भी यहाँ कई संस्थाओं के प्रतिनिधि एकत्रित हैं उन सबके लिए मेरी प्रेरणा है कि यह समवसरण जब आपके नगर में आए तो आप साक्षात् समवसरण के सदृश ही इसका स्वागत करियेगा, इनमें विराजमान प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। सारे हिन्दुस्तान में दो वर्ष तक इस समवसरण का भ्रमण होगा।

तत्पश्चात् कु. स्वाति जैन ने समवसरण के स्वागत में नृत्य प्रस्तुत किया एवं पं.

सुधर्मचन्द्र जैन शास्त्री तिवरी को समवसरण श्रीविहार का संचालक तथा मुझे संयोजक मनोनीत करके स्वागत किया गया।

इन सभी कार्यक्रमों के अनन्तर अपने मंगल आशीर्वाद में जम्बूद्वीप के पीठाधीश पूज्य क्षुल्लकरत्न धर्मदिवाकर श्री मोतीसागर जी महाराज ने १६ वर्ष पूर्व की घटनाओं का स्मरण कराते हुए कहा कि इसी लालकिला मैदान से ४ जून १९८२ को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति से अपूर्व धर्मप्रभावना हुई थी। जिसने पूरे देश में शांति एवं अहिंसा का संदेश दिया था। आज पुनः इसी लाल किला मैदान से समवसरण श्रीविहार रथप्रवर्तन हो रहा है जो सारे भारत में अहिंसा एवं शाकाहार का सन्देश जन-जन को देता हुआ जैन धर्म की प्राचीनता का दिग्दर्शन कराएगा। भारत जैसे कृषि प्रधान देश से आज पशुओं की हत्या कर माँस का निर्यात किया जा रहा है और बदले में उन देशों से गोबर का आयात किया जा रहा है यह बड़े शर्म की बात है।

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने सुन्दर भजनों, गीतों एवं नारों के माध्यम से इस श्रीविहार को अहिंसा, शाकाहार एवं सदाचार फैलाने वाला बताते हुए समवसरण की परिभाषा बताई कि सम्यक् प्रकार से जो आए हुए प्रत्येक जीव को शरण प्रदान करने वाला है वह है समवसरण। इस समवसरण के माध्यम से भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्त दुनिया के कोने-कोने में जाएंगे कि जैनधर्म अनादि निधन है और युगप्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हैं।

आशीर्वाद शृंखला के मध्य अपने अध्यक्षीय भाषण में सभाध्यक्ष नवनिर्वाचित सांसद श्री धनन्जय कुमार जैन ने कहा कि यह जो भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती के शुभ अवसर पर समवसरण श्रीविहार का प्रवर्तन हो रहा है यह पूरे दो वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैन धर्म का सन्देश लेकर जाएगा। फिर से जैनधर्म का पुनरुद्धार करेगा। यह विश्वधर्म है। आज जब देश संकट की स्थिति से गुजर रहा है तब यह हमें भक्ति की प्रेरणा देगा और विश्व में सुखशान्ति प्रदान करेगा।

प्रवचन के इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कहा कि आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान महावीर का समवसरण

पूरे आर्यावर्त में घूम चुका है और उससे करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव का। जिस प्रकार तीनों लोकों में सुमेरु पर्वत सबसे ऊँचा है उसी प्रकार समवसरण की लक्ष्मी सर्वश्रेष्ठ है। हम शास्त्रों में पढ़ते हैं कि जिस समय भगवान को केवलज्ञान होता है आकाश से पुष्पवृष्टि होने लगती है, इन्द्र अपने परिकर सहित स्तुति हेतु चल पड़ता है और धनकुबेर समवसरण की रचना कर देते हैं वह इसी भारत की पावन वसुन्धरा थी जहाँ समवसरण का मंगलमयी श्रीविहार हुआ था। मैंने प्रेरणा देकर समवसरण की इस प्रतिकृति का निर्माण कराया है। इसका श्रीविहार जहाँ-जहाँ हो वहाँ-वहाँ सुख-समृद्धि फैले, शांति हो तथा यह प्राणीमात्र के लिए मंगलमयी होवे यही मेरा मंगल आशीर्वाद है।

इन सभी कार्यक्रमों के बाद लोगों ने देखा एक विहंगम दृश्य समवसरण श्रीविहार का, जो कि दिल्ली के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ बनकर जुड़ गया है। युगों-युगों तक यह लोगों को स्मरण दिलाता रहेगा कि कभी राजधानी दिल्ली से समवसरण श्रीविहार हुआ था जो चतुर्थकाल की याद दिला रहा था। लाखों की जनता से सहित यह ऐतिहासिक जुलूस लाल किला मैदान से प्रारंभ होकर चाँदनी चौक, फतेहपुरी, खारी बावली, सदर बाजार होता हुआ पहाड़ीधीरज पर पहुँचा जहाँ स्वयं देवराज इन्द्र मानों गंधोदक की वृष्टि कर रहे थे। कहा है जब समवसरण की रचना होती है तो—

मंद सुगन्ध बयार पुनि, गंधोदक की वृष्टि।
भूमि विषै कंटक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि।।

आज वही माहौल यहाँ उपस्थित था। जहाँ जुलूस के प्रारंभ के समय काफी गर्मी थी वहीं अब समवसरण श्रीविहार होते ही मंद सुगन्धित पवन चलने लगी थी व हल्की-हल्की बूँदों की फुहारें सबको तृप्त करने लगीं। इस विशाल जुलूस में सुन्दर-सुन्दर झाँकियां, अनेक बैण्ड बाजे, इन्द्राणियाँ केसरिया परिधान में रजत कलश लिए हुए, भगवान ऋषभदेव के १००८ नामों की ध्वजाएं लिए हुए स्कूली बालक तथा ३२ हजार मुकुटबद्ध राजाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए मुकुटबद्ध राजा बग्घियों में शोभायमान थे। साथ ही विशेष आकर्षण का केन्द्र समवसरण रथ

व ऐरावत हाथी था जिस पर श्री ह्री आदि अष्ट दिक्कुमारियाँ अष्टमंगल द्रव्य लेकर बैठी थीं तथा भरत चक्रवर्ती व राजा श्रेयांस सपत्नीक बैठकर जनता को किमिच्छक दान के प्रतीक में प्रसाद व अहिंसा शाकाहार की पुस्तकें वितरित कर रहे थे। ऐरावत हाथी पर बैठे सौधर्म इन्द्र व धनकुबेर रत्नवृष्टि कर रहे थे। देव बने हुए महानुभाव आकाश से हेलीकाप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि कर रहे थे व जगह-जगह अनेक महानुभावों द्वारा ठण्डाई, फल, केशरिया दूध, शिकंजी, शर्बत, मिष्ठान, नमकीन आदि वितरित किये गये जो कि किमिच्छक दान जैसा दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

दिल्ली के इतिहास में यह अभूतपूर्व शोभायात्रा थी इसमें अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन दिल्ली की महिलाओं का विशेष योगदान रहा।

पाठकों! इस अभूतपूर्व शोभायात्रा का यह आपको आँखों देखा वर्णन बताया गया है। जैसे राम के दिग्विजय के लिए घोड़ा छोड़ा गया था वैसे ही विश्व में सुख शांति, भाई-चारा, अहिंसा, शाकाहार का प्रचार व जैन धर्म की विजयपताका फहराने हेतु राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान में चलने वाला यह ऐतिहासिक समारोह सारे देश के लिए कल्याणकारी होवे यही मंगल भावना है।

समवसरण श्रीविहार का समापन पहाड़ी धीरज पर हुआ। इस शुभ अवसर पर पहाड़ी धीरज जैन पंचायत (समाज) द्वारा समवसरण रथ का भावभीना स्वागत किया गया तथा समस्त आगन्तुक धर्मबन्धुओं को पहाड़ी धीरज जैन समाज द्वारा संतुष्ट किया गया। अगले दिन प्रातः पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री जगदीश टाइटलर ने आकर पूज्य माताजी का प्रवचन सुनकर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा समवसरण रथ देखकर प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रधानमंत्री जी ने समवसरण रथ का प्रवर्तन किया

दिनाँक ९ अप्रैल को विश्ववंद्य भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयन्ती की पावन बेला में जैन समाज की वरिष्ठ साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से शुभाशीर्वाद प्राप्त कर राजधानी दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने "भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार" रथ का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन किया।

इस शुभावसर पर समवसरण रथ की सम्प्रेरिका श्री ज्ञानमती माताजी ने उपस्थित जनसमूह एवं प्रधानमंत्री को सम्बोधित करते हुए कहा कि पुराणों में वर्णन आता है कि जिस देश का आश्रय लेकर साधु संत तपस्या करते हैं, उस देश के राजा को उनकी तपस्या का छठा भाग पुण्य स्वयमेव प्राप्त हो जाता है, इस शृंखला में हमारे वाजपेयी जी हम लोगों की त्याग तपस्या का पुण्य बिना परिश्रम किये ही प्राप्त कर रहे हैं। आज भगवान महावीर स्वामी के जन्म जयन्ती समारोह के अवसर पर आदि ब्रह्मा भगवान ऋषभदेव के समवसरण का जो प्रवर्तन कर रहे हैं वह भी देश की राजनीति के लिए एवं समस्त जनता के लिए मंगलमय क्षेमकारी होगा। महावीर स्वामी के पश्चात् इस धरती पर आज तक कोई समवसरण नहीं आया, क्योंकि इस कलियुग में तीर्थंकर नहीं होते हैं।

सभा में प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जी ने स्टेडियम के सभागार में उपस्थित भारत की जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि "मेरा आज अहोभाग्य है जब भगवान ऋषभदेव के समवसरण श्रीविहार का प्रवर्तन करने हेतु मुझे यहाँ आमंत्रित किया गया है। भगवान महावीर की जन्म जयन्ती आज देश और विदेशों में भी मनाई जा रही है। उसी के साथ जो रथ देशभर में भ्रमण करने जा रहा है, मैं उसका हृदय से स्वागत करता हूँ और सभी प्रदेशों में विश्व बन्धुत्व का पाठ पढ़ाने वाले इस रथ को सभी प्रदेशों में राजकीय सम्मान प्राप्त होगा, यह मैं आश्वासन प्रदान करता हूँ उन्होंने कहा कि मैं आज मुख्य रूप से पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद लेने आया था वह मेरा लक्ष्य पूर्ण हो गया है। क्योंकि उनका खूब आशीर्वाद मुझे मिल गया है। पूज्य माताजी के आशीर्वचनों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि इस कलियुग में हम लोगों को सन्तों के तप के छठे भाग फल से भी ज्यादा मिलने की आवश्यकता है क्योंकि कलियुग में समस्याएं ज्यादा हैं। मैं माताजी के चरणों में बार-बार नतमस्तक हूँ और आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। कोई भी देश कितनी भी प्रगति कर ले, उसके निवासियों को तब तक शांति नहीं मिल सकती जब तक वह साधु-संतों का आश्रय न ले। महावीर की अहिंसा को अपनाने से ही राष्ट्र में स्थिरता, शांति एवं विकास संभव है।"

उद्बोधन की शृंखला में जैन साध्वी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने समवसरण का अर्थ बताते हुए कहा कि तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान प्राप्त होने पर इन्द्र की आज्ञा से कुबेर द्वारा रची जाने वाली धर्मसभा को ही 'समवसरण' कहते हैं।

इसी संदर्भ में पूज्य पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ने श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय प्रदान करते हुए सभी को बताया कि बीसवीं सदी की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी साध्वी एवं विशाल साहित्य की निर्मात्री श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय उनकी तेजस्वी मुखाकृति देखने से ही प्राप्त हो जाता है। उनकी प्रेरणा से हस्तिनापुर तीर्थ पर निर्मित दर्शनीय जम्बूद्वीप रचना का दर्शन करने देश-विदेश के यात्री पधारते हैं।

आज की सभा की अध्यक्षता कर रहे सांसद श्री धनन्जय कुमार जैन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से प्रधानमंत्री का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें आश्वासन दिया कि अहिंसाप्रिय जैन समाज सदैव आपके साथ है। आपने कहा कि जैन कोई जाति, कौम या पंथ नहीं यह तो जीवन पद्धति है जिसके अपनाने पर देश की ज्वलंत समस्याओं का सहज समाधान हो सकता है।

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष साहू रमेश चन्द जैन ने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांत शाश्वत हैं, उन्होंने अनाचार को दूर किया तथा अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह के ऐसे सूत्र दिये जिनसे सभी समस्याएं हल हो सकती हैं। आपने बताया कि भगवान महावीर जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर एवं भगवान ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर हैं। यह गलत है कि भगवान महावीर जैन धर्म के संस्थापक थे। उनसे पूर्व तो २३ तीर्थंकर हो चुके हैं।

समवसरण श्रीविहार की राष्ट्रीय समिति ने प्रधानमंत्री जी के करकमलों में भगवान ऋषभदेव के स्वर्णमयी चरणकमलों की एक सुन्दर प्रतिकृति समर्पित की और उनके द्वारा समवसरण रथ के ऊपर केशर से स्वास्तिक बनवाया। प्रधानमंत्री जी ने रजत श्रीफल एवं रत्नों से युक्त पूजन द्रव्य से समवसरण का पूजन किया, उसके पश्चात् असली हीरे, जवाहरातों के द्वारा पुष्पवृष्टि की। उन पवित्र रत्नों में से कुछ माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को भी भेंट किये गये, जिसे उन्होंने

समाज के वरिष्ठ महानुभावों को पुनः वितरित कर दिये।

ज्ञातव्य है कि ऋषभजयंती (२२ मार्च १९९८) के पुनीत अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा इस रथ का शुभारंभ ऐतिहासिक लाल किला मैदान से किया गया था। आज के इस विशाल समारोह का शुभारंभ संघस्थ ब्र. कु बीना एवं ब्र. कु. आस्था जी के मंगलाचरण से हुआ। सर्वप्रथम प्रधानमंत्री जी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर उनसे कुछ विशेष वार्ता करके सभा मंच पर पधारे, जिनका मंच पर उपस्थित जैन समाज के प्रमुख नेताओं ने बैज, माला, दुपट्टा एवं स्मृतिचिन्ह आदि से भावभीना स्वागत किया। 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' दिल्ली के निदेशक साहू श्री रमेश चंद जैन, दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार (सेठी) जैन, श्री उम्मेदमल पांड्या, डॉ.अनुपम जैन इंदौर एवं रथ के संचालक पं. सुधर्मचंद शास्त्री ने भगवान महावीर स्वामी एवं अहिंसा धर्म के विषय में अपने सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किये।

सभा का संचालन डॉ. अनुपम जैन एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने किया।

G G G G G

माननीय प्रधानमंत्री जी के उद्गार

समवसरण श्रीविहार प्रवर्तन के समय के अंश

लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जी ने इंडोर स्टेडियम के सभागार में उपस्थित भारत की जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज मेरा अहोभाग्य है जब भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का प्रवर्तन करने हेतु मुझे यहाँ आपने आमंत्रित किया है। भगवान महावीर जयंती आज देश व विदेशों में मनाई जा रही है। उसी के साथ जो यह रथ सारे देश में भ्रमण करने जा रहा है, मैं इसका हृदय से स्वागत करता हूँ और विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ाने वाले इस रथ को सभी प्रदेशों में राजकीय सम्मान प्राप्त होगा, यह मैं आश्वासन देता हूँ। जहाँ भी यह रथ जायेगा वहाँ एक चेतना जागेगी और विश्व की समस्याओं का समाधान करने का जन जागरण होगा।

प्रधानमंत्री जी ने कहा कि आज मैं मुख्य रूप से पूज्य ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद लेने आया था, वह लक्ष्य मेरा पूरा हो गया है क्योंकि उनका शुभाशीर्वाद मुझे मिल गया है। माताजी बहुत विद्वान हैं उनकी सोच में, उनके लेखन में गहराई है। मैंने उनका साहित्य देखा है, उनके साहित्य में जो चिन्तन भरा हुआ है उससे विश्व की समस्याओं का हल निकल सकता है।

पूज्य माताजी के आशीर्वचनों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि इस कलियुग में हम लोगों को संतों के छठे भाग पुण्य से काम नहीं चलेगा और ज्यादा भाग देने की आवश्यकता है क्योंकि कलियुग में समस्याएँ ज्यादा हैं।

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के द्वारा दिये गये ज्ञापन की कुछ माँगों में से हस्तिनापुर में रेलवे लाईन के संदर्भ में प्रधानमंत्री जी ने कहा मैं देखूंगा अभी तक हस्तिनापुर में रेलवे लाइन क्यों नहीं बनी? तथा मेरा पूरा सहयोग इस कार्य हेतु रहेगा।

अन्त में कहा–मैं माताजी के चरणों में बार–बार नतमस्तक हूँ और आप सभी को धन्यवाद देता हूँ।

G G G G G

ऋषभदेव से महावीर तक लालकिला मैदान एवं इंडोर स्टेडियम में

अहिंसा धर्म की गूंज

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पिछले कई वर्षों से यह भावना बलवती हो चुकी है कि भगवान महावीर के साथ-साथ जैन धर्म की प्राचीनता को प्रस्तुत करने के लिए भगवान ऋषभदेव के गुणगान एवं आयोजन आवश्यक है इसी भावना को इस वर्ष हम लोगों ने राजधानी दिल्ली से चरितार्थ करने का संकल्प लिया और २२ मार्च १९९८ ऋषभजयंती के शुभदिन भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का उद्घाटन समारोह ऐतिहासिक लालकिला मैदान दिल्ली में हजारों लाखों जन समुदाय के मध्य सम्पन्न किया। इसके पश्चात् अन्य स्थानों पर २२ मार्च से ८ अप्रैल तक महावीर जयंती के कार्यक्रम चलते रहे तथा महावीर जयंती के शुभदिन ९ अप्रैल को देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को आमंत्रित करके एक भव्य आयोजन तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम के सभागार में किया गया।

आयोजन में माननीय प्रधानमंत्री जी लगभग २ घण्टे तक प्रसन्नतापूर्वक रहे और प्रत्येक कार्यक्रम में हर्षित मन से रुचि ली।

सर्वप्रथम पूज्य माताजी से विशेष चर्चा की एवं आशीर्वाद लिया। पश्चात् मंच के कार्यक्रम में एवं समवसरण श्रीविहार प्रवर्तन कार्यक्रम में सम्मिलित होकर विधिवत् पूजा अर्चना की।

राजधानी दिल्ली की यह आवाज दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों के माध्यम से, रेडियो के माध्यम से, दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से तथा जैन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देशभर में करोड़ों लोगों तक पहुँची है। यही है सफलता अहिंसा धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु उठाये गये भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार से। समवसरण श्रीविहार का पूर्ण सम्मान के साथ राजधानी दिल्ली एवं सम्पूर्ण देश में भ्रमण सम्पन्न हुआ।

पूज्य माताजी की सूझबूझ से सारे देश में भगवान ऋषभदेव के नाम की गूंज करने वाले इस समवसरण के दर्शन वंदन करके पुण्य अर्जित करने का अवसर

आप सभी को प्राप्त हुआ। जिससे आपने अपने नगर एवं प्रांत में भगवान ऋषभदेव के नाम व जैन धर्म की प्राचीनता तथा अंहिसा-शाकाहार की धूमधाम से यात्रा सम्पन्न की। इन्हीं शुभभावों के साथ आप सभी को ले चलता हूँ भारत भ्रमण की ओर—

राजधानी दिल्ली में विभिन्न कालोनियों में रथ प्रवर्तन हुआ-

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार

दिल्ली प्रदेश कार्यक्रम

(२२ मार्च १९९८ से २ मई १९९८ तक)

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	दिन
१.	लालकिला मैदान	२२-३-१९९८	रविवार
२.	राजपुर रोड	२-४-१९९८	गुरुवार
३.	मॉडलबस्ती	३-४-१९९८	शुक्रवार
४.	विवेकानंदपुरी	४-४-१९९८	शनिवार
५.	रानी बाग	११-४-१९९८	शनिवार
६.	मॉडल टाउन	१२-४-१९९८	रविवार
७.	प्रीतमपुरा	१३-४-१९९८	सोमवार
८.	रोहिणी अहिंसा विहार	१४-४-१९९८	मंगलवार
९.	सरस्वती विहार	१५-४-१९९८	बुधवार
१०.	नांगलोई	१६-४-१९९८	गुरुवार
११.	नजफगढ़	१८-४-१९९८	शनिवार
१२.	जनकपुरी	१९-४-१९९८	रविवार
१३.	दिल्ली कैंट	२०-४-१९९८	सोमवार
१४.	गोपीनाथ बाजार	२१-४-१९९८	मंगलवार
१५.	आर.के. पुरम्	२१-४-१९९८	मंगलवार
१६.	ग्रीनपार्क	२२-४-१९९८	बुधवार

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	दिन
१७.	लोदीरोड	२३-४-१९९८	गुरुवार
१८.	पहाड़गंज	२४-४-१९९८	शुक्रवार
१९.	करोलबाग	२५-४-१९९८	शनिवार
२०.	कैलाशनगर	२६-४-१९९८	रविवार
२१.	प्रीत विहार	३०-४-१९९८	गुरुवार
२२.	विवेक विहार	०१-५-१९९८	शुक्रवार
२३.	सूर्यनगर (जि.- गाजियाबाद)	०२-५-१९९८	शनिवार

राजधानी दिल्ली से प्रवर्तित रथ के भारत भ्रमण हेतू एक राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ-

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार केन्द्रीय समिति

संरक्षक मण्डल— साहू रमेशचंद जैन, दिल्ली
वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल (कर्नाटक)
देवकुमार सिंह जैन कासलीवाल, इंदौर (म.प्र.)
बाबूलाल जैन पाटोदी, इंदौर (म.प्र.)
कल्लप्पा जैन अवाडे, सांसद दिल्ली
डी.टी. वार्डे, पुलिस उपायुक्त दिल्ली
निर्मल कुमार जैन सेठी, दिल्ली
उम्मेदमल जैन पाण्ड्या, दिल्ली
आर.के. जैन, मुम्बई (महा.)
पूनमचंद जैन गंगवाल, जयपुर (राज.)
गणेशीलाल जैन, रानीवाला, कोटा (राज.)

अध्यक्ष — कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, हस्तिनापुर
परामर्श प्रमुख — रमेशचंद जैन, पी.एस. जे. मोटर्स, दिल्ली
कार्याध्यक्ष — जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, दिल्ली

स्वागताध्यक्ष — महावीर प्रसाद जैन, संघपति, दिल्ली
वरिष्ठ उपाध्यक्ष — कमलचंद जैन, खारी बावली, दिल्ली
वरिष्ठ उपाध्यक्ष — प्रेमचंद जैन, खारीबावली, दिल्ली
महामंत्री — राजकुमार जैन, वीराबिल्डर्स, दिल्ली
महामंत्री — कैलाशचंद जैन, करोलबाग, नई दिल्ली
मंत्री — अमरचंद जैन, होमब्रेड, मेरठ (उ.प्र.)
कोषाध्यक्ष — मनोज कुमार जैन, मेरठ (उ.प्र.)
शासन संपर्क मंत्री — कैलाशचंद जैन चौधरी, सनावद (म.प्र.)
उपाध्यक्ष मण्डल — श्रीपाल जैन, मोटर वाले, दिल्ली
चक्रेश जैन, दरियागंज, नई दिल्ली
गजराज जैन, गंगवाल, दिल्ली
अनिल जैन कागजी, प्रीत विहार, दिल्ली
पन्नालाल जैन सेठी, दिल्ली
डी.के. जैन, प्रीत विहार, दिल्ली
प्रदीप जैन कासलीवाल, इंदौर (म.प्र.)
सुभाषचंद जैन, शकुन प्रिंटर्स, दरियागंज दिल्ली
स्वदेशभूषण जैन, दिल्ली
शांतिलाल जैन दोशी, इंदौर (म.प्र.)
कैलाशचंद जैन चौधरी, इंदौर (म.प्र.)
बी.बी. पाटिल, सांगली (महा.)
भागचंद जैन पहाड़िया, कलकत्ता (पं. बंगाल)
कलीराम जैन, मॉडल टाउन, दिल्ली
मांगीलाल जैन पहाड़े, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)
नरेन्द्र प्रकाश जैन प्राचार्य, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सौभाग्यमल जैन कटारिया, अहमदाबाद (गुज.)
जयचंद जैन कासलीवाल, चांदवड़ (महा.)
डा. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल, पैठण (महा.)

डी.यू. जैन, मुंबई (महा.)
सरोज कुमार जैन, तहसील फतेहपुर (उ.प्र.)
राजकुमार जैन कोठारी, जयपुर(राज.)
ज्ञानचंद जैन झांझरी, जयपुर (राज.)
महावीर जैन मिण्डा, उदयपुर (राज.)
महावीर प्रसाद जैन सेठी, सरिया (बिहार)
सुरेशचंद जैन झांझरी, झुमरीतलैया (बिहार)
श्रीमती निर्मला जैन, किंग्सवे कैम्प, दिल्ली

प्रचार मंत्री —

किशोर जैन, कैलाशनगर–दिल्ली
पं. सुधर्मचंद जैन शास्त्री, तिवरी (म.प्र.)
प्रो. टीकमचंद जैन, शाहदरा दिल्ली
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर (म.प्र.)
डॉ. नीलम जैन, गाजियाबाद (उ.प्र.)

रथ प्रवर्तन संयोजक —विजय कुमार जैन, कानपुर

सदस्यगण —

आनन्द प्रकाश जैन, धर्मपुरा, दिल्ली
नरेश जैन बंसल, नई दिल्ली
विजय जैन, दरियागंज, नई दिल्ली
विकास जैन, गांधीनगर, दिल्ली
पारसदास जैन, न.भा.टा., दिल्ली
श्रीमती आशा जैन, दिल्ली
राकेश जैन, ऋषभविहार, दिल्ली
विजय जैन, पहाड़गंज, दिल्ली
पवन कुमार जैन, जनकपुरी, दिल्ली
राजकुमार जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली

सुखपाल जैन, कैलाशनगर, दिल्ली
प्रदीप जैन पाटोदी, दिल्ली
जयकुमार जैन, एडवोकेट, दिल्ली
राकेश जैन, मवाना (उ.प्र.)
श्रीमती सुमन जैन, इंदौर (म.प्र.)
कैलाशचंद जैन सर्राफ, चौक लखनऊ (उ.प्र.)
विनोद जैन हर्ष, अहमदाबाद (गुज.)
देवेन्द्र कुमार जैन, धारूहेड़ा (हरियाणा)
डा. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद (गुज.)
उदयभान जैन, भरतपुर, (राजस्थान)
प्रकाशचंद जैन सर्राफ, सनावद, (म.प्र.)
रमेशचंद कासलीवाल, इंदौर
ब्र. बीना जैन, हस्तिनापुर
ब्र. इन्दू जैन, हस्तिनापुर
राजकुमार जैन, सदर, मेरठ (उ.प्र.)
शीतल प्रसाद जैन, सर्राफ, मेरठ (उ.प्र.)

G G G G G

हरियाणा में समवसरण प्रवर्तन

लालकिला मैदान से प्रारंभ होकर निरन्तर दिल्ली की २३ कालोनियों में अभूतपूर्व स्वागत के साथ भ्रमण करता हुआ एवं धर्म की ध्वजा को फहराते हुए व भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तों को प्रचार-प्रसार करते हुए हरियाणा प्रांत में रथ का प्रवर्तन गुड़गांवा से दि. ३-५-१९९८ दिन रविवार से प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम गुड़गांवा में समवसरण व ऐरावत हाथी के रथ का भव्य स्वागत हुआ।

हरियाणा में गुड़गांवा से शुभारंभ—

हरियाणा में गुड़गांवा से समवसरण प्रवर्तन शुरू हुआ। जैकमपुरा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में समवसरण की धर्मसभा का आयोजन हुआ। सभा में पू. मुनि श्री समताभूषण जी महाराज विराजमान थे। सभाध्यक्ष श्रीमान लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेन्टर व मुख्य अतिथि श्री कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन थे। सभा में दिल्ली व गुड़गांवा के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। सभा का शुभारंभ ब्र. बहिनों के मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् केन्द्रीय अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने रथ यात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में पू. मुनि श्री के प्रवचन हुए। प्रवचन में मुनिश्री ने कहा कि आज सुसमय पू. माताजी ने एक सुन्दर योजना बनायी है धर्म के प्रचार-प्रसार की एवं सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

इसी के साथ भव्य शोभायात्रा शुरू हुई। जगह-जगह आरती एवं स्वागत हुआ। लगभग २ घंटे तक शोभायात्रा चली उपस्थिति बहुत थी। कई गेट बना रखे थे। सभी लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। इसी के साथ हरियाणा प्रांत का शुभारंभ हो गया।

धारूहेड़ा नगर में रथ पहुँचने पर भव्य स्वागत हुआ एवं सभा मंदिर जी में हुई। शोभायात्रा प्राथमिक विद्यालय पर जाकर सम्पन्न हुई। यहां पर सारी समाज का सामूहिक भोज था।

रेवाड़ी में लोगों को इतनी उत्सुकता थी रथ देखने की कि एक दिन पहले ही पण्डित जी को बुलाकर रात्रि में सभा हुई रथ पर बैठने वालों का चयन हो गया। प्रातः ८ बजे सभी लोग पूरी वेशभूषा में तैयार होकर आये मानो सचमुच में ही स्वर्ग

से इन्द्र रथ पर बैठने आये हों बहुत भक्ति एवं उत्साह के साथ शोभायात्रा लाल चौक से शुरू होकर नशियां जी तक गयी। यहां पर जलपान की व्यवस्था थी। शोभायात्रा के मार्ग में खूब स्वागत हुआ एवं जगह-जगह पेय पदार्थों की व्यवस्था थी।

नारनौल होते हुए रानीला जी क्षेत्र पर पहुँचे। भगवान ऋषभदेव की प्राचीन प्रतिमा विराजमान है। यह खुदाई में प्राप्त हुई थी। आस-पास के गांव के लोग इसे बहुत चमत्कारी प्रतिमा मानते हैं और दर्शनों के लिए प्रतिदिन यहां आते हैं। कमेटी के पदाधिकारियों ने क्षेत्र पर रथ का भव्य स्वागत किया एवं समवसरण की धर्म सभा का आयोजन किया। सभा में प्रबंध समिति के मंत्री श्री वी.के. जैन ने अपने वक्तव्य में रथ की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि यह ऑल इण्डिया का रथ है पू. माताजी ने एक बहुत सुन्दर योजना बनाई है। इस रथ का हम क्षेत्र कमेटी से स्वागत करते हैं और सभी लोगों ने आरती की व पूरे परिसर में रथ को घुमाया।

भिवानी नगर में पहुँचने पर बैण्ड बाजे से अगवानी कर रथ का नगर में प्रवेश कराया गया। यहां पर सभा में पूज्य आर्यिका श्री सृष्टिभूषणमती माताजी व आर्यिका श्री स्वस्तिभूषणमती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। पू. माताजी ने अपने मंगल प्रवचन में रथयात्रा की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हांसी, हिसार, जींद होते हुए समवसरण सफीदोमंडी पहुँचा। यहां पर कम समाज है लेकिन अभूतपूर्व उत्साह था। भरतचक्रवर्ती बने श्री सतपाल जी जैन ने ३००० रुपये का साहित्य सारे नगर में वितरण किया। जन-जन जैनधर्म से परिचित हो इसलिए खूब साहित्य वितरण किया। रथ सारा दिन मंडी में खड़ा रहा।

रोहतक नगरी एक धर्मपरायण नगरी है। यहां के प्राचीन मंदिर इसका उदाहरण हैं। रोहतकवासियों ने खूब स्वागत किया। सारे नगर में एक उल्लास का वातावरण छा गया क्योंकि सभी लोग जानते हैं कि २५०० साल बाद तो समवसरण अब आया है न जाने अब कब आये और आये तो हमें देखने का अवसर मिले या न मिले।

बहादुरगढ़ होते हुए हम लोग सोनीपत पहुँचे। सोनीपत का मंदिर बहुत भव्य एवं विशाल है। यहां पर मुनि श्री ज्ञानभूषण जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। उत्साह

बहुत अच्छा था। पू. महाराज जी ने अपने प्रवचन में कहा कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जो यह श्रीविहार का कार्यक्रम समाज को प्रदान किया है आज वास्तव में इसकी आवश्यकता थी। आज पाठ्य-पुस्तकों में भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक बताया जाता है। जबकि वास्तविकता कुछ और ही है। आज वह समय आ गया है जबकि जनमानस को जैनधर्म की प्राचीनता का परिचय कराना अत्यन्त आवश्यक है। मैं इसके साथ चल रहे प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने अभियान में पूर्ण सफलता हेतु आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

गन्नौर पानीपत होते हुए करनाल पहुँचे। करनाल में बहुत भव्य एवं विशाल शोभायात्रा निकली। लोगों का कहना था कि ऐसी शोभायात्रा आज तक हमने नहीं देखी। यमुनानगर होते हुए जगाधरी पहुँचे। जगाधरी में समवसरण का भव्य स्वागत हुआ। स्वागत सभा का आयोजन मंदिर में हुआ। जगाधरी के कर्मठ कार्यकर्ता श्री पुरुषोत्तम जी ने कहा कि वास्तव में इस अनूठी कृति को देखने के बाद कोई भी इस लाभ से वंचित नहीं होना चाहेगा। धन्य हैं माताजी! बहुत से रथ देखे पर ऐसा रथ नहीं देखा। आज तो कुंआ प्यासे के पास चलकर आ गया। यह रथ पूरे भारत में शांति की स्थापना करेगा। अहिंसा एवं विश्वमैत्री का संदेश देता हुआ रथ आगे बढ़ता जा रहा है। अम्बाला कैन्ट में महेशनगर स्थित दिगम्बर जैन गृह चैत्यालय में सभा हुई बिना किसी कार्यक्रम के ही सुयोग प्राप्त हो गया। यहां का कार्यक्रम लिस्ट में नहीं था। खूब सुंदर कार्यक्रम हुआ। अम्बाला शहर होते हुए समवसरण चण्डीगढ़ पहुँचा।

चण्डीगढ़ बहुत साफ एवं अच्छा शहर है। यह स्थान हरियाणा राज्य की राजधानी है। सेक्टर २७ में दिगम्बर जैन मंदिर में सभा हुई। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। शोभायात्रा बहुत भव्य एवं विशाल थी। ऐसी यात्रा थी जिसने १०० वर्ष का इतिहास पीछे छोड़ दिया था। मार्ग में जगह-जगह पेय पदार्थों की व्यवस्था थी। लंच पैकेट एवं फ्रूटी बँट रही थी। शोभायात्रा दादाबाड़ी पर जाकर सम्पन्न हुई। यहां पर श्वेताम्बर समाज ने रथों का भव्य स्वागत किया। यहां पर विशाल सभा हुई एवं भोजन की व्यवस्था थी।

यहां से रथ वल्लभगढ़, पलवल होते हुए होडल पहुँचा। होडल नगरी में अपार जनसमूह ने रथ की अगवानी कर स्वागत किया। पुन्हाना नगर छोटा सा है। समाज के घर कम हैं पर सभी ने मिलकर जैसा नाम वैसा काम किया। भव्य शोभायात्रा निकली। जैन-जैनेतर सभी बंधुओं ने भाग लिया।

इस प्रकार हरियाणा के लगभग २६ नगरों में समवसरण का भ्रमण हुआ सभी लोगों ने खूब भक्तिपूर्वक स्वागत किया। जैनत्व की प्राचीनता का बिगुल बजाता हुआ नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक मूल्यों को उच्चता के अग्रशिखर पर पहुँचाता हुआ, अहिंसा शाकाहार का प्रचार-प्रसार करते हुए भारतीय संस्कृति को पुनरुत्थापित करता हुआ रथ अगले प्रांत की ओर अग्रसर। इन सभी कार्यक्रमों में श्री सतपाल जी गुड़गांवा वालों का काफी सहयोग प्राप्त हुआ।

हरियाणा के तीर्थ — रानीला, कासन

गुरुओं का सानिध्य—

गुड़गांवा — पूज्य मुनिश्री समता भूषण जी महाराज
सोनीपत — पूज्य मुनि श्री ज्ञानभूषण जी महाराज
भिवानी — आर्यिका श्री सृष्टिभूषणमती माताजी
— आर्यिका श्री स्वस्तिभूषणमती माताजी

हरियाणा प्रदेश के अंतर्गत विभिन्न नगरों में समवसरण प्रवर्तन सम्पन्न हुआ

क्र. सं.	स्थान	जिला	दिनांक
१.	गुड़गांवा	गुड़गांवा	३-५-१९९८
२.	धारूहेड़ा	रेवाड़ी	४-५-१९९८
३.	रेवाड़ी	रेवाड़ी	५-५-१९९८
४.	नारनौल	महेन्द्रगढ़	६-५-१९९८
५.	रानीला	भिवानी	७-५-१९९८

क्र. सं.	स्थान	जिला	दिनांक
६.	भिवानी	भिवानी	८-५-१९९८
७.	हांसी	हिसार	९-५-१९९८
८.	हिसार	हिसार	१०-५-१९९८
९.	जींद	हिसार	११-५-१९९८
१०.	सफिदोमंडी	हिसार	१२-५-१९९८
११.	रोहतक	रोहतक	१३-५-१९९८
१२.	बहादुरगढ़	झज्जर	१४-५-१९९८
१३.	सोनीपत	सोनीपत	१५-५-१९९८
१४.	गन्नौर	गन्नौर	१६-५-१९९८
१५.	पानीपत	पानीपत	१७-५-१९९८
१६.	करनाल	करनाल	१८-५-१९९८
१७.	यमुनानगर	यमुनानगर	१९-५-१९९८
१८.	जगाधरी	जगाधरी	२०-५-१९९८
१९.	अम्बाला कैंट	अम्बाला	२१-५-१९९८
२०.	अम्बाला शहर	अम्बाला	२२-५-१९९८
२१.	चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	२३-५-१९९८
२२.	फरीदाबाद	फरीदाबाद	२४-५-१९९८
२३.	वल्लभगढ़	फरीदाबाद	२५-५-१९९८
२४.	पलवल	फरीदाबाद	२६-५-१९९८
२५.	होडल	फरीदाबाद	२७-५-१९९८
२६.	पुन्हाना	गुड़गांवा	२८-५-१९९८

हरियाणा प्रदेश प्रवर्तन समिति

जैनीलाल जैन, जगाधरी —संरक्षक
ताराचंद प्रेमी, फिरोजपुर झिरका —संरक्षक

धन्नामल जैन, रेवाड़ी —संरक्षक
महावीर प्रसाद जैन, बहादुर गढ़ —संरक्षक
जिनेन्द्र कुमार जैन, रोहतक —संरक्षक
जयंती प्रसाद जैन, रोहतक —संरक्षक
सुमेर चंद जैन, गुडगांवा —सदस्य
हरीश कुमार जैन, गुडगांवा —सदस्य
दीपक जैन, भिवानी —सदस्य
विकास जैन, भिवानी —सदस्य
ज्ञानचंद जैन, भिवानी —सदस्य
धर्मपाल जैन, भिवानी —सदस्य
सतपाल जैन, गुडगांवा —संयोजक
सुरेश चंद जैन, फरीदाबाद —सदस्य
सुशील कुमार जैन, फरीदाबाद —सदस्य
एम.के. जैन, फरीदाबाद —सदस्य
मंगतराम जैन, पलवल —सदस्य
नरेश जैन, होडल —सदस्य
देवेन्द्र कुमार जैन, धारूहेड़ा —सदस्य
पुरुषोत्तम दास जैन, जगाधरी —सदस्य
सत्येन्द्र कुमार जैन, जगाधरी —सदस्य

G G G G G

राजस्थान में समवसरण प्रवर्तन

अतिशय क्षेत्र तिजारा से राजस्थान प्रवर्तन का शुभारंभ हुआ। सभी केन्द्रीय एवं प्रांतीय समिति के पदाधिकारियों द्वारा उत्साहपूर्वक रथ प्रवर्तन का आरंभ हुआ। दिन प्रतिदिन धर्म की ध्वजा को फहराते हुए रथ आगे बढ़ने लगा। अलवर, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, करौली, दौसा जिलों से होता हुआ अतिशयक्षेत्र महावीर जी पहुँचा। यहाँ पर रथ की स्वागत सभा का आयोजन आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी के सानिध्य में रखा गया। पूज्य माताजी के सारगर्भित प्रवचन हुए। श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष श्री एन.के. सेठी जी ने क्षेत्र पर रथ का भव्य स्वागत किया। छोटे-छोटे नगरों में भव्य स्वागत हुआ।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में रथ का स्वागत करने की तैयारी जोरों पर थी। सभी कार्यकर्ताओं ने बहुत मेहनत व लगन से तैयारी की थी। पूरी गुलाबी नगरी में तोरण द्वार लगाये थे। रथ का प्रवेश भट्टारक जी की निशियां से हुआ। सर्वप्रथम महामहिम राज्यपाल जी ने श्रीफल चढ़ाकर रथ का दर्शन किया, व जयपुर नगरी के लिए रथ प्रवर्तन का उद्घाटन किया। महामहिम राज्यपाल एन.एल. टिबरेवाल जी ने इस शुभअवसर पर कहा कि भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ पूज्य माताजी की प्रेरणा से व माननीय प्रधानमंत्री जी के करकमलों से प्रवर्तित होकर कुछ राज्यों में भ्रमण करता हुआ राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर में अहिंसा का संदेश लेकर आया है। जैनधर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में एक है जो अनादिकाल से चला आ रहा है। आज सारे विश्व में भगवान महावीर व भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों की आवश्यकता है। ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जी ने मुझे कुछ जिम्मेदारियां सौंपी हैं। दोनों ही बातें सामयिक व जरूरी हैं। आज समाज में अच्छा वातावरण बनाने हेतु ऋषभदेव व महावीर के आदर्शों पर चलने हेतु व्यक्तियों को अग्रसर करने हेतु यह आवश्यक है कि इसके लिए स्मारक वगैरह बनाए जायें। एक सुन्दर पार्क भगवान ऋषभदेव के नाम पर रहेगा और मैं चाहूँगा कि जैन समाज इसको अत्यधिक सुन्दर बनाए व उसके रख-

रखाव की जिम्मेदारी ले। राज्यपाल जी अति उत्साहित एवं प्रसन्न थे। समारोह की अध्यक्षता पूनमचंद जी गंगवाल ने की। रथयात्रा का जुलूस काफी बड़ा एवं भव्य था। जयपुर नगर के प्रमुख मार्गों पर २४ तीर्थंकरों के नाम के २४ गेट बनाए गए थे। जगह-जगह चौक पूर कर पुष्पवृष्टि व मंगल आरती करके भक्तों ने अपनी भावनाएं अर्पित की। यह शोभायात्रा एक ऐतिहासिक शोभायात्रा थी। इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में राजस्थान प्रांतीय समवसरण श्रीविहार समिति व अखिल भारतवर्षीय दि. जैन युवा परिषद शाखा जयपुर के जिलाध्यक्ष श्री दिलीप जैन एवं सभी युवकों का योगदान सराहनीय रहा है। जयपुर की पाँच कालोनियों में अलग-अलग कार्यक्रम हुए, मालवीय नगर, महावीर नगर, जवाहर नगर, मानसरोवर, शास्त्रीनगर। प्रचार-प्रसार में दैनिक पत्रों का काफी सहयोग प्राप्त हुआ।

जयपुर से अतिशय क्षेत्र सांगानेर पहुँचे। सभी ग्रामवासियों ने उत्साह पूर्वक स्वागत किया व शोभायात्रा सारे नगर में घुमायी। यहां का मंदिर बड़ा भव्य एवं कलात्मक है। यहां से पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र में पद्मप्रभू भगवान के दरबार में पहुँचे। आज यहां पर वार्षिक मेला था पूर्व संध्या पर मंदिर जी में रात्रि में भजन संध्या हुई। दूसरे दिन प्रातः सभी कमेटी के पदाधिकारियों ने स्वागत किया और कहने लगे हमारे लिए तो सोने पर सुहागा हो गया । एक साथ दो-दो कार्यक्रम हुए। चाकसू नगरी में तहसील के सामने भव्य पंडाल बना रखा था। पहुँचते ही अपार जनसमूह ने रथ का स्वागत किया और अपने को धन्य माना।

माधोराजपुरा में हम पूर्व रात्रि में पहुँचे। सभी जनता इतनी खुश थी कि मानों फूले नहीं समा रहे हों, कई लोग कहने लगे कि हमारी माताजी का रथ आ गया। मैं नया-नया था तो सोचता कि रथ मैं लेकर आया हूँ और कहते कुछ और हैं। पर जब पता लगा कि पू. गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने आर्यिका दीक्षा यहीं पर ली थी इसलिए सबमें इतना उत्साह है। कहने का तात्पर्य यह है कि इतना लगाव था सबमें कि लिखा नहीं जा सकता है। शोभायात्रा इतनी भव्य निकली जैसे नगर के सभी लोग इसमें सम्मिलित हुए हों ऐसा लगता था। इस स्थान को ग्रामवासी माताजी की जन्मभूमि कहते हैं।

मोजमाबाद अतिशय क्षेत्र पर मुनिश्री वारिषेण महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। सांभरनगरी में मुख्य अतिथि श्री जिलाधीश महोदय एवं तहसीलदार थे। दूजोद नगर में छोटा सा समाज है वहाँ पर स्वागत सभा में एक ठाकुर साहब आये उन्होंने रथ के उद्देश्य के बारे में सुना तो बैठे-बैठे ही उनकी आंखों में अश्रु आ गये। मैंने पूछा ठाकुर साहब क्या हो गया तो कहने लगे कि मेरी उम्र ८० वर्ष की है आज तक खूब शिकार किया है आज पंडित जी का प्रवचन सुना तो मुझे अपने आप से घृणा हो गयी और मैं सोचने लगा कि कितने जन्मों में इसका कर्ज चुका पाऊंगा और आजीवन मांसाहार का त्याग कर दिया। समवसरण के दर्शन मात्र से हृदय परिवर्तन हो जाता है।

धर्मनगरी सीकर में मुनि श्री सुधासागरजी के सानिध्य में स्वागत सभा हुई। महाराजजी ने रथ के दर्शन किये एवं अपने प्रवचन में इसे एक बहुत बड़ी उपलब्धि बताया। शोभायात्रा पूरे सीकर नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गयी। फतेहपुर शेखावाटी में रथ के स्वागत के लिए स्थानीय एम.एल.ए. बनवारी लाल मिण्डा जी पधारे। माननीय मुख्य अतिथि जी ने दर्शन करके अपने भाग्य को सराहा।

दूसरे चरण का प्रवर्तन—

रानोली में उत्साहपूर्वक रथ का स्वागत हुआ। यह स्थान आचार्य ज्ञानसागरजी की जन्मस्थली है। कोछोर होते हुए चुरु पहुँचे। यहाँ पर धर्मशाला अच्छी बनी है। सभाध्यक्ष श्री ए.सी. भट्ट (कलेक्टर चूरू) थे। मुख्य अतिथि श्री ललित किशोर चतुर्वेदी शिक्षामंत्री राजस्थान सरकार थे। माननीय मंत्री जी ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर श्रीफल चढ़ाकर रथ की पूजा अर्चना की। सुजानगढ़ में मुनिश्री सुविधिसागरजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। लाडनू, डेह, मेड़तारोड होते हुए मेड़तासिटी पहुँचे। यहाँ पर रथ का स्वागत करने के लिए श्री कन्हैयालाल स्वामी उप जिला कलेक्टर, श्री राजेन्द्र सिंह जिला सत्र न्यायाधीश महोदय पधारे।

नागौर में पूर्व संध्या पर प्रवेश हुआ। अति उत्साह के साथ बैण्डबाजे से नगर प्रवेश हुआ। प्रातः गांधी चौक पर सार्वजनिक सभा हुई। विशाल पांडाल बना हुआ था। रथ के स्वागत के लिए श्री जे.पी. चंदौलिया कलेक्टर नागौर व श्री मदनमोहन व्यास

जी एस.डी.एम. पधारे एवं अपनी शुभ- कामनाएं रथ के लिए प्रेषित कीं। पूरी नागौर नगरी ही मानो स्वागत के लिए खड़ी हो। शोभायात्रा बहुत अच्छी निकली।

कुचामन सिटी में मेनरोड पर पंडाल बना कर सभा हुई। रथ के स्वागत के लिए एस.डी.एम. माहेश्वरी जी पधारे। भिठड़ी, नावा, लूणवा, मारौठ, रूपनगढ़, नसीराबाद, केकड़ी होते हुए रथ बघेरा पहुँचा यहां पर कुलभूषणनंदी जी महाराज का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। सावर, मेहरूकला होते हुए नारेली क्षेत्र पहुँचे। यहां पर ४ दिन अवकाश रहा।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर अजमेर नगरी में रथ का आगमन हुआ। भागचंद जी सोनी की नशिया के बाहर रथ खड़े किये थे। यहां पर काफी अच्छा समवसरण बना हुआ है। समवसरण में स्वर्ण का काम किया हुआ है। शाम को ही कलेक्टर साहब ने रथ के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर आरती करके अपने भक्ति सुमन अर्पित किये। युवा परिषद् की स्थानीय शाखा का काफी सहयोग प्राप्त हुआ। शांतिलालजी बड़जात्या का सहयोग मिला। अजमेर की कई कालोनियों में रथ का स्वागत एवं आरती हुई।

आगे हम मदनगंज किशनगढ़ में पहुँचे। यहां पर आचार्यश्री वर्द्धमान सागर जी महाराज के सानिध्य में स्वागत सभा रखी गयी। हम सभी लोगों का शाल ओढ़ा कर स्वागत किया। आचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन में पू. माताजी के अद्भुत कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि माताजी ने अनेक अलौकिक कार्य किये हैं यह समवसरण रथ उनमें से एक है। आचार्यश्री ने बारीकी से समवसरण मॉडल का अवलोकन कर दर्शन किये। पूरी रथयात्रा में रथ के साथ-साथ चले। रथ आगे लाम्बाहरिसिंह होते हुए मालपुरा पहुँचा। यहाँ पर गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी ससंघ विराजमान थीं। विशुद्धमती माताजी ने अपने प्रवचन में पू. माताजी के द्वारा किये गये कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि यदि आज हम धरती पर जम्बूद्वीप देख रहे हैं तो यह माताजी की देन है। शोभायात्रा में माताजी ससंघ साथ-साथ चलीं।

पचेवर ग्राम में अच्छा स्वागत हुआ एवं रथ की अगवानी बहुत अच्छी हुई। राजस्थान में नम्बर एक की बोली इस स्थान पर हुई। डिग्गी, लावा होते हुए झिराना

रथ पहुँचा। विशाल पंडाल बना हुआ था। संयोजक, संचालक का भाषण हुआ। रथयात्रा निकाली एवं सारी समाज का सामूहिक भोजन था। उल्लासपूर्वक कार्यक्रम हो रहे थे। शोभायात्रा में रथों के आगे क्रम से एक के पीछे एक महिलाएँ मंगल कलश लेकर व केशरिया साड़ी पहन कर चल रही थीं तथा बालिकाएं गर्बा करते हुए चल रही थीं अतः बड़ी भक्ति का वातावरण प्रतिभासित होता था।

बगड़ी में आ. श्री कर्मविजयनंदीजी एवं आर्यिका श्री कोमलश्री माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। टोडारायसिंह में आर्यिका कुन्दश्री माताजी व क्षु. पद्म श्री माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। निवाई में अति उत्साह के साथ रथ का स्वागत किया। टोंक में रथ पहुँचने पर बड़ी भक्ति से स्वागत कर शोभायात्रा निकाली। घंटाघर पर काफी बड़ी जनसभा हुई, जिसमें जैन एवं जैनेतर लोगों ने भाग लिया। नगर फोर्ट की सभा में बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री मोहनलाल जैन मुख्य अतिथि थे। बनेठा नगर में स्वागत बहुत अच्छा हुआ। सारा नगर शोभायात्रा में चल रहा था। महिलाएं मंगलकलश लेकर आगे-आगे चल रही थीं।

सूथड़ा में राजा श्रेयांस का पद जिन्होंने प्राप्त किया था उन्होंने सारे नगर में प्रसाद के रूप में गुड़ बाँट दिया। चौथ का बरवाड़ा यहां का कार्यक्रम हमारी लिस्ट में नहीं था लेकिन सभी लोगों ने इतना आग्रह किया कि रात में रथ अपने नगर ले जाकर जुलूस निकाला। रात्रि १२ बजे तक कार्यक्रम चला।

नैनवा में आचार्य चंद्र सागर जी के सानिध्य में सभा हुई। लाखेरी में २ कि.मी. पहले से लोग इंतजार कर रहे थे कि रथ कब आये। बैण्ड बाजे के साथ नाचते गाते हुए नगर प्रवेश करवाया। इन्द्रगढ़ में तहसीलदार श्री श्यामसुंदर शर्मा जी मुख्य अतिथि थे। केशवराय पाटन में सभा में अध्यक्षता डा. भूपेन्द्र सिंह जी चेयरमैन नगर पालिका कर रहे थे। मुख्य अतिथि श्री अनिल कुमार गर्ग एम.डी. शुगर फैक्ट्री थे। सभा का संचालन श्री चंद्रप्रकाश जी काला (मंत्री दिगम्बर जैन समाज) कर रहे थे। तालेड़ा-आलोद-हिण्डोली होते हुए देवली पहुँचे। यहाँ पर युवा परिषद् के कार्यकर्ताओं द्वारा बहुत सुन्दर कार्यक्रम हुआ। पूरी टोंक जिले की यात्रा के मध्य श्री लालचंद जी निवाई वालों का बहुत सहयोग प्राप्त हुआ।

बूंदी में नवलसागर पार्क में सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर) थे व मुख्य अतिथि श्री वी. एल. शर्मा आयकर अधिकारी बूंदी थे। सीसवाली में दोपहर का कार्यक्रम था। रथ पहुँचते ही बैण्डबाजे की मधुर ध्वनि से आगवानी कर रथ को सभा स्थल तक ले गये। सभाध्यक्ष श्री आर.एस. गठाला कलेक्टर बारां व मुख्य अतिथि श्री प्रकाशचंद जैन तहसीलदार मांगरोल थे। विशिष्ट अतिथि यशभानु जैन अध्यक्ष नगर पालिका बारां थे।

अकलेरा ग्राम में अति उत्साह एवं भक्ति से रथ का स्वागत हुआ। सभी कार्यकर्ता रात भर मंच एवं पंडाल की सजावट में लगे रहे। प्रातः सभा हुई। रथ के साथ आये विद्वानों ने रथयात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि श्री द्वारकाप्रसाद गुप्ता उपजिला कलेक्टर थे। सारी समाज का सामूहिक भोज था। यहां से रथ चांदखेड़ी बड़े बाबा के दरबार में पहुँचा। झालावाड़-झालरापाटन होते हुए धर्मनगरी पिड़ावा पहुँचे। यहाँ पर तो लगता था जैसे कभी किसी ने समवसरण देखा ही नहीं हो अपार जन समूह था। शोभायात्रा में सैकड़ों महिलाएं मंगल कलश लेकर चल रहीं थीं। बहुत भक्ति के साथ कार्यक्रम हुआ। सुसनेर में आचार्य श्री दर्शनसागर जी के सानिध्य में कार्यक्रम हुआ। आज आचार्य श्री का १५वां आचार्य पदारोहण व पिच्छी परिवर्तन का कार्यक्रम था। वार्षिक रथयात्रा भी थी। भवानी मंडी में पार्श्वसागर जी महाराज के सानिध्य में कार्यक्रम हुआ। रामगंज मंडी में रथ का अभूतपूर्व स्वागत हुआ।

अतिशय क्षेत्र बिजौलिया में रथ का कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ। यहाँ पर सबसे बड़े व प्राचीन शिलालेख हैं।

कोटा नगरी में महापौर द्वारा स्वागत-

कोटा नगर में गीताभवन में समवसरण की स्वागत सभा हुई। मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन श्रृंगी महापौर कोटा थीं। सभाध्यक्ष श्री भागचंद टोंग्या (अध्यक्ष पद्मपुरा अति. क्षेत्र) थे। कोटा कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए दिल्ली से भाई जी (ब्र.रवीन्द्र जैन) महावीर प्रसाद जी, प्रेमचंद जैन, विजय जैन, अनिल जी

(कमल मंदिर), मनोज जी मेरठ, अनुपम जी इंदौर, सतीश जी सरधना, उदयभान जी भरतपुर व दिलीप जैन जयपुर आये। उपस्थिति बहुत थी। शोभायात्रा पूरे नगर में घुमायी गयी। इस पूरे कार्यक्रम में उत्तम चंद जी निर्खी कोटा का सहयोग प्राप्त हुआ।

बेंगू नगर में रथ के स्वागत के लिए श्री घनश्याम जैन एम.एल.ए. पधारे। महुआ, धमनिया अमरगढ़ होते हुए समवसरण चँवलेश्वर पार्श्वनाथ पहुँचा। यहां का वार्षिक मेला था। इसलिए आसपास के सभी क्षेत्रों के लोग एकत्र थे। यहां भी कार्यक्रम हुआ शोभायात्रा निकली। आमल्दा पहुँचने पर लोग कहने लगे पंडित जी! आप तो गांव के बाहर ही बोली लगा लीजिये। हम रथ में बैठकर गांव के अंदर चलेंगे। खजूरी ग्राम में सभा में समवसरण का स्वागत करने के लिए स्थानीय विधायक श्री रतन लाल जी तांबी पधारे। जिस उद्यान में सभा हो रही थी उसका नाम ऋषभदेव उद्यान रखने की घोषणा कर गये। इन क्षेत्रों में भागचंद जी का सहयोग खूब मिला।

कोठिया में समवसरण का स्वागत करने श्री वी.के. जैन जिंक फैक्ट्री के जनरल मैनेजर पधारे। गुलाबपुरा में मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मी नारायण जी उपखण्ड अधिकारी व श्री रामलाल जाट विधायक बनेठा थे। विजयनगर में तहसीलदार जी ने स्वागत किया। चापनेर, भीलवाड़ा, निमाज होते हुए आनंदपुर कालू पहुँचे। यहां पर उत्साह अत्यधिक रहा। सभाध्यक्ष श्रीमान सुरेन्द्र गोयल विधायक जैतारण व मुख्य अतिथि श्री महेन्द्र पारिख एस.डी.एम. जैतारण थे। शोभायात्रा बहुत भव्य थी। राजस्थान में नं. १ की बोलियां यहाँ पर रहीं। पाली में समवसरण स्वागत के लिए स्थानीय विधायक पधारे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि आज इस हिंसावादीयुग में अहिंसा प्रेमियों के लिए यह यात्रा एक उपहार है। इससे सभी को अपने जीवन में अहिंसा को मुख्य लक्ष्य बनाना चाहिए।

१ जनवरी सन् १९८९ को नववर्ष का पहला दिन था। उस दिन हम सभी लोग जोधपुर में थे। जोधपुर में रथ के स्वागत के लिए श्री मिलाप चंद जैन (पूर्व न्यायाधीश) व श्री मानसिंह देवड़ा विधायक सरदारपुरा पधारे। ओसवाल समाज ने भी भव्य स्वागत किया। बीकानेर में समवसरण का भव्य स्वागत हुआ। डा. मधुसूदन जी सभा का संचालन कर रहे थे। यह स्थान आचार्यकल्प श्री

श्रुतसागर जी महाराज (आचार्यश्री वीरसागर महाराज के शिष्य) की जन्मभूमि है। बीकानेर से करीब ३० किमी. की दूरी पर करणीमाता मंदिर है। जहाँ पर करोड़ों-चूहें रहते हैं जगह-जगह चूहे हैं। देखने लायक स्थान है विश्व प्रसिद्ध है। सिरोही में दिगम्बर श्वेताम्बर समाज ने मिलकर कार्यक्रम किया।

आबूरोड पर विश्वहिन्दू परिषद वालों ने रथ का खूब स्वागत किया। दोनों रथों को फूलों से लाद दिया। मेन चौराहे पर ले जाकर प्रवचन हुए। चित्तौड़गढ़ में केशव माधव सभागार में सभा हुई। मुनि श्री स्वभाव सागर जी व क्षुल्लक जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ पुनः निम्बाहेड़ा होते हुए उदयपुर पहुँचे।

उदयपुर में बैंक तिराहे पर विशाल मंच बनाकर सभा हुई। उत्साह अच्छा था। सभा में उपस्थिति भी काफी थी। सभाध्यक्ष श्री गुलाब सिंह जी सक्तावत सहकारिता मंत्री राजस्थान सरकार थे। मुख्य अतिथि श्री शांतिलाल चपलोत सांसद, श्री त्रिलोक पूर्बिया विधायक, श्री किरण महेश्वरी सभापति नगर परिषद्, डा. प्रेम सुमन जैन थे। हस्तिनापुर से ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, दिल्ली से जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, कैलाशचंद जैन, अनिल कुमार जैन पधारे। माननीय सक्तावत जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जैन धर्म अति प्राचीन धर्म है। इस अहिंसा की ज्योति से सारा विश्व प्रकाशित होगा। जन-जन का कल्याण होगा। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने उद्गार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महावीर मिण्डा जी का सहयोग प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी के सानिध्य में समवसरण की स्वागत सभा—

स्वागत सभा का आयोजन रानीबाग चौक में रखा गया। आचार्यश्री ससंघ विराजमान थे। सभा का संचालन श्री शंकर लाल जैन चेयरमैन कर रहे थे। उपस्थिति अच्छी थी। आचार्य श्री के प्रवचन हुए। आचार्यश्री संघ सहित पूरी शोभायात्रा में रथ के साथ-साथ चले।

इसी क्रम में उदयपुर संभाग में रथ का प्रवर्तन हुआ। बस्सी ग्राम में मुनि श्री रविसागरजी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। देवपुराग्राम में मुनिश्री निर्वाणसागरजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। सलूम्बर में रथ का भव्य स्वागत हुआ। यहां पर आर्यिका

आदिमती जी व श्रुतमतीजी ससंघ विराजमान थीं। मुनि श्री गुणसागर जी का सानिध्य भी प्राप्त हुआ। शेषपुर ग्राम में रथ का स्वागत हुआ। यह स्थान आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी महाराज की जन्मभूमि है। लोहारिया में उत्साह बहुत अच्छा था। यह स्थान आचार्य श्री भरतसागर जी (आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के शिष्य) की जन्मभूमि है।

बासवाड़ा नगर में नूतन कॉलेज ग्राउन्ड में पंडाल बना हुआ था। इसी में सभा हुई। उत्साह बहुत अच्छा था। सभाध्यक्ष श्री सुरेश कुमार जी सिंघवी थे। मुख्य अतिथि श्री ओ.पी.गुप्ता (अति.जिला कलेक्टर बासवाड़ा) थे। यहाँ मैनें अपने उद्‌बोधन में कलेक्टर साहब से कहा कि आज का दिन बासवाड़ा में हमेशा समवसरण की याद दिलाता रहे इसलिए किसी मार्ग का नाम भगवान ऋषभदेव मार्ग रख दिया जाये। माननीय कलेक्टर साहब खुश हुए और उन्होंने तत्काल इसके लिए मंजूरी दे दी। शोभायात्रा स्कूल से गांधी चौक तक गयी।

परतापुर में मुनिश्री गुप्तिनंदी जी महाराज का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। बोरी ग्राम में रथ का स्वागत स्थानीय सरपंच श्रीमती शशिकला जी ने किया। अरथूना में श्री नाथूलाल जी भगत प्रधान ग्राम ने समवसरण का स्वागत किया। बागीदौरा वालों ने बहुत सुन्दर कार्यक्रम किया सभाध्यक्ष श्री रतनलाल जी सरपंच थे। स्थानीय बालिकाओं ने नृत्य नाटिका प्रस्तुत की एवं समाज के द्वारा समिति के नाम प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

कलिंजरा में मुख्य अतिथि श्री दिनेश बोहरा थे। (सी.आई. थाना-कलिंजरा)। सरोदा ग्राम में समवसरण के स्वागत के लिए श्रीमती कलावती भट्ट सरपंच सरोदा आयीं। सागवाड़ा ग्राम में बालाचार्य योगीन्द्र सागर जी के सानिध्य में सभा हुई। अपने प्रवचन में पू. बालाचार्य जी ने कहा कि आज सिर्फ इस समवसरण को देखने के लिए व दर्शन करने के लिए ३ दिन पहले मैं यहां पर आया हूँ। माताजी वो नारी हैं जिन्होंने ऐसा विपुल साहित्य समाज को दिया है जिसकी मिशाल नहीं है। जम्बूद्वीप बनाकर माताजी ने कमाल ही कर दिया है। पूरी शोभायात्रा में रथ के साथ-साथ चले।

डूंगरपुर में मुनि श्री प्रसन्न सागर जी व प्रज्ञासागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। सभा में मुख्य अतिथि श्री पी.आर. जेवरिया पुलिस अधीक्षक डूंगरपुर थे। देवलग्राम में हम रथ लेकर कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर पहुँचे गांव से करीब एक किलोमीटर पहले सारी समाज व ऐलक जी खड़े थे अगवानी के लिए। उत्साह बहुत अच्छा था। यहां पर ऐलक श्री तारण सागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। झाड़ोल ग्राम में समवसरण का स्वागत करने के लिए पधारे श्री निरंजन लाल सरपंच झाड़ोल।

निरन्तर एक ग्राम से दूसरे ग्राम होते हुए राजस्थान समापन की बेला आ गयी लगभग ४१६ नगरों में सफल प्रवर्तन रहा। हमें भी पता ही नहीं लगा और धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। यथा नाम तथा गुण जैसे राजस्थान नाम है। वैसे ही यह वास्तव में ही राजाओं का स्थान है। मैं तो कभी-कभी सोचता हूँ कि जब वास्तव में समवसरण विचरण करते होंगे तो कितना अद्‌भुत दृश्य होता होगा। मैंने देखा कि सभाओं में न जाने कितने आदिवासी आते और कहते कि हमारा मांसाहार का त्याग है हमारा शराब का त्याग है। हमारा शिकार करने का त्याग है। सुनकर मन में बड़ा हर्ष होता कि इस धातु के समवसरण को देखकर जब लोगों का हृदय परिवर्तन हो जाता है तो वास्तविकता में क्या होता होगा?

राजस्थान प्रवर्तन का समापन भगवान ऋषभदेव के चरणों में केशरिया जी में रखा गया। केन्द्रीय एवं प्रांतीय सभी पदाधिकारी आये। कार्यक्रम पटुना चौक में बने विशाल पंडाल में हुआ। सभा में ऐलक श्री निर्भय सागर जी महाराज विराजमान थे। उत्साह समाज में अच्छा था। मुख्य अतिथि श्री भैरु सिंह मीणा सांसद सलूम्बर थे। आनंदपुर कालू वालों ने पूरे प्रवर्तन में सबसे अधिक राशि की बोलियाँ प्राप्त कीं उनका सम्मान यहां पर समिति के अध्यक्ष-ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन ने किया। राजस्थान प्रवर्तन समिति के मंत्री श्रीमान ज्ञानचंद जी झांझरी ने पूरे राजस्थान में सफलता पूर्वक प्रवर्तन सम्पन्न कराने के लिए मेरा व संचालक पं. सुधर्मचंद शास्त्री का स्वागत किया। इस सारे मार्ग का दर्शन अर्थात् रूट बनाने का कार्य श्री उदयभान जैन व दिलीप जैन ने किया जो धन्यवाद के पात्र हैं उनका भी सम्मान समिति के अध्यक्ष द्वारा हुआ। इसी के साथ राजस्थान प्रवर्तन सम्पन्न हुआ।

राजस्थान प्रदेश के तीर्थ—

तिजारा, महावीर जी, सांगानेर, पद्मपुरा, चकवाड़ा, मोजमाबाद, लूणवां, केशवराय पाटन, चांदखेड़ी, झालरापाटन, बिजौलिया, चँवलेश्वर पार्श्वनाथ, आवां, केशरिया जी।

साधुओं का सानिध्य—

महावीर जी — आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी ससंघ
सवाईमाधोपुर — पूज्य मुनि श्री समताभूषण जी महाराज
नसीराबाद — पूज्य आर्यिकाश्री विज्ञानमती माताजी
बघेरा — मुनि श्री कुलभूषणनंदी जी महाराज
— पू. मुनिश्री श्रुतसागर महाराज
— आर्यिका श्री दिव्य श्री माताजी
मदनगंज-किशनगढ़ — आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ
मोजमाबाद — मुनि श्री वारिषेण महाराज
सीकर — मुनि श्री सुधासागर जी महाराज
मालपुरा — पूज्य गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी ससंघ
बगड़ी — पू. श्री कर्मविजयनंदी जी महाराज
— आर्यिका श्री कोमल श्री माताजी
टोडारायसिंह — पू. आर्यिका श्री कुन्दश्री माताजी
— क्षुल्लिका श्री पद्मश्री माताजी
उनियारा — आर्यिका श्री सुविवेकमती माताजी
नैनवां — आचार्य श्री चंद्रसागर जी महाराज ससंघ
देई — मुनि श्री तेजस्वी सागर जी महाराज
सुसनेर — आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज
चांदखेड़ी — आर्यिका श्री श्रद्धामती माताजी
— आर्यिका सुवर्णमती माताजी
चित्तौड़गढ़ — श्री सुबाहुसागर जी महाराज

भीण्डर — आचार्यश्री अभिनंदन सागर जी महाराज ससंघ
बस्सी — मुनिश्री रविसागर जी महाराज
सलुम्बर — मुनिश्री गुणसागर जी महाराज
— आर्यिका आदिमती माताजी ससंघ
धरियावाद — आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी ससंघ
मालपुरा — गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी
सागवाड़ा — बालाचार्य श्री योगीन्द्र सागर जी ससंघ
परतापुर — मुनि श्री गुप्तीनंदी जी महाराज ससंघ
देवल — ऐलक श्री तारणसागर जी महाराज
भिवानीमंडी — मुनिश्री पार्श्वसागर जी महाराज
केसरिया जी — ऐलक श्री निर्भयसागर जी महाराज

स्वागत हेतु पधारे विशिष्ट अतिथि—

गुलाबपुरा — श्री लक्ष्मी नारायण एस.डी.एम.
— श्री रामलाल जाट विधायक
विजयनगर — श्री देवेन्द्र कुमार जी तहसीलदार
— जी.सी. लोढ़ा, नगर पालिका चेयरमैन
उथरदा — श्री देवीलाल जी बटेल सरपंच ग्राम
देवपुरा — श्री महेन्द्र कुमार यादव उ.मा.वि. प्रधान अध्यापक देवपुरा
ओबरी — श्री राजेन्द्र जी भट्ट वाइस चांसलर
अजमेर — श्री करणी सिंह राठौर, कलेक्टर
सीसवाली — श्री आर.एस. गठाला, कलेक्टर बारां
— श्री प्रकाशचंद जैन, तहसीलदार
— श्री यशभानु जैन अध्यक्ष नगर पालिका
अकलेरा — श्री द्वारका प्रसाद गुप्त उप जिला कलेक्टर
बेगू — श्री धनश्याम जैन एम.एल.ए.
खजूरी — श्री रतनलाल जी तांबी विधायक

आनंदपुर कालू	— श्री सुरेन्द्र गोयल विधायक जैतारण, श्री महेन्द्र पारिख
	— एस.डी.एम. जैतारण
पाली	— विधायक जी
जोधपुर	— श्री मानसिंह देवड़ा विधायक सरदारपुरा
बासवाड़ा	— श्री ओ.पी. गुप्ता अतिरिक्त जिला कलेक्टर
बोरी	— श्रीमती शशिकला सरपंच ग्राम पंचायत
अरथूना	— श्री नाथूलाल जी भगत ग्राम प्रधान
बागीदौरा	— श्री रतनलाल जी सरपंच
कलिंजरा	— श्री दिनेश बोहरा सी.आई. थाना कलिंजरा
सरोदा	— श्रीमती कलावती भट्टा ग्राम प्रधान
डूंगरपुर	— श्री पी.आर. जवेरिया पुलिस अधीक्षक
झाड़ोल	— श्री निरंजनलाल सरपंच झाड़ोल
छीपाबड़ौत	— श्री भरतकुमार बठाला जिला प्रमुख
सरोलाकला	— श्री पारस कुमार जैन सिविल न्यायाधीश खानपुर
उदयपुर	— श्री गुलाबसिंह जी सक्तावत सहकारिता मंत्री राज. सरकार
	— श्री शांतिलाल चपलोत सांसद,
	— श्री त्रिलोक चंद पूर्वीया विधायक
	— श्रीमती किरण महेश्वरी (मेयर उदयपुर)
केशरिया जी	— श्री भैरू सिंह जी मीणा सांसद

राजस्थान प्रवर्तन के लिए कमेटी का गठन किया गया।

राजस्थान प्रदेश प्रवर्तन समिति

नरेश कुमार सेठी, जयपुर	— परामर्श प्रमुख
पूनमचंद गंगवाल ''झरियावाले'', जयपुर	— अध्यक्ष
राजेन्द्र कुमार ठोलिया, जयपुर	— उपाध्यक्ष
सोहनलाल सेठी, जयपुर	— उपाध्यक्ष

खिल्लीमल जैन, अलवर	— उपाध्यक्ष
ज्ञानचंद झांझरी, जयपुर	— महामंत्री
राजेन्द्र के. गोधा, जयपुर	— मंत्री
राजकुमार कोठारी, जयपुर	— संयोजक
उदयभान जैन, भरतपुर	— सह संयोजक
अरुण शाह, जयपुर	— सह संयोजक
दिलीप जैन, जयपुर	— प्रचार मंत्री
नेमीचंद गंगवाल, जयपुर	— कोषाध्यक्ष

सदस्यगण—

महावीर प्रसाद जैन, जयपुर–मुख्य सचेतक	पदमकुमार सेठी, जयपुर
ब्र. कमलाबाई, श्री महावीर जी	अरुण सोनी, जयपुर
राजकुमार काला, जयपुर	राजेन्द्र कुमार बज, कोटा
रतनलाल छाबड़ा, जयपुर	ज्ञानचंद जैन, तिजारा
गणेश राणा, जयपुर	पं. लाडली प्रसाद पापड़ीवाल, सवाई माधोपुर
भंवरलाल सरावगी, जयपुर	प्रकाशचंद जैन, जयपुर
कन्हैयालाल सेठी, जयपुर	शांतिलाल बड़जात्या, अजमेर
राजेन्द्र के. शेखर, जयपुर	भागचंद अजमेरा, पत्रकार, सीकर
महावीर प्रसाद पहाड़िया, जयपुर	भागचंद जैन, एडवोकेट, टोंक
ताराचंद बड़जात्या, जयपुर	भागचंद टोंग्या, निवाई
महेन्द्र कुमार पाटनी, जयपुर	सोहनलाल गंगवाल, भीलवाड़ा
उत्तम चंद निर्खी, कोटा	कमलचंद पहाड़िया, कुचामन सिटी
राजमल बेगस्या, जयपुर	महावीर मिंडा, उदयपुर
प्रवीण चंद जैन, जयपुर	रामनिवास जैन अग्रवाल, सुजानगढ़–चुरू
सूरज नारायण शाह, जयपुर	कमल बाबू जैन, जयपुर

राजस्थान प्रदेश प्रवर्तन कार्यक्रम

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
१.	तिजारा	अलवर	२४	५	१४-६-९८
२.	किशनगढ़	अलवर	१३	१	१५-६-९८
३.	रामगढ़	अलवर	१	–	१६-६-९८
४.	फिरोजपुरझिरका	गुड़गावां (हरि.)	५६	–	१७-६-९८
५.	नौगांवा	अलवर	६५	३	१८-६-९८
६.	बड़ौदामेव	अलवर	४५	२	१९-६-९८
७.	गोविन्द गढ़	अलवर	३०	१	१९-६-९८
८.	अलवर	अलवर	१०००	१६	२०-६-९८
९.	राजगढ़	अलवर	२८	३	२१-६-९८
१०.	रैणी	अलवर	८	१	२१-६-९८
११.	गढ़ी सवाईराम	अलवर	१०	१	२२-६-९८
१२.	हरसाणा	अलवर	३०	१	२२-६-९८
१३.	लक्ष्मणगढ़	अलवर	२५	१	२३-६-९८
१४.	कठूमर	अलवर	३८	२	२३-६-९८
१५.	खेरली	अलवर	६०	२	२४-६-९८
१६.	सीकरी	भरतपुर	३५	१	२५-६-९८
१७.	पहाड़ी	भरतपुर	१२	१	२६-६-९८
१८.	जुरहरा	भरतपुर	५०	१	२७-६-९८
१९.	कॉमा	भरतपुर	८०	४	२८-६-९८
२०.	डींग	भरतपुर	८०	३	२९-६-९८
२१.	कुम्हेर	भरतपुर	३६	२	३०-६-९८
२२.	भरतपुर	भरतपुर	१००	३	०१-७-९८
२३.	बयाना	भरतपुर	४०	३	०२-७-९८
२४.	मनिया	धौलपुर	७५	२	०३-७-९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
२५.	राजाखेड़ा	धौलपुर	२१२	४	०४-७-९८
२६.	धौलपुर	धौलपुर	९५	१	०५-७-९८
२७.	करोली	करोली	–	–	०६-७-९८
२८.	हिण्डौन	करोली	–	–	०७-७-९८
२९.	श्री महावीर जी	करोली	–	–	०८-७-९८
३०.	गंगापुर सिटी	सवाईमाधोपुर	४५	२	०९-७-९८
३१.	सवाईमाधोपुर	सवाईमाधोपुर	१६०	१३	१०-७-९८
३२.	बोली	सवाईमाधोपुर	२१	२	११-७-९८
३३.	लालसोंठ	दौसा	४०	३	१२-७-९८
३४.	छारेड़ा	दौसा	–	–	१२-७-९८
३५.	दौसा	दौसा	७०	४	१३-७-९८
३६.	सिकन्दरा	दौसा	१५	१	१४-७-९८
३७.	बांदीकुई	दौसा	२८	१	१५-७-९८
३८.	लवाड	जयपुर	–	–	१६-७-९८
३९.	तुंगा	जयपुर	–	–	१६-७-९८
४०.	बस्सी	जयपुर	१२	२	१७-७-९८
४१.	जयपुर	जयपुर	९००	–	१९-७-९८
४२.	जयपुर	जयपुर	३००	१	२०-७-९८
४३.	जयपुर	जयपुर	२५०	१	२१-७-९८
४४.	जयपुर	जयपुर	१०००	५	२२-७-९८
४५.	जयपुर	जयपुर	१७५	१	२३-७-९८
४६.	जयपुर	जयपुर	–	–	२४-७-९८
४७.	सांगानेर	जयपुर	–	–	२५-७-९८
४८.	पदमपुरा	जयपुर	–	–	२६-७-९८
४९.	चाकसू	जयपुर	४९	६	२७-७-९८
५०.	माधोराजपुरा	जयपुर	५०	४	२८-७-९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
५१.	फागी	जयपुर	४०	–	२९–७–९८
५२.	रैनवालमाँजी	जयपुर	३०	३	३०–७–९८
५३.	चकवाडा	जयपुर	६	२	३०–७–९८
५४.	चौरू	जयपुर	२५	३	३१–७–९८
५५.	झाग	जयपुर	११	१	३१–७–९८
५६.	मोजमाबाद	जयपुर	३८	३	०१–८–९८
५७.	दूदू	जयपुर	५५	३	०२–८–९८
५८.	नरेना	जयपुर	२८	२	०३–८–९८
५९.	सांभर	जयपुर	५०	४	०४–८–९८
६०.	फुलेरा	जयपुर	६०	३	०६–८–९८
६१.	जोबनेर	जयपुर	६०	५	०६–८–९८
६२.	मंड़ाभीम सिंह	जयपुर	–	१	०७–८–९८
६३.	चौमू	जयपुर	–	–	०९–८–९८
६४.	कालाडेरा	जयपुर	–	–	१०–८–९८
६५.	रैनवाल (किशनगढ़)	जयपुर	–	–	११–८–९८
६६.	खाचरियावास	सीकर	३०	१	१२–८–९८
६७.	पचार	सीकर	१५	२	१३–८–९८
६८.	बाय	सीकर	१४	१	१४–८–९८
६९.	दांतारामगढ़	सीकर	४०	२	१५–८–९८
७०.	मुण्डवाड़ा	सीकर	१०	१	१६–८–९८
७१.	सुरेरा	सीकर	११	१	१७–८–९८
७२.	दूजोद	सीकर	८	२	१८–८–९८
७३.	सीकर	सीकर	३५०	१०	१९–८–९८
७४.	धोता	सीकर	२५	१	२०–८–९८
७५.	फतेहपुरशेखावाटी	सीकर	५०	२	२१–८–९८
७६.	रानोली	सीकर	४५	३	९–९–९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
७७.	कोछोर	सीकर	१५	२	१०–९–९८
७८.	चूरू	चुरू	४५	१	११–९–९८
७९.	विसाऊ	झुन्झून	४	१	१२–९–९८
८०.	सुजानगढ़	चूरू	१५०	३	१३–९–९८
८१.	लाड़नू	नागौर	१५०	१०	१४–९–९८
८२.	डेह	नागौर	५०	४	१५–९–९८
८३.	मेड़ता रोड	नागौर	१५	१	१६–९–९८
८४.	मेड़तासिटी	नागौर	४५	१	१७–९–९८
८५.	रैन	नागौर	८	१	१८–९–९८
८६.	मूंडवा	नागौर	३	१	१९–९–९८
८७.	नागौर	नागौर	३००	२	२०–९–९८
८८.	कुचामन सिटी	नागौर	१७५	७	२१–९–९८
८९.	मिठरी	नागौर	१५	१	२२–९–९८
९०.	नांवासिटी	नागौर	६०	३	२३–९–९८
९१.	लूणवा	नागौर	–	–	२४–९–९८
९२.	मारोठ	नागौर	–	–	२५–९–९८
९३.	पांचवां	नागौर	१७	२	२६–९–९८
९४.	कुकनवाली	नागौर	६०	१	२६–९–९८
९५.	रूपनगढ़	नागौर	२०	२	२७–९–९८
९६.	नसीराबाद	अजमेर	८०	६	२८–९–९८
९७.	सरवाड	अजमेर	२५	१	२९–९–९८
९८.	केकड़ी	अजमेर	–	–	३०–९–९८
९९.	बघेरा	अजमेर	–	–	१–१०–९८
१००.	जूनिया	अजमेर	४०	२	१–१०–९८
१०१.	सावर	अजमेर	५०	५	२–१०–९८
१०२.	मेहरूकलां	अजमेर	३५	१	२–१०–९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
१०३.	जेठाना	अजमेर	११	१	७–१०–९८
१०४.	पीसांगना	अजमेर	२०	१	८–१०–९८
१०५.	ब्यावर	अजमेर	२२५	६	९–१०–९८
१०६.	अजमेर	अजमेर	२०००	–	१०–१०–९८
१०७.	छोटा लाम्बा	अजमेर	२०	१	११–१०–९८
१०८.	मदनगंज किशनगढ़	अजमेर	२५०	–	१२–१०–९८
१०९.	लाम्बाहरिसिंह	अजमेर	५	१	१३–१०–९८
११०.	मालपुरा	अजमेर	२२५	५	१३–१०–९८
१११.	पचेवर	अजमेर	४०	२	१४–१०–९८
११२.	डिग्गी	अजमेर	२०	१	१५–१०–९८
११३.	लावा	अजमेर	५०	३	१६–१०–९८
११४.	झिराना	अजमेर	१५	१	१६–१०–९८
११५.	बगड़ी	अजमेर	२०	२	२२–१०–९८
११६.	टोडाराय सिंह	अजमेर	१५०	६	२३–१०–९८
११७.	झिलाई	अजमेर	२५	२	२४–१०–९८
११८.	निवाई	अजमेर	२५०	७	२५–१०–९८
११९.	पीपलू	अजमेर	४०	१	२६–१०–९८
१२०.	टोंक	टोंक	५००	८	२७–१०–९८
१२१.	नगरफोर्ट	टोंक	३०	२	२८–१०–९८
१२२.	काकोड़	टोंक	१५	३	२८–१०–९८
१२३.	बनेठा	टोंक	३०	५	२९–१०–९८
१२४.	सूथड़ा	टोंक	१५	२	२९–१०–९८
१२५.	उनियारा	टोंक	६०	५	३०–१०–९८
१२६.	चौथ का बरवाड़ा	सवाई माधोपुर	८०	२	३०–१०–९८
१२७.	अलीगढ़	टोंक	४०	२	३१–१०–९८
१२८.	पलाई	टोंक	११	२	३१–१०–९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
१२९.	नैनवां	बून्दी	२५०	९	०१–११–९८
१३०.	दुगारी	बून्दी	२८	२	०२–११–९८
१३१.	बांसी	बून्दी	२०	२	०२–११–९८
१३२.	देई	बून्दी	१२०	२	०२–११–९८
१३३.	खटकड़	बून्दी	३०	२	०३–११–९८
१३४.	लाखेरी	बून्दी	३५	३	०३–११–९८
१३५.	इन्द्रगढ़	बून्दी	–	–	०४–११–९८
१३६.	कापरेन	बून्दी	५१	४	०४–११–९८
१३७.	केशवराय पाटन	बून्दी	३५	१	०५–११–९८
१३८.	तालेड़ा	बून्दी	४०	१	०५–११–९८
१३९.	आलोद	बून्दी	४०	१	०६–११–९८
१४०.	हिण्डोली	बून्दी	३५	१	०६–११–९८
१४१.	देवली	बून्दी	२२०	२	०७–११–९८
१४२.	पेंच की बावड़ी	बून्दी	१३	१	०७–११–९८
१४३.	बूंदी	बून्दी	२५०	१४	०८–११–९८
१४४.	सीमल्या	कोटा	–	–	१०–११–९८
१४५.	सीसवाली	बांरा	८	१	१०–११–९८
१४६.	इटावा	बांरा	३८	२	११–११–९८
१४७.	अयाना	कोटा	१०	१	११–११–९८
१४८.	बांरा	बांरा	८०	५	१२–११–९८
१४९.	अटरू	बांरा	५	१	१२–११–९८
१५०.	छबड़ा	बांरा	२५	१	१३–११–९८
१५१.	छिपाबडोत	बांरा	२०	२	१४–११–९८
१५२.	अकलेरा	झालावाड़	३०	१	१५–११–९८
१५३.	चाँदखेड़ी (खानुपर)	झालावाड़	–	–	१५–११–९८
१५४.	सारोलाकलां	झालावाड़	३०	२	१६–११–९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
१५५.	झालावाड़	झालावाड़	–	–	१७–११–९८
१५६.	झालरापाटन	झालावाड़	१३०	५	१८–११–९८
१५७.	पीड़ावा	झालावाड़	२००	५	१९–११–९८
१५८.	सुसनेर	शाजापुर	१३०	४	२०–११–९८
१५९.	मिश्रोली	कोटा	१५	१	२१–११–९८
१६०.	भवानीमण्डी	कोटा	१०५	१	२१–११–९८
१६१.	रामगंज मण्डी	कोटा	१२५	२	२२–११–९८
१६२.	मोंडक	कोटा	५	१	२३–११–९८
१६३.	मण्डाना	कोटा	१५	१	२३–११–९८
१६४.	कनवास	कोटा	८	१	२४–११–९८
१६५.	सांगोद	कोटा	२१	३	२४–११–९८
१६६.	देवलीमांझी	कोटा	८	१	२६–११–९८
१६७.	खजूरी	कोटा	६	१	२६–११–९८
१६८.	अरण्डखेड़ा	कोटा	४	१	२७–११–९८
१६९.	बनियानी	कोटा	१७	१	२७–११–९८
१७०.	कैथून	कोटा	२५	२	२८–११–९८
१७१.	बोरांव	कोटा	२५	१	२९–११–९८
१७२.	रावतभाटा	कोटा	६५	१	३०–११–९८
१७३.	सिंगोली	नीमच	–	१	०१–१२–९८
१७४.	झातला	नीमच	१७	१	०२–१२–९८
१७५.	काकरियातलाई	नीमच	२६	१	०२–१२–९८
१७६.	चेची	चित्तौड़गढ़	–	–	०३–१२–९८
१७७.	ठुकराई	चित्तौड़गढ़	–	–	०४–१२–९८
१७८.	आरोली	भीलवाड़ा	१५	१	०४–१२–९८
१७९.	बिजौलिया	भीलवाड़ा	१००	३	०५–१२–९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
१८०.	कोटा	कोटा	१८००	३३	०६–१२–९८
१८१.	डाबी	बूंदी	३९	१	०८–१२–९८
१८२.	बेगूं	चित्तोड़गढ़	४५	२	०९–१२–९८
१८३.	माण्डलगढ़	भीलवाड़ा	१०	३	१०–१२–९८
१८४.	मानपुरा	भीलवाड़ा	१०	१	१०–१२–९८
१८५.	महुआ	भीलवाड़ा	६	१	११–१२–९८
१८६.	धामनियां	भीलवाड़ा	९	२	११–१२–९८
१८७.	अमरगढ़	भीलवाड़ा	७	१	१२–१२–९८
१८८.	चंवलेश्वर पार्श्वनाथ	भीलवाड़ा	–	–	१२–१२–९८
१८९.	आमल्दा	भीलवाड़ा	–	–	१३–१२–९८
१९०.	खजूरी	भीलवाड़ा	१५	१	१४–१२–९८
१९१.	जहाजपुर	भीलवाड़ा	४०	१	१५–१२–९८
१९२.	दूंनी	टोंक	३५	१	१६–१२–९८
१९३.	आंवा	टोंक	४७	३	१७–१२–९८
१९४.	राजमहल	टोंक	१८	२	१८–१२–९८
१९५.	पडेर	टोंक	११	१	१९–१२–९८
१९६.	पारोली	भीलवाड़ा	११	२	१९–१२–९८
१९७.	रोपा	भीलवाड़ा	३०	१	२०–१२–९८
१९८.	दानियों की कोटड़ी	भीलवाड़ा	२५	१	२१–१२–९८
१९९.	शाहपुरा	भीलवाड़ा	६०	५	२२–१२–९८
२००.	कोठीया	भीलवाड़ा	१५	१	२३–१२–९८
२०१.	गुलाबपुरा	भीलवाड़ा	४०	१	२४–१२–९८
२०२.	विजयनगर	अजमेर	६५	१	२५–१२–९८
२०३.	चापानेर	अजमेर	२७	१	२६–१२–९८
२०४.	भीलवाड़ा	भीलवाड़ा	८००	७	२७–१२–९८
२०५.	नीमाज	पाली	१२	२	२९–१२–९८

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
२०६.	आनन्दपुरकालू	पाली	३८	३	३०-१२-९८
२०७.	पाली	पाली	५०	२	३१-१२-९८
२०८.	जोधपुर	जोधपुर	२३५	४	०१-१-९९
२०९.	बीकानेर	बीकानेर	८५	२	०३-१-९९
२१०.	सिरोही	सिरोही	–	–	०५-१-९९
२११.	आबूरोड	सिरोही	७०	१	०६-१-९९
२१२.	चित्तौड़गढ़	चित्तौड़गढ़	७०	४	०८-१-९९
२१३.	निम्बाहेड़ा	चित्तोड़गढ़	२५	२	०९-१-९९
२१४.	उदयपुर	उदयपुर	२१००	११	१०-१-९९
२१५.	भिंडर	उदयपुर	५००	४	११-१-९९
२१६.	बाठरड़ाकला	उदयपुर	२०	१	१२-१-९९
२१७.	बली	उदयपुर	२५	१	१२-१-९९
२१८.	जगत	उदयपुर	१००	१	१३-१-९९
२१९.	अदवास	उदयपुर	५०	१	१४-१-९९
२२०.	जावद	उदयपुर	६०	२	१५-१-९९
२२१.	नईझर	उदयपुर	–	–	१५-१-९९
२२२.	उथरदा	उदयपुर	१००	२	१६-१-९९
२२३.	खरका	उदयपुर	६१	२	१६-१-९९
२२४.	गींगला	उदयपुर	१४५	२	१७-१-९९
२२५.	करावली	उदयपुर	५०	१	१८-१-९९
२२६.	बस्सी	उदयपुर	६०	३	१९-१-९९
२२७.	वीरपुरा	उदयपुर	५१	२	२०-१-९९
२२८.	देवपुरा	उदयपुर	१००	१	२१-१-९९
२२९.	झाड़ोल	उदयपुर	–	–	२२-१-९९
२३०.	सल्लाड़	उदयपुर	–	–	२३-१-९९

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
२३१.	केजड़	उदयपुर	८५	१	२४-१-९९
२३२.	चावण्ड	उदयपुर	१७५	१	२४-१-९९
२३३.	सराडा	उदयपुर	५०	१	२५-१-९९
२३४.	बड़गांव	उदयपुर	४४	१	२६-१-९९
२३५.	सेमारी	उदयपुर	१४५	२	२६-१-९९
२३६.	कल्याणपुर	उदयपुर	४०	१	२७-१-९९
२३७.	कुण्डा	उदयपुर	४०	१	२७-१-९९
२३८.	टोंकर	उदयपुर	९६	३	२८-१-९९
२३९.	रठौड़ा	उदयपुर	६५	१	२८-१-९९
२४०.	बड़ावली	उदयपुर	४१	१	२८-१-९९
२४१.	इण्टालीखेड़ा	उदयपुर	–	–	२९-१-९९
२४२.	डगार	उदयपुर	२५	१	३०-१-९९
२४३.	बामनिया	उदयपुर	२०	१	३१-१-९९
२४४.	सलूम्बर	उदयपुर	३०	४	३१-१-९९
२४५.	झलारा	उदयपुर	५०	१	०१-२-९९
२४६.	जैताना	उदयपुर	२०	१	०२-२-९९
२४७.	आसपुर	उदयपुर	७०	–	०२-२-९९
२४८.	शेषपुर	उदयपुर	२८	१	०२-२-९९
२४९.	मुंगेड	डूंगरपुर	३१	२	०३-२-९९
२५०.	साबला	डूंगरपुर	२००	१	०३-२-९९
२५१.	पालोदा	बांसवाड़ा	७०	१	०४-२-९९
२५२.	लोहारिया	बांसवाड़ा	१९०	२	०५-२-९९
२५३.	गनोड़ा	बांसवाड़ा	२५	२	०६-२-९९
२५४.	भीमपुर	बांसवाड़ा	३५	१	०६-२-९९
२५५.	चंदूजी का गढ़ा	बांसवाड़ा	२५	१	०७-२-९९
२५६.	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा	३५०	३	०७-२-९९

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
२५७.	खान्दू कालोनी	बांसवाड़ा	२००	१	०८-२-९९
२५८.	तलवाड़ा	बांसवाड़ा	१३०	१	०९-२-९९
२५९.	परतापुर	बांसवाड़ा	१५०	३	१०-२-९९
२६०.	गढ़ी	बांसवाड़ा	५५	२	११-२-९९
२६१.	खोडन	बांसवाड़ा	१०	१	१२-२-९९
२६२.	मेतवाला	बांसवाड़ा	१५	१	१२-२-९९
२६३.	बोरी	बांसवाड़ा	३०	२	१३-२-९९
२६४.	आंजना	बांसवाड़ा	५५	१	१३-२-९९
२६५.	अरथूना	बांसवाड़ा	८०	२	१४-२-९९
२६६.	डडूका	बांसवाड़ा	४५	१	१५-२-९९
२६७.	नौगामा	बांसवाड़ा	१७०	३	१५-२-९९
२६८.	बागीदौरा	बांसवाड़ा	२००	१	१६-२-९९
२६९.	कलिंजरा	बांसवाड़ा	६५	१	१७-२-९९
२७०.	बडोदिया	बांसवाड़ा	१०५	१	१७-२-९९
२७१.	कुशलगढ़	बांसवाड़ा	१५०	६	१८-२-९९
२७२.	पाटोल	बांसवाड़ा	४००	३	०७-३-९९
२७३.	खमेरा	बांसवाड़ा	४०	१	०८-३-९९
२७४.	नरवाली	बांसवाड़ा	८६	३	०८-३-९९
२७५.	पारसोला	उदयपुर	३००	५	०९-३-९९
२७६.	मुंगाना	उदयपुर	११०	२	०९-३-९९
२७७.	खून्ता	उदयपुर	४०	१	१०-३-९९
२७८.	धरियावद	उदयपुर	३००	४	१०-३-९९
२७९.	प्रतापगढ़	चित्तौड़	२००	७	११-३-९९
२८०.	निठउआ गामड़ी	डूंगरपुर	–	–	१२-३-९९
२८१.	रींछा	डूंगरपुर	२०	१	१२-३-९९

क्र.सं.	गांव	जिला	घर	मंदिर	दिनांक
२८२.	पादरडीबडी	डूंगरपुर	२२	१	१३-३-९९
२८३.	सरोदा	डूंगरपुर	३५	१	१३-३-९९
२८४.	सागवाडा	डूंगरपुर	३००	५	१४-३-९९
२८५.	गलियाकोटा कालोनी	डूंगरपुर	७०	३	१५-३-९९
२८६.	पांडवा	डूंगरपुर	१०५	२	१५-३-९९
२८७.	भीलूडा	डूंगरपुर	६५	१	१६-३-९९
२८८.	चितरी	डूंगरपुर	३०	१	१६-३-९९
२८९.	कुंआ	डूंगरपुर	३०	१	१७-३-९९
२९०.	पीठ	डूंगरपुर	४५	१	१७-३-९९
२९१.	ओबरी	डूंगरपुर	६६	३	१८-३-९९
२९२.	ठाकरड़ा	डूंगरपुर	२०	१	१८-३-९९
२९३.	आंतरा	डूंगरपुर	३२	१	१९-३-९९
२९४.	डूंगरपुर	डूंगरपुर	२५०	७	२०-३-९९
२९५.	थावा	डूंगरपुर	३५	१	२१-३-९९
२९६.	कनवा	डूंगरपुर	४३	३	२२-३-९९
२९७.	बिछीवाडा	डूंगरपुर	२५	२	२३-३-९९
२९८.	देवल	डूंगरपुर	४८	१	२४-३-९९
२९९.	खोखड़ा	उदयपुर	१००	२	२५-३-९९
३००.	छाणी	उदयपुर	६५	२	२६-३-९९
३०१.	नयागांव	उदयपुर	५०	१	२७-३-९९
३०२.	बावलवाडा	उदयपुर	५०	२	२८-३-९९
३०३.	फालासिया	उदयपुर	७५	१	२९-३-९९
३०४.	कोत्यारी	उदयपुर	४०	१	३०-३-९९
३०५.	खाखड़	उदयपुर	२०	१	३१-३-९९
३०६.	ओगना	उदयपुर	४०	२	०१-४-९९
३०७.	झाडोल	उदयपुर	६५	४	०२-४-९९
३०८.	केशरियाजी	उदयपुर	–	–	०४-४-९९

G G G G G

मध्यप्रदेश में समवसरण प्रवर्तन

मध्यप्रदेश प्रवर्तन का शुभारंभ नीमच से हुआ। समवसरण स्वागत सभा का आयोजन मांगलिक भवन में हुआ। सभाध्यक्ष श्री हुकुमचंद जैन इंदौर थे। मुख्य अतिथि श्री नंद किशोर जी पटेल विधायक तथा मंच संचालन श्री एस.के. जैन कर रहे थे। सभा का शुभारंभ डा. प्रकाश चंद जैन इंदौर के मंगलाचरण से हुआ। सभी आगन्तुक अतिथियों का स्वागत समाज के अध्यक्ष श्री जम्बूकुमार जैन ने अपने स्वागत भाषण के द्वारा किया। पं. जयसेन जैन इंदौर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह रथ पूरे भारत में धर्म का डंका बजा रहा है। डा. अनुपम जैन ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए जैन धर्म की वर्तमान परिस्थिति का ज्ञान कराया। समिति के अध्यक्ष ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जी ने रथयात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। माननीय विधायक जी ने अपने भाषण में कहा कि यह यात्रा एक आलौकिक देन है देश के लिए। तत्पश्चात् शोभा यात्रा प्रारंभ हुयी। इसी के साथ मध्यप्रदेश प्रवर्तन शुरू हो गया। जावद-नीमच-रामपुरा मंगसौर गरोठ होते हुए समवसरण मंदसौर पहुँचा। मंदसौर में समवसरण स्वागत सभा में मुख्य अतिथि श्री सुधीर कुमार जी लोढ़ा थे। उन्होंने कहा कि आज तक दिगम्बर या श्वेताम्बर समाज में ऐसी कोई नारी नहीं हुई है जिसने ज्ञानमती माताजी जी जैसा कार्य किया हो जिसने प्रशासन को भी चुनौती दे दी।

बड़नगर में आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। इंदौर से हुकुमचंद जी, पं. जयसेन जी, डा. प्रकाश चंद जी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में अजीत कुमार टोंग्या का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। रतलाम में समवसरण स्वागत के लिए श्री निर्मल कुमार जैन उपायुक्त बिक्रीकर विभाग, श्री राजेश जैन डिप्टी कलेक्टर पधारे। सारंगपुर में श्री कृष्ण मोहन मालवीय विधायक ने रथ का स्वागत किया। कालापीपल ग्राम में समवसरण स्वागत के लिए श्री धनश्याम दास मार्ग सत्यसाई संघ के अध्यक्ष व श्री धनश्यामदास शर्मा उपसरपंच ग्राम पधारे। आष्टानगर में श्री रमेश कुमार जी ने समवसरण सभा के

मध्य आकर अपना सौभाग्य माना।

राजापुर में समवसरण रथ का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। उज्जैन नगर में फ्रीगंज मंदिर में स्वागत सभा का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्रीमती प्रीति भार्गव जी विधायिका थीं। केन्द्रीय व प्रांतीय समिति के कार्यकर्ताओं ने सभाओं में भाग लिया। इंदौर में आये श्री कैलाश चंद जी वैद्य ने इंदौर कार्यक्रम में सभी को आमंत्रित किया। सभाध्यक्ष ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन अध्यक्ष श्रीविहार समिति थे।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के सानिध्य में समवसरण की स्वागत सभा-

नेमावर सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र पर ससंघ आचार्य श्री विराजमान थे। रथ पूर्व संध्या पर पहुँचा। आचार्य श्री से हम लोगों ने निवेदन किया रथ के दर्शनों के लिए। १२८ पिच्छी के साथ आचार्य श्री रथ के समक्ष आये एवं पौन घंटे तक समवसरण रचना का अवलोकन किया। बड़ी भक्ति से दर्शन कर हम सभी लोगों को आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य श्री से भाई जी (रवीन्द्र कुमार) की काफी चर्चा हुई। प्रांतीय समिति से हुकुमचंद जी, डा. अनुपम जैन, प्रकाश चंद जैन सनावद, अनिल जैन प्रीत विहार, कैलाशचंद जैन करोलबाग आदि गणमान्य महानुभाव पधारे।

खण्डवा में घासपुरा मंदिर के बाहर मेनरोड पर स्वागत सभा हुई। राज म्यूजिकल ग्रुप द्वारा संगीत संध्या हुई। मुख्य अतिथि श्री नंद कुमार जी चौहान सांसद खण्डवा थे। शोभायात्रा बहुत भव्य व विशाल निकली। सभी जैनियों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। समवसरण समाज के लिए एक विशेष उपलब्धि थी।

सनावद नगरी में अभूतपूर्व स्वागत-

सनावद नगरी में समवसरण के स्वागत की तैयारियां जोरों पर थी। एक दिन पहले ही पिछले ग्राम में दो व्यक्ति आ गये। उन्होंने बताया कि वे रथ को लेने आये हैं। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर स्वागत सभा हुई। जैन धर्मशाला में अच्छा मंच बना हुआ था। सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत हुआ। मंच संचालन नरेन्द्र भारती जी कर रहे थे। प्रकाशचंद जी ने अपने स्वागत भाषण के द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि श्री जगदीश मोराडिया विधायक थे। केन्द्रीय समिति

के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा रथयात्रा के उद्देश्यों को बताया। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण द्वारा हुआ। अत्यधिक उत्साह था। ऐसा लग रहा था जैसे हमारे घर का ही कार्यक्रम हो सभी लोगों में इतनी अधिक आत्मीयता थी, अपनापन था कि मालूम नहीं दे रहा था कि कार्यक्रम सामाजिक है। यह स्थान पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी की जन्मभूमि है। यहां से ९ मुनि हो चुके हैं। प्रातः काल शोभायात्रा प्रारंभ हुई। जगह-जगह गेट बने हुए थे। हर घर की छत से पुष्पवृष्टि हो रही थी। फल एवं मिष्ठान का वितरण हो रहा था। खूब स्वागत हुआ शोभायात्रा मार्ग में सैकड़ों जगह आरती हुई। हर दृष्टि से अभूतपूर्व कार्य था। पूरे प्रदेश में यह कार्यक्रम एक अनूठी मिशाल थी। मध्यान्ह में रथ के साथ आये लोगों का स्वागत श्री प्रकाश चंद जी (महामंत्री श्रीविहार प्रदेश समिति) ने अपने घर पर वस्त्र भेंट करके किया। शाम को रथ बेड़िया के लिए प्रस्थान कर गया। स्वागत सभा मंदिर जी में हुई। सभाध्यक्ष श्री मगनलाल जैन व मुख्यअतिथि डा. श्री एस.के. घनोते थे।

पीपलगौन, कसरावद, बालसमन्द होते हुए रथ धर्मपुरी पहुँचा। धर्मपुरी में पहले लोग असमंजस में थे कि रथ बुलायें या नहीं। लेकिन समवसरण किसी के बुलाने से आता नहीं किसी के रोकने से रुकता नहीं। शाम को पहुँचे। पहुँचते ही भव्य स्वागत हुआ। शानदार शोभायात्रा निकली। यहां से धामनोद, मंडलेश्वर होता हुआ समवसरण महेश्वर पहुँचा।

महेश्वर वालों ने पूर्व से ही तैयारियां की हुई थीं। प्रातः धर्मशाला में स्वागत सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री शिवपाल जी भरतलाल जी सोनी थे। मुख्य अतिथि श्री प्रकाशचंद जैन सनावद व सुधीर जैन सनावद थे। बलवंत राव मण्लोई जी ने सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात् प्रकाश चंद जी ने प्रवर्तन संबंधी जानकारी प्रदान की। पं. सुधर्म चंद शास्त्री ने बोलियाँ सम्पन्न करायीं। शोभायात्रा अति सुन्दर निकली जगह-जगह नृत्य एवं गर्बा हो रहा था। सभी लोगों ने बड़े हर्ष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया। गुजरी होते हुए हम इंदौर पहुँच गये।

सभी लोगों की निगाहें जिस कार्यक्रम पर टिकी थीं अब उसका नम्बर था।

इंदौर शहर सरसेठ हुकमचंद जैन के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त मुनिभक्तों का स्थान है। यहां पर जैन समाज की आबादी ४० हजार से अधिक है। सरसेठ हुकमचंद जैन के द्वारा निर्माण कराया गया कांच का मंदिर आज भी जैन संस्कृति की धरोहर है। नव निर्माण में प्रसिद्ध समाज सेवी श्री बाबूलाल पाटोदी द्वारा निर्माण कराया हुआ गोम्मट गिरि दर्शनीय स्थल बन गया। इसके अलावा शैक्षणिक गतिविधियों के अंतर्गत माननीय श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल के नेतृत्व में कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ की स्थापना एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है। इसके मंत्री डा. अनुपम जैन की सेवाओं ने इस संस्था में चारचांद लगा दिये हैं।

इंदौर में समवसरण श्री विहार के स्वागत में जैन समाज इंदौर द्वारा भव्य तैयारियां की गयीं। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर सुदामा नगर जैन समाज द्वारा रथ का स्वागत एवं आरती हुई। तत्पश्चात् शांतिनाथ मांगलिक भवन में स्वागत सभा हुई। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जम्बूद्वीप हस्तिनापुर कमलचंद जैन खारी बावली, प्रेमचंद खारी बावली दिल्ली तथा कोषाध्यक्ष श्री मनोज जैन, हस्तिनापुर मेरठ से पधारे जिनका जैन समाज इंदौर की ओर से शाल श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। रात्रि सभा में आदरणीय श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल, श्री प्रदीप जैन-कासलीवाल (अध्यक्ष महासमिति) माणिकचंद पाटनी (महामंत्री-दि. जैन महासमिति) श्री हुकमचंद जैन (अध्यक्ष मध्यप्रदेश श्री विहार समिति) पं. जयसेन जी व हंसमुख गांधी आदि उपस्थित थे। सनावद से श्री इंदर चंद चौधरी, कैलाशचंद चौधरी श्री प्रकाश चंद जैन (महामंत्री म.प्र. समिति) एवं. श्री सौभाग्यमल जैन, श्री सुधीर जैन, श्री योगेश जैन आदि महानुभाव सम्मिलित हुए जिनका जैन समाज इंदौर द्वारा स्वागत सत्कार किया गया।

इस शुभ अवसर पर समाज के वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध विद्वान पं. श्री नाथूलाल जी शास्त्री ने भगवान ऋषभदेव के समवसरण श्री विहार योजना की तहे दिल से प्रशंसा करते हुए पूज्य ज्ञानमती माताजी के द्वारा प्रवर्तित इस आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आपने कहा कि पूज्य माताजी की सशक्त लेखनी हम सभी विद्वानों

का मार्गदर्शन कर रही है तथा पूज्य माताजी के समक्ष हम सभी विद्वान नतमस्तक हैं। समवसरण श्री विहार के केन्द्रीय प्रचार मंत्री डा. अनुपम जैन ने अतिथियों का परिचय दिया। श्रीमती सुमन जैन (महामंत्री अखिल भारतीय दि. जैन महिला संगठन) ने विस्तृत जानकारी दी।

१६-५-९९ रविवार को प्रातः ८ बजे वैष्णव महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में उपाध्याय श्री निजानंद सागर जी महाराज एवं पूज्य एलाचार्य श्री नेमीसागर जी महाराज के सानिध्य में विशाल धर्मसभा हुई जिसमें इंदौर के महापौर श्री मधुकर वर्मा जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। आपने समवसरण का स्वागत करते हुए कहा कि हम सभी का यह सौभाग्य है कि इस रथ के दर्शन हमें इंदौर में हो रहे हैं। हम इंदौर की समस्त जनता की ओर से इस रथ का सम्मान करते हैं। जैन समाज इंदौर की ओर से महापौर जी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर जैन समाज के अग्रणी नेता श्री बाबूलाल जी पाटोदी ने एक विस्तृत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए पूज्य माताजी द्वारा प्रवर्तित समवसरण श्रीविहार योजना को एक महत्वपूर्ण आयोजन बताया। आपने कहा कि समाज में किसी पुरुष ने आज तक इतना कार्य नहीं किया है। जितना कार्य पूज्य ज्ञानमती माताजी एक महिला होकर कर रही हैं।

रात्रि एवं प्रातः दोनों सभाओं का संचालन इंदौर समाज के महामंत्री श्री कैलाशवेद ने किया। समाज के अध्यक्ष श्री हीरालालजी झांझरी एवं कमेटी के संयोजक व कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम करके समवरण श्रीविहार का भव्य स्वागत कार्यक्रम सम्पन्न किया।

सारे जुलूस में अत्यधिक गर्मी के बावजूद हजारों लोग एवं इंदौर के समस्त महिला संगठन का काफी योगदान रहा। शोभायात्रा का कई जगह स्वागत हुआ। जगह-जगह फल एवं मीठा वितरण हो रहा था। दोनों रथों को फूलों से सजाया गया। शोभायात्रा मांगलिक भवन पहुँच कर सभा में परिणत हो गयी। यहाँ पर पू. उपाध्याय श्री निजानंद सागर जी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि पूज्य ज्ञानमती माताजी ऐसे ही बड़े-बड़े आयोजन कराके जैन समाज को नयी-नयी

दिशा प्रदान करती रहती हैं ऐलाचार्य श्री नेमीसागर जी महाराज एवं पू. आर्यिका श्री नंगमती माताजी ने भी प्रवचन द्वारा उपस्थित जन समुदाय को पुण्यलाभ प्रदान किया। अखिल भारतीय दि. जैन महिला संगठन इंदौर ईकाई की लगभग ४० संगठनों की महिलाओं ने कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता रखकर उत्साह प्रदर्शित किया।

धारनगर में समवसरण का स्वागत करने के लिए श्री रामनारायण धाकड़ एडवोकेट व श्री कृष्णलाल शर्मा वरिष्ठ पत्रकार पधारे। बेटमा में समवसरण धर्मसभा में मुख्य अतिथि के रूप में मो. शरीफ खान थे। समवसरण में जाति-पाति का कोई भेदभाव नहीं रहता यहाँ पर सभी को स्थान मिलता है और दर्शन करके सभी गदगद् हो जाते हैं। बीनागंज में स्वागत सभा में सभाध्यक्ष श्री द्वारकादास गर्ग (पू. विधायक) व मुख्य अतिथि श्री शिवनारायण मीणा विधायक थे। समवरण में आकर माननीय विधायक जी ने अपना सौभाग्य माना।

जामनेर, आवन, राधौगढ़, रूठयाई, बजरंगगढ़ होते हुए गुना पहुँचे। गुना नगर में समवरण आगमन पर लोगों ने प्रतिष्ठान बंद रखे। उत्साहपूर्वक कार्यक्रम किया। अशोक नगर में पूर्व से ही तैयारियां जोरों पर थी। धर्मपरायण नगरी ने समवसरण आगमन पर भावभीना स्वागत किया। सभा में अध्यक्षता श्री जयकुमार जैन अध्यक्ष नगर पालिका परिषद कर रहे थे। मुख्य अतिथि श्री नीलम सिंह यादव पू. विधायक व विशिष्ट अतिथि श्री रमेश नायक सदस्य म.प्र. कमेटी थे। शोभायात्रा अभूतपूर्व थी। जगह-जगह पर रथ की आरती व स्वागत हुआ शोभायात्रा मार्ग में मिष्ठान वितरण हुआ।

ईशागढ़, खतौरा, लुकवासा, बदखास, होते हुए कोलारस पहुँचे। एक किमी. पहले से ही बैण्ड बाजे के साथ समाज के लोग रथों को लेने आये थे। काफी उत्साहपूर्वक रथ की अगवानी की। समवसरण स्वागत सभा में मुख्य अतिथि श्री लाखन लाल खरे प्रो. शासकीय महाविद्यालय आये। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन जाति नहीं धर्म है, दर्शन है। विश्व में जितने भी धर्म हैं सभी का अपना महत्व है। जब मैंने जैन दर्शन के ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन किया तो पाया कि इसकी जड़ें अनेकांतमय हैं हम जैन के अलावा अन्य समाज को भी इसकी प्राचीनता

से अवगत करायें। भगवान आदिनाथ का समवसरण हमारी नगरी में आया हम सभी मिलकर स्वागत करें। सभी जैन लोगों ने कार्यक्रम सम्पन्न होने तक अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। इसके पश्चात् हम शिवपुरी प्रस्थान कर गये।

शिवपुरी वालों ने महिनों पहले से स्वागत की तैयारियाँ की थीं। पूरे शहर में बड़ी-बड़ी होलडिंग व बैनर एवं दैनिक पत्रों के माध्यम से अच्छा प्रचार किया गया था। ५ बजे शाम को चुंगी नाके से गणेशाश्रम स्कूल पहुँचे यहाँ पर प्रवेश पर ही बैडबाजे से रथ का स्वागत किया व आरती की। प्रवेश जुलूस में शरबत, गन्ने का रस आदि पेयजल की अच्छी व्यवस्था थी। रथ श्री महावीर जिनालय के बाहर रुका। वहीं आरती का कार्य हुआ। बड़ी भक्ति श्रद्धा से लोगों ने आरती की। काफी जनसमूह एकत्रित था। आरती के पश्चात् धर्मसभा का आयोजन छत्री मंदिर के विशाल प्रांगण में रखा गया। छत्री मंदिर में अति प्राचीन भगवान् पार्श्वनाथ की सौम्य मुद्रा वाली प्रतिमा विराजमान है जो कि ११वीं सदी की है। इस प्रतिमा को जंगल के मंदिर से लाकर विराजमान किया गया है।

सभा रात्रि ८ बजे शुरू हुई जो कि रात्रि ११ बजे तक चली। सभा की अध्यक्षता श्री कैलाशचंद जैन (पूर्व समाज अध्यक्ष) कर रहे थे। अपार जन समूह था। लगभग दो हजार व्यक्तियों की उपस्थिति थी। रथ के साथ आये विद्वानों ने रथ के संबंध में जानकारी प्रदान की। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण द्वारा हुआ। प्रातः ६ बजे महावीर जिनालय के बाहर पूजन हुयी। सैकड़ों व्यक्ति धोती-दुपट्ट पहन कर पूजन कर रहे थे। सैकड़ों लोग नृत्य कर रहे थे। हजारों जैन अजैन पूजन सुन रहे थे एक ऐसा दृश्य था जैसे समवसरण वास्तविक आते थे। यानी चतुर्थकालीन दृश्य की रचना थी। सामूहिक संगीतमयी पूजन हो रही थी। मन्द-मन्द जलवृष्टि से मेघकुमार जाति के देव समवसरण का स्वागत कर रहे थे।

७.३० बजे माननीय मुख्यअतिथि श्री आर.एस. वीणा (पुलिस अ.) द्वारा दीप प्रज्जवलन करके आरती हुई। शोभायात्रा प्रारंभ हो गयी। इतनी भव्य शोभायात्रा थी कि शिवपुरी के इतिहास में ऐसा जुलूस कभी नहीं निकला। जगह-जगह आरती एवं स्वागत हो रहा था। खूब फूल बरसाये। मार्गों पर कहीं

पैर रखने की जगह नहीं थी। इतना शानदार जुलूस था कि जितना वर्णन किया जाये कम है। ४ किमी. लम्बा जुलूस था। बच्चे ध्वजाएं लेकर चल रहे थे। महिलाएं गर्वा नृत्य कर रही थीं। नवयुवक मंडल वाले डाड़ियां खेल रहे थे। उत्साह बहुत अच्छा था। पूरे कार्यक्रम को व्यवस्थित बनाने में एवं सफलता पूर्वक कराने में श्री सुरेश जैन मारौरा का विशेष सहयोग रहा। यहाँ से सेसई दर्शन के लिए गये। यहाँ पर १० वीं शताब्दी की ९ गज की भगवान शांतिनाथ की मनोज्ञ व अतिशय युक्त प्राचीन खड्गासन प्रतिमा विराजमान है इस तीर्थ का विकास शिवपुरी जैन समाज के द्वारा किया जा रहा है। नगर में रात्रि में ही धर्म सभा हुई। प्रातः शोभायात्रा निकली जो सभा में परिणत हो गयी। समवसरण का स्वागत करने के लिए लक्ष्मी नारायण गुप्ता जिला पंचायत अध्यक्ष पधारे। यहाँ से रथ मगरौनी होते हुए करेरा पहुँचा।

करैरा में जगह-जगह स्वागत बैनर लगे हुए थे। उत्साह अधिक था। सभा प्रातः ९ बजे पुरानी तहसील के प्रांगण में हुई जो कि मेन मार्केट में ही थी। विशाल पंडाल बना हुआ था। जैन जैनेतर सभी लोग उत्साह के साथ पांडाल में उपस्थित थे। सभाध्यक्ष श्री टी.के. विद्यार्थी एवं मुख्य अतिथि श्री पी.डी. मारन अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश थे। इसके साथ ही शिवपुरी से बसंत कुमार बाबूलाल जी मास्टर आदि गणमान्य महानुभाव पधारे। डा. शिखर चंद जी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हम सभी लोग सोये थे। आज भगवान ऋषभदेव का संदेश लेकर यह समवसरण यहाँ आया है। पूज्य ज्ञानमती माताजी ने हम पर यह उपकार किया है। इसके लिए सारी समाज सदैव ऋणी रहेगी। माननीय एस.डी.ओ. साहब ने अपने वक्तव्य में कहा कि यहाँ आकर सिर्फ मेरा सम्मान ही नहीं बढ़ा अपितु मेरे अन्दर धर्म की ज्योति जली है। माननीय न्यायाधीश महोदय ने कहा कि न्यायालय के प्रांगण में मैं रोज सिर्फ बुराईयों को देखता हूँ। आज धर्म सभा में आकर बड़ी शांति मिली है। यह स्थान समवसरण आने से पवित्र हो गया। शोभायात्रा बड़ी धूम से सारे शहर में निकली। खूब प्रसाद एवं पुस्तकों का वितरण हुआ। धन कुबेर के द्वारा रत्न बांटे जा रहे थे।

भौतीनगरवासी पलक पांवड़े बिछाये गांव से पूर्व रथ का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। बैण्ड बाजे की मधुर ध्वनि द्वारा रथ का स्वागत किया गया। समाज छोटा होने के बावजूद भी कार्यक्रम सुंदर किया। सिरसौद, मारौरा, परीक्षा होते हुए पोहरी पहुँचे यहाँ पर मेनरोड पर ही पाण्डाल बना रखा था। उत्साहपूर्वक कार्यक्रम किया। जुलूस का प्रारंभ करने के लिए तहसीलदार श्री टैगोर जी आये माननीय तहसीलदार जी ने दीप प्रज्जवलन कर आरती की एवं अपनी शुभकामना प्रेषित की।

श्योपुरकलाँ ११ जून को शाम ५ बजे पहुँचे। पहुँचते ही समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने माल्यार्पण कर रथ का स्वागत किया। १२ जून को प्रातः ८ बजे सभा मेन बाजार में बने पांडाल में हुई। सभाध्यक्ष श्री गुलाब सिंह जी पूर्व विधायक एवं मुख्य अतिथि कमिश्नर चम्बल डिवीजन, श्री पुखराज जी मारू जिला कले. श्री के.आर. मागोदिया थे। मंच संचालन श्री सुरेश जैन एडवोकेट कर रहे थे। शोभायात्रा का शुभारंभ होने से पूर्व कमिश्नर साहब एवं कलेक्टर साहब ने रथ पर स्वास्तिक बना कर श्रीफल चढ़ाकर श्रद्धा से नमन किया। शोभायात्रा मार्ग में पेयजल, फल, मीठा बँट रहा था। जगह-जगह स्वागत बैनर लगे थे। जगह-जगह पुष्पवृष्टि हो रही थी। यहाँ से मोहना ग्वालियर होते हुए मुरैना पहुँचे।

मुरैना में बड़ा मंदिर के प्रांगण में रात्रि में सभा हुई। सभा की अध्यक्षता श्री पं. सुमति चंद शास्त्री ने करी। पं. जी ने रथ के प्रति आभार व्यक्त किया। शोभायात्रा में श्री मुंशीलाल खटिक ने आरती करी जो कि यहाँ के विधायक हैं। जौरा, पोरसा, अम्बाह, गोरमी होते हुए भिण्ड पहुँचे।

भिण्ड में आचार्य श्री विराग सागर जी ससंघ विराजमान थे। प्रातः ७ बजे बताशा बाजार स्थित जैन मंदिर में सभा हुई। मुख्य अतिथि श्री ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर) व पं. सुमति चंद शास्त्री थे। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण द्वारा हुआ। तत्पश्चात् पं. प्रवीण चंद शास्त्री ने समवसरण के बारे में जानकारी प्रदान की। इसी कड़ी में ब्र. रवीन्द्र जी ने प्रदेश प्रवर्तन की सम्पूर्ण जानकारी समाज को प्रदान की। तत्पश्चात् आचार्य श्री ने समवसरण श्रीविहार के लिए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यश्री ने रथ के दर्शन किए व

शोभायात्रा प्रारंभ हो गयी। मेहगांव, फूप, गोहर चौराहा, गोहद, मालनपुर, मुरार, थाटीपुर, डबरा होते हुए सोनागिर पहुँचे।

अतिशय क्षेत्र सोनागिर में वातावरण बहुत सुंदर था। हम सभी लोगों ने पहाड़ की वंदना की। मध्यान्ह में बीसपंथी कोठी के बाहर सभा हुई। सभा में आचार्य श्री पार्श्वसागर जी, आ. श्री अजितसागर जी, आ. कल्प कल्याणसागर जी व अन्य साधुगण विराजमान थे। नंग-अनंग कुमार की भूमि पर समवसरण की शोभायात्रा निकली। यहाँ पर चंद्रा प्रभु भगवान का समवसरण १६ बार आया ऐसा शास्त्रों में वर्णन है।

दतिया होते हुए समवसरण झांसी पहुँचा। किले वाले मैदान में समवसरण की स्वागत सभा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री वी.पी. मिश्रा जिलाधिकारी आये। सभाध्यक्ष श्री मोतीलाल जी सिंघई थे। मुख्य अतिथि जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संतों की साधना रंग लायेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि यह शांति यात्रा जो शांति की स्थापना के लिए चली है यह १००-५० किमी. जायेगी और कारगिल समस्या सुलझ जायेगी और ऐसा ही हुआ। सदर बाजार, होती हुई बबीना पहुँची।

बबीना में श्री विश्वकीर्ति जी महाराज ससंघ विराजमान थे। महाराज जी के सानिध्य में सभा हुई। श्री विश्वकीर्ति जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि जिस प्रकार से श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली की प्रतिमा एक आठवां आश्चर्य है उसी प्रकार से उत्तर भारत में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जम्बूद्वीप बनाकर एक आठवाँ आश्चर्य किया है। इसकी कोई दूसरी मिशाल नहीं सारे संसार में। यहां से पावागिर जी होते हुए तालवेहट पहुँचे। यहाँ पर आचार्य श्री विवेक सागर जी ससंघ विराजमान थे। सभा में आचार्य श्री का सानिध्य प्राप्त हुआ। पूरी शोभायात्रा में आचार्य श्री साथ-साथ चले। यहाँ समवसरण का विहार होकर हम सभी खनियाधाना पहुँचे। यहाँ पर उपाध्याय श्री विद्यासागर जी विराजमान थे। उपाध्याय श्री का सानिध्य सभा में एवं पूरी शोभायात्रा में प्राप्त हुआ।

यहाँ से चमरोआ, बड़ी मुहारी, नयाखेड़ा, गरेठा, जखोरा, सेरोन जी होते हुए लागौन पहुँचे। यहाँ पर मुनि श्री भव्य सागर जी, क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी महाराज

विराजमान थे। यहाँ से प्राणपुर होते हुए बामौरकलां पहुँचे। रात्रि में योगीन्द्र सागर पाठशाला में धर्मसभा हुई। इतना जनसमूह था कि पाठशाला में कहीं पैर रखने की जगह नहीं थी। शोभायात्रा अच्छी निकली। इसके पश्चात् समवरण चंदेरी जाना था। पर एक गांव बीच में छूट रहा था। वहां के लोगों ने बहुत जोर दिया कि जब सभी जगह रथ जा रहा है तो हमारे ग्राम में क्यों नहीं जाएगा। बहुत समझाया कि समय नहीं है पर कोई भी नहीं माना और समवसरण ले गये। अच्छा कार्यक्रम हुआ।

''भवि भागनवश जोगे वसाय''

भव्यों के भाग्य से ही समवसरण आता है। किसी के बुलाने से नहीं आता। जिस ग्राम का सौभाग्य होगा उसे पुण्य मिल जाता है। एक बार की घटना है कि एक ग्राम में सभी ने तैयारी कर ली जगह-जगह गेट बन गये, कार्ड छप गये, सारी तैयारियाँ हो गयीं। पूरे गांव का न्योता था। पर मध्यान्ह में ही एक दुर्घटना हो गयी वे सभी आये और अफसोस करने लगे। तो कहने का तात्पर्य है कि समवसरण भाग्य से ही आता है। चंदेरी नगर में पूर्व संध्या पर रथ पहुँचा। रात्रि विश्राम चौबीसी धर्मशाला में हुआ। यहाँ पर ऐतिहासिक चौबीसी है। यह चौबीसी बहुत प्राचीन एवं भव्य है। बहुत ही आकर्षक चौबीसी है। प्रातः सभा हुई सभा में पू. क्षु. श्री विवेकानंद सागर जी महाराज विराजमान थे। शोभायात्रा मेन बाजार से प्रारंभ होकर खंदार गिरि तक गयी। खंदार गिरि अतिशय क्षेत्र है। यहाँ पर पुनः सभा हुई। यहाँ से सेहराई से मुंगावली गये।

मुंगावली में पुराना बाजार स्थित आदिनाथ जैन मंदिर के आगे बने भव्य पण्डाल में सभा हुई। सभा क्षु. विवेकानंद जी के सानिध्य में हुई। पूरा पंडाल खचाखच भरा हुआ था। ऐसी विशाल शोभा निकाली कि कहीं पैर रखने की जगह नहीं थी। सौ जगह लगभग रथ की आरती हुई। खूब स्वागत हुआ।

बहादुरपुर से भूबौन, पाली, नारहत, विरधा, ललितपुर पहुँचे। यहाँ पर क्षेत्रपाल जी की धर्मशाला में रुके। बुन्देलखण्ड की धर्मपरायण नगरी है। यहाँ पर जैनियों की जनसंख्या काफी है। मुनि श्री विश्वकीर्ति जी के सानिध्य में रथयात्रा निकली। ललितपुर का हृदय कहलाने वाला अटा मंदिर तक शोभायात्रा गयी। खूब

भक्ति पूर्वक लोगों ने आरती की। यहाँ से रथ बानपुर पहुँचा।

बानपुर में सभा खुले मैदान में हुई। मुख्य अतिथि शत्रुघ्न जी ठाकुर थे। शत्रुघ्न जी ने अपने भाषण में रथ की प्रशंसा करते हुए शाकाहार पर काफी बल दिया। यहाँ से गुढ़ा होते हुए रथ महरौनी पहुँचा। महरौनी में मुनि श्री विशद सागर जी, मुनि श्री विभवसागर जी, मुनि श्री विश्वशील सागर जी (संघस्थ श्री आ. विराग सागर जी) विराजमान थे। गंगा और जमुना का संगम जहाँ मिलता है वहाँ पर सरस्वती अपने आप ही आ जाती है। संतों का सानिध्य प्रायः बहुत कम मिलता है लेकिन जहाँ मिले वहाँ सोने पर सुहागा हो जाता है।

सैदपुर मध्यान्ह ३ बजे पहुँचे। रथ पहुँचते ही चारों तरफ से ग्रामवासियों ने रथ को घेर लिया। अपार जनसमूह रथ के पास एकत्र था। मैं सोचता हूँ कि जिस समय विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर का समवसरण आया था उस समय सभी नर-नारी राजगृही नगरी को खाली करके विपुलाचलपर्वत पर पहुँच गये थे। शायद ऐसा ही दृश्य रहा होगा।

साढूमल, मंडावरा, कुम्हैड़ी होते हुए समवसरण टीकमगढ़ पहुँचा। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर रथ का आगमन हुआ। सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने रथ की आगवानी बैंड बाजे से की। कार्यक्रम की तैयारी पूर्व से थी। उत्साह अच्छा था। प्रातः सभा दिगम्बर जैन धर्मशाला में हुई। सभा में उपस्थिति काफी अच्छी थी। सभा में मुनि श्री सुदर्शन सागर जी विराजमान थे। सभाध्यक्ष श्री गुलाबचंद धमासिया (अध्यक्ष जैन समाज) व मुख्य अतिथि श्री मगनलाल गोयल विधायक टीकमगढ़ थे। मंच संचालन इन्द्रजीत जैन कर रहे थे। मंच पर डा. कपूर चंद जी सकेरा (अध्यक्ष पपौरा अति. क्षेत्र) बाबूलाल जी सतभैया, प्रो. इन्द्रजीत जैन थे। ये सभी समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं। शोभायात्रा बहुत ही सुंदर निकली। जगह-जगह गेट व बैनर लगे। हजारों लोग रथ के आगे पीछे चल रहे थे। जगह-जगह मिष्ठान व पेयजल की व्यवस्था थी। लोग आरती सजा कर चौक पूर कर थाल लिए अपने हाथों में खड़े थे। यहाँ से ३ किमी. दूर पपौरा जी अतिशय क्षेत्र है। हम सभी लोग दर्शन के लिए गये।

यहाँ से मवई, मलना होते हुए खरगापुर पहुँचे। सभाध्यक्ष श्री प्रेमचंद जी प्राचार्य व मुख्य अतिथि श्री दिवान हरिहर सिंह जी निर्विरोध नगर पालिका अध्यक्ष थे। सभा अच्छी हुई। शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गयी।

दिगौड़ा, लिधौरा होते हुए रथ पृथ्वीपुर पहुँचा। यहाँ पर उत्साह अच्छा था। सभा प्रातः ८ बजे बड़े मंदिर जी के हाल में हुई। समवसरण रथ के स्वागत के लिए श्री ब्रजेन्द्र सिंह राठोर विधायक निवाड़ी क्षेत्र पधारे। मंगल आरती की बोली लेकर विधायक जी रथ पर बैठे और बहुत खुश हुए। कहने लगे कि मैं अनेक सभाओं में गया पर जो आनंद मुझे इस सभा में आया वह खुशी कभी नहीं हुई। यहाँ से रथ वरुआ नगर, निवाड़ी, रानीपुर, सत्कार होते हुए गुरसराय पहुँचा। नगर वालों ने उत्साहपूर्वक अगवानी की। बरसात का मौसम है। यहाँ पर १६ घंटे से बारिश हो रही थी। सभाध्यक्ष श्री कृष्ण चंद जी पालीवाल थे। मुख्य अतिथि जी ने अपने भाषण में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रशंसा करते हुए कहा कि माताजी ने ऐसे-ऐसे कार्य किये हैं कि यह समाज हमेशा उनका ऋणी रहेगा। यहाँ से रथ मऊरानीपुर होते हुए जतारा पहुँचा। यहाँ का मंदिर बहुत विशाल एवं सुन्दर है। सभा में पूज्य क्षुल्लिका श्री कीर्तिमती माताजी विराजमान थीं। शोभायात्रा बहुत ही सुन्दर निकली। स्थानीय विधायक सुनील नायक ने रथ की आरती कर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

हरपालपुर, नौगांवा, होते हुए रथ छतरपुर पहुँचा। सभा प्रातः धर्मशाला में हुई। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। पूरा सभा भवन खचा-खच भरा हुआ था। उसके बाद भी लोग बाहर खड़े हुए थे। सभा विधिवत प्रारंभ हुई। स्थानीय बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण हुआ। तत्पश्चात् मैंने अपने वक्तव्य में रथ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इसी शृंखला में श्रीमती डा. रमा जैन ने अपने भाषण में पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के जीवन पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् पं. सुधर्म चंद शास्त्री ने रथ की व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला। शोभायात्रा प्रारंभ हो गयी। बहुत लम्बा जुलूस निकला। ५० कलश लेकर महिलाएं आगे-आगे चल रही थीं। रथ का जगह-जगह स्वागत हो रहा था। पानी बरस रहा था। लेकिन फिर भी शोभायात्रा हो रही थी। यह आ. पुष्पदंत सागर जी की जन्मभूमि है। या यों कहिए कि पुष्प की धरा पर

ज्ञान का प्रचार, समवसरण के माध्यम से ऐसा भव्य स्वागत हुआ कि मन गदगद् हो गया। पूरी समाज का खूब सहयोग मिला। समाज के अध्यक्ष श्री सुमत चंद जैन हम ने लोगों का स्वागत शाल उढ़ा कर किया।

यहाँ से समवसरण लौड़ी, चंदला, राजनगर होते हुए खजुराहो पहुँचा। यह स्थान विश्व प्रसिद्ध है यहाँ पर मंदिर बहुत भव्य, प्राचीन एवं कलात्मक है। ऐसे कलात्मक मंदिर विश्व में कहीं भी नहीं हैं। सभा दि. जैन मंदिर में हुई। मुख्य अतिथि श्री गौतम एस.डी.एम. थे। खजुराहो उत्सव वर्ष चल रहा है। १००० वर्ष पूरे हो चुके हैं। उस उपलक्ष्य में मुझसे व पंडित जी से वृक्षारोपण करवाया गया।

यहाँ से वमीठा, डेरापहाड़ी, सटई, विजाधर, गुलगंज होते हुए द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र पहुँचे। यहाँ पर आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज ससंघ विराजमान हैं। आज हमारा जन्मदिन भी है। प्रातः सभी लोगों ने पहाड़ की वंदना की। मध्यान्ह में आचार्य श्री के पावन सानिध्य में सभा हुई। शोभायात्रा में थोड़ी दूर तक आ. श्री चले। पहाड़ पर ३८ मंदिर हैं। यहाँ से रथ बड़ामल हरा, भगवां, बड़ागांव, धुवारा होते हुए रामटोरिया पहुँचा।

रामटोरिया बहुत छोटा सा ग्राम है। मंदिर बहुत ही भव्य एवं विशाल है। भक्ति अत्यधिक थी। चाय, नाश्ता, खाना सभी की व्यवस्था बहुत सुंदर थी। सभी लोगों में इतना आदर सम्मान था कि जैसे पहले कभी रथ देखा ही न हो। बहुत अच्छा कार्यक्रम था।

यहाँ से बमनौरा कलां होते हुए शहगढ़ पहुँचे। यहाँ पर बड़ा बाजार में चौक पर स्वागत सभा का आयोजन हुआ। सभाध्यक्ष श्री देवड़िया रघुवर प्रसाद जैन व मुख्य अतिथि श्री खानसाहब नायक तहसीलदार व विशिष्ट अतिथि श्री पी.के. सिंह मुख्य नगर पालिका अधिकारी थे। श्री पी.के. सिंह ने जब वक्तव्य सुना तो मांसाहार का त्याग कर दिया। श्री सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा मैंने आज तक बहुत मांसाहार किया है मुझे पता नहीं था। आज इस सभा में आकर मैं धन्य हो गया। शोभायात्रा बहुत सुंदर निकली।

बकस्वाहा ग्राम में रथ पहुँचने पर रथ का स्वागत हुआ। १५ अगस्त स्वतंत्रता

दिवस का पावन पर्व था। बस स्टैण्ड पर पंडाल बना रखा था। मुख्य अतिथि श्री महेन्द्र कुमार जैन सी.ओ. बकस्वाहा थे। शोभायात्रा खूब भव्य निकली व रथ का स्वागत किया। यहाँ से रथ हीरापुर से दलपतपुर पहुँचा। दलपतपुर में सभा में श्री रघुनाथ सिंह सरपंच ग्राम पंचायत दलपत पुर थे। यहाँ से १० किमी. पर नैनागिरि क्षेत्र है। हम सभी लोग क्षेत्र पर दर्शन के लिए गये। पहाड़ पर दर्शन किए महाभगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा है। यहाँ पर भगवान पार्श्वनाथ का समवसरण आया था। समवसरण प्रस्थान करके कर्रापुर पहुँचा। आज भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। आज बरसात में ही शोभायात्रा निकली।

बड़ाबोलाई, पारसोरिया, सानोधा होते हुए पथरिया पहुँचे। चारों तरफ पानी ही पानी था मार्ग में चलने में बड़ी परेशानी रही। रात भर बारिश में खड़े रहे। प्रातः पथरिया ग्राम पहुँचे। समवसरण जहाँ जाता है मार्ग अपने-आप प्रशस्त हो जाता है। रात्रि में सड़क पर इतना पानी था कि लगता था कि तीन या चार दिन में रास्ता खुलेगा। यह स्थान आचार्य श्री विरागसागर जी की जन्मभूमि है। यहाँ पर कार्यक्रम अच्छा हुआ। यहाँ से गढ़ाकोटा, रहली से देवरीरथ पहुँचा।

देवरीनगर में स्वागत की तैयारी पूर्व से ही की थीं। जगह-जगह स्वागत बैनर लगे थे पूर्व से ही सारे नगर में सभी जैनियों ने अपने-अपने घरों के ऊपर केशरिया ध्वजाएं लगा रखी थी। सभाध्यक्ष पूरनचंद जी बजाज थे। शोभायात्रा बहुत सुन्दर निकली। मध्यान्ह में हम लोग बीना, बाराह अति. क्षेत्र पर दर्शन करने गये जो कि पास में ही था। यहाँ पर भगवान शांतिनाथ की सवा चौदह फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा है। बहुत प्राचीन मिट्टी की प्रतिमा है। बहुत मनोज्ञ प्रतिमा है। यहाँ से रथ महाराजपुर प्रस्थान कर गया।

पूर्व संध्या पर रथ नगर में पहुँचा। १ किमी. पूर्व से ही बैण्ड बाजे के साथ ग्राम वाले रथों के स्वागत के लिए आये थे। नगर प्रवेश से पूर्व समवसरण के आगे श्रीफल फोड़ कर स्वागत किया। अत्यधिक उत्साह के साथ नाचते गाते रथ को नगर प्रवेश कराया। प्रातः ८ बजे पूजन हुई। सैकड़ों लोग पूजन करने आये। सभा विशाल पाण्डाल में बड़े मैदान में हुई। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण से हुआ। सभाध्यक्ष श्री शिखर

चंद सोधिया व मुख्य अतिथि पूरन चंद बजाज थे। सभा के मध्य श्री पुरुषोत्तम टिकरिया सरपंच ने मांसाहार का त्याग किया। उपसरपंच श्री अनिल सोरिया ने सभी व्यसनों का त्याग किया। यहाँ पर अब तक सबसे अच्छी बोलियां हुई। यहाँ पर सभी की भावनाएं अच्छी थीं। सभी लोग कह रहे थे हमनें आपसे कुछ लिया है दिया नहीं है। यहाँ से रथ गौरझामर पहुँचा।

आज रक्षाबंधन का पावन पर्व है।गांव वालों ने समवसरण पर राखी बांधी। अच्छी सभा हुई। सभा में पं. प्रवीण चंद जी शास्त्री ने रक्षाबंधन की कथा सुनायी। रथ यात्रा अच्छी निकली। यहाँ से रथ टड़ा, केसली होते हुए सुखी पहुँचा। यहाँ पर पूज्य ऐलक श्री नम्रसागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। राजा बिलहरा होते हुए जैसी नगर समवसरण रथ पहुँचा। सभा प्रातः ८ बजे खुले मैदान में बने पाण्डाल में हुई। मुख्य अतिथि श्री सुधीर कुमार जी सी.ओ. थे। सभा का शुभारंभ स्थानीय बालिकाओं के मंगलाचरण से हुआ। माननीय सी.ओ. साहब ने रथ की प्रशंसा करते हुए उसे एक अमूल्य निधि बताया। यहाँ से समवसरण सिहोरा होते हुए राहतगढ़ पहुँचा। सभा की अध्यक्षता श्री बी.एस. परिहार अनुविभागीय अधिकारी कर रहे थे। पं. प्रवीण चंद जी शास्त्री ने रथ की व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला। माननीय परिहार साहब ने अपने वक्तव्य में जैन दर्शन पर विशेष बल दिया व कहा कि पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी देश व समाज पर महान उपकार कर रही हैं। शोभायात्रा में राजा श्रेयांस के द्वारा खूब प्रसाद का वितरण हुआ। यहाँ से रथ मालथोन, बरौदिया रजवास, बांदरी, नरयावली होते हुए जरुआखेड़ा पहुँचा। यहाँ पर समाज की तैयारी पूर्व से थी। मुनि श्री धवल सागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। यहाँ से खुटई, खिमलासा होते हुए बीना पहुँचे। सभा प्रातः इटावा बाजार स्थित दि. जैन मंदिर में हुई। सभा में क्षु. श्री निशंकसागर जी विराजमान थे। उन्होंने अपने प्रवचन में पू. माताजी द्वारा किये गये कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि यह रथ वास्तव में आज समवसरण का कार्य कर रहा है। जैसे चतुर्थकाल में समवसरण आता था ऐसे ही यह भी उसी की प्रतिकृति है। गांव-गांव में धर्म का संदेश दे रहा है।

बीना से मकरोनिया समवसरण का आगमन हुआ। तैयारियां सभी पूर्व से ही थीं। उत्साह बहुत अच्छा था। अंकुर कालोनी में खुले मैदान में पाण्डाल बना रखा था। दैनिक पत्रों के माध्यम से प्रचार काफी हुआ था। सभा स्थल पर अच्छी उपस्थिति थी। समवसरण स्वागत सभा में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री शिवकुमार श्रीवास्तव कुलपति सागर विश्वविद्यालय श्री एस.सी. जैन डिप्टी कलेक्टर व मुख्य चिकित्सा अधिकारी श्री डा. बमरोयां जी, प्रो. बी.के. जैन डीन,सागर वि वि, श्रीमती सुधा जैन स्थानीय विधायिका सहित वरिष्ठ एवं गणमान्य महानुभाव। कुलपति महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं समवसरण में आया यह मेरा सौभाग्य है। जैन धर्म की प्राचीनता पर लोग संदेह करते हैं इस बात का मुझे खेद है। जैन धर्म एक शाश्वत धर्म है। इसके सिद्धांत सर्वोदयी हैं। प्राणी मात्र के लिए हैं। सारे कार्यक्रम का संचालन संजीव सर्राफ ने किया। सभी वक्ताओं ने अपनी-अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

मध्यान्ह में रथ ढाना होते हुए सागर पहुँचा। सागर में रथ रात्रि में श्रीमान डालचंद जैन (पूर्व सांसद) की के बगीचे में खड़ा हुआ। प्रातः ८ बजे रथ मोराजी वर्णीभवन पहुँचा। यहाँ पर स्वागत सभा हुई। सभाध्यक्ष श्रीमंत सेठ डालचंद जी (पू. सांसद) थे। मुख्य अतिथि श्री शिवकुमार श्रीवास्तव कुलपति सागर विश्वविद्यालय थे। सभा में आर्यिका श्री सत्यमती जी एवं आर्यिका श्री सकलमती जी विराजमान थीं। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण द्वारा हुआ। तत्पश्चात् डा. अनुपम जैन इंदौर संयोजक मध्यप्रदेश समिति द्वारा जैन धर्म की प्राचीनता पर प्रकाश डाला गया। पं. सुधर्म चंद शास्त्री संचालक ने रथ की व्यवस्थाओं के बारे में बताया। इसी कड़ी में पूज्य आर्यिका सत्यमती जी के प्रवचन हुए। अपने प्रवचन में उन्होंने पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी को परम उपकारी मानते हुए कहा कि माताजी ने जो बीड़ा उठाया है यह एक सराहनीय कार्य है। मध्यान्ह में शोभायात्रा निकली बहुत विशाल शोभायात्रा थी। शोभायात्रा सागर के इतिहास में एक अनोखी शोभायात्रा थी। जगह-जगह बैनर लगे थे। मिष्ठान बँट रहा था। आर्यिका माताजी रथ के साथ-साथ चल रही थी। कटरा मंदिर पर पहुँचकर शोभायात्रा सभा में परिणत हो गयी।

यहाँ पर सर्वप्रथम डा. अनुपम जैन ने अपने उद्गार व्यक्त किए। संजीव सर्राफ ने सभी का धन्यवाद किया। अंत में दादा डालचंद जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पूज्य ज्ञानमती माताजी से हम विनम्र प्रार्थना करते हैं कि वे एक चौमासा सागर वालों को प्रदान करें। क्योंकि ऐसी महिला साध्वी न इतिहास में हुई थीं न होंगी। जम्बूद्वीप की रचना प्राणीमात्र को आज शांति का संदेश दे रही है। अंत में सारी समाज का अभिनंदन व आभार किया। मैंने भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार समिति व दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की ओर से सभी पदाधिकारियों व सागर की जनता को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में तन, मन, धन से सहयोग दिया। कार्यक्रम बहुत सुंदर हुआ। सागर अखिर सागर है कहाँ तक वर्णन किया जितना भी कहूँ कम है। यहाँ से बासां ग्राम में रथ पहुँचा रथ का स्वागत करने श्री हनुमान प्रसाद जी पाठक भूतपूर्व सरपंच पधारे।

दमोह नगर में आर्यिका श्री अकंपमती माताजी ससंघ विराजमान थीं उत्साह अच्छा था। पूज्य माताजी के प्रवचन हुए। सभा में मुख्य अतिथि श्री संतोष कुमार सिंघई (अध्यक्ष कुण्डलपुर क्षेत्र) थे।यहाँ से रथ बांदकपुर पहुँचा। पंडाल मेनरोड पर लगा हुआ था। सभा का शुभारंभ पं. अमृतलाल जी शास्त्री दमोह के मंगलाचरण द्वारा हुआ। मुख्य अतिथि श्री के.डी. वाजपेयी थे।

कुण्डलपुर में बड़े बाबा के चरणों में पहुँच गये। अत्यन्त सुरम्य स्थान है। बड़े बाबा की अतिशयकारी मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। हम सभी लोग पहाड़ पर दर्शन करने गये। यहाँ से रथ पटेरा ग्राम के लिए प्रस्थान कर गया। पटेरा में आर्यिका श्री प्रशान्तमती माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। अच्छा वातावरण था। सभा में उपस्थिति ठीक थी। पूज्य माताजी के सारगर्भित प्रवचन हुए। यहाँ से एक सत्र का समापन हो गया।

G G G G G

समवसरण स्वागत हेतु पधारे विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश—

नीमच — श्री नंद किशोर पटेल विधायक
रतलाम — श्री निर्मल कुमार जैन
उपायुक्त बिक्रीकर–राजेश जैन डिप्टी कलेक्टर
सारंगपुर — श्री कृष्ण मोहन मालवीय विधायक
कालापीपल — श्री धनश्याम दास शर्मा (उप सरपंच ग्राम पंचायत)
सुजालपुर सिटी — श्री नेमीचंद जैन (पूर्व विधायक)
आष्टा — श्री रमेश कुमार जी एस.डी.एम.
खंडवा — श्री नंदकुमार सिंह चौहान, सांसद
सनावद — श्री जगदीश मोराड़िया, विधायक
इंदौर — श्री मधुकर वर्मा महापौर
धार — श्री कृष्णलाल जी शर्मा वरिष्ठ पत्रकार
बीनागंज — श्री शिव नारायण मीणा विधायक
अशोकनगर — श्री जयकुमार जैन अध्यक्ष नगर महापालिका
— श्री नीलम सिंह यादव विधायक
— श्री रमेश कुमार नायक–सदस्य म.प्र. कांग्रेस कमेटी
कोलारस — श्री लखनलाल जी खरे प्रोफेसर शासकीय विद्यालय
नटवर — श्री लक्ष्मी नारायण गुप्ता जिला पंचायत अध्यक्ष
करैरा — श्री टी.के. विद्यार्थी (एस.डी.ओ.) पी.डी. मारन
अति.सत्र न्यायाधीश
श्योपुरकला — सरदार गुलाब सिंह पूर्व विधायक, श्री पुखराज मारू
आयुक्त चम्बल संविभाग आर.के.मागोदिया जिलाधीश
झांसी — श्री वी.पी. मिश्रा जिलाधिकारी झांसी
टीकमगढ़ — श्री मगनलाल गोयल विधायक
खरगापुर — श्री दीवान हरीहरसिंह जी नगर पालिका अध्यक्ष
पृथ्वीपुर — श्री विजेन्द्र सिंह राठौर विधायक निवाड़ी क्षेत्र

जतारा — श्री सुनील नायक विधायक
खजुराहा — श्री दीवान गौतम जी एस.डी.एम.
भगवाँ — डा. नारायण दास फौजदार
शाहगढ़ — खान साहब नायक तहसीलदार, श्री पी.के. सिंह
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
बकस्वाहा — श्री महेन्द्र कुमार जैन सी.ओ.
दलपतपुर — श्री रघुनाथ सिंह सरपंच
जैसीनगर — श्री सुधीर कुमार जी सी.ओ.
राहतगढ़ — श्री बी.एस. परिहार अनुविभागीय अधिकारी
बरौदिया — श्री सुरेश कुमार चौरसिया सरपंच
मकरोनिया — श्री शिवकुमार श्रीवास्तव कुलपति सागर विश्वविद्यालय,
— एस.पी. जैन डिप्टी कलेक्टर
— प्रो बिमल जैन डीन वि वि
— डा. बमरोयां जी मुख्य चिकित्सा अधिकारी
— श्रीमती सुधा जैन विधायिका
तिवरी — श्रीमती जयश्री बनर्जी सांसद
कटनी — महापौर
जबलपुर — श्री अनिल शर्मा भाजपा अध्यक्ष जबलपुर
पन्ना — सुश्री कुसुम मेहदेले विधायिका पन्ना क्षेत्र
दुर्ग — श्री ताराचंद जी साहू सांसद
राजनांदगांव — श्री एल.एस. बघेल कलेक्टर
डोगंरगांव — श्री धनेश पाटिला जी शासनमंत्री म.प्र.
देवरी — श्री तहसीलदार व एस.डी.एम. साहब
बालाघाट — श्री बी.के. व्यास कलेक्टर
सिवनी — श्री विनोद मराठे अति पुलिस अधीक्षक
— श्री मनोज कुमार पुगवा अति. कलेक्टर

केवलारी — श्री सुनील जैन एस.डी.ओ.पी.
— श्री संजय अलंक एस.डी.एम.
गाडखाड़ा — श्री राजीव शर्मा एस.डी.एम.
— श्रीमती साधना स्थापक विधायिका
चोरई — श्री महेरसिंह चौधरी विधायक
मुलताई — श्री वामनराव जी खडकर स्वतंत्रता सेनानी
होसंगाबाद — श्रीमती सविता दीवान शर्मा विधायिका
गंजबासोदा — श्री कंछेदी लाल जैन नगर पालिका अध्यक्ष
थांदला — श्री विधायक
गंधबानी — श्री ओमकार प्रसाद पाण्डेय सरपंच ग्राम पंचायत

साधुओं का सानिध्य प्राप्त मध्यप्रदेश में—

बड़नगर — आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी महाराज ससंघ
महिदपुर — आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी महाराज ससंघ
नेमावर — संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज ससंघ
भिण्ड — आचार्य विराग सागर जी ससंघ
सोनगिर — आचार्य पार्श्वसागर जी, आचार्य श्री अजित सागर जी
— आचार्य कल्प कल्याण सागर जी
बबीना — मुनि श्री विश्वकीर्ति जी महाराज
खनियाधाना — उपाध्याय विद्यासागर जी महाराज
तालवेहट — आचार्य विवेक सागर जी महाराज
लागौन — मुनि श्री भव्यसागर जी महारज व क्षु. धर्मसागर जी
चंदेरी — क्षुल्लक श्री विवेकानंद सागर जी महाराज
मुंगावली — क्षु. श्री विवेकानंद सागर जी महाराज
ललितपुर — मुनि श्री विश्वकीर्ति जी महाराज
महरौनी — मुनि श्री विश्वसागर जी, मुनि श्री विभगसार,

— मुनि श्री विश्वशील सागर
टीकमगढ़ — मुनि श्री सुदर्शन सागर जी महाराज
जतारा — आर्यिका श्री कीर्तिमती माताजी
सुरखी — ऐलक श्री नम्रसागर जी महाराज
मालथोन — मुनि श्री भव्यसागर जी महाराज
जरूआखेड़ा — मुनि श्री धवलसागर जी महाराज
बीना — क्षु. श्री निशक सागर जी महाराज
सागर — आर्यिका श्री सकलमती जी, आर्यिका सत्यमती जी
दमोह — आर्यिका श्री अकम्पमती माताजी, ससंघ
पटेरा — आर्यिका श्री प्रशान्तमती माताजी ससंघ
करेली — आर्यिका श्री गुरुमती माताजी ससंघ
नरसिंहपुर — आर्यिका श्री ऋजुमती माताजी ससंघ
छिन्दवाड़ा — मुनि श्री मार्दवसागर जी महाराज
बिदिशा — मुनि श्री नेमीसागर जी महाराज
गंजबासोदा — मुनि श्री बाहुबली सागर जी महाराज
इंदौर — उपाध्याय निजानंद जी महाराज ससंघ

मध्यप्रदेश के तीर्थ—

१. पुष्पगिरि २. मक्सी ३. नेमावर ४. सिद्धवरकूट ५. बनेड़िया ६. बजरंगढ़ ७. सोनागिर ८. पावाजी ९. सेरोन जी १०. थुबौन जी ११. चंदेरी १२. खजुराहो १३. डेरापहाड़ी १४. द्रोणागिरि १५. बीनाबारह १६. कुण्डलपुर बड़े बाबा १७. कोनीजी १८. बावनगजा १९. ऊन २०. आहार जी २१. पपौरा जी २२. नैनागिर

G G G G G

प्रवर्तन की लिस्ट

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
१.	नीमच	नीमच	१५०	१
२.	जावद	नीमच	१३	१
३.	मनासा	नीमच	–	–
४.	भानपुरा	मंदसौर	–	–
५.	गरोठ	मंदसौर	३०	१
६.	शामगढ़	मंदसौर	१०	१
७.	मंदसौर	मंदसौर	५०	४
८.	दलौदा	मंदसौर	१२	१
९.	जावरा	रतलाम	७०	३
१०.	खाचरौद	उज्जैन	७	२
११.	नागदा	उज्जैन	७५	१
१२.	रतलाम	रतलाम	२००	७
१३.	बदनावर	उज्जैन	४	१
१४.	बडनगर	उज्जैन	२००	४
१५.	महिदपुर	उज्जैन	१२	१
१६.	आगर	शाजापुर	६	१
१७.	नलखेड़ा	शाजापुर	५०	२
१८.	सारंगपुर	राजगढ़	३०	२
१९.	अकोदिया मण्डी	शाजापुर	४०	२
२०.	शुजालपुर मण्डी	शाजापुर	११७	१
२१.	शुजालपुर सिटी	शाजापुर	२०	२
२२.	कालापीपल	शाजापुर	५०	१
२३.	सीहोर	सीहोर	२५०	३

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
२४.	कोटरी	सीहोर	१२	१
२५.	आष्टा	सीहोर	४०	३
२६.	जावर	सीहोर	१५	१
२७.	मेहतवाडा	सीहोर	१५	१
२८.	सोनकच्छ	देवास	५०	२
२९.	पुष्पगिरि (क्षेत्र)	देवास	–	–
३०.	देवास	देवास	१८०	२
३१.	मक्सी (क्षेत्र)	शाजापुर	२२	१
३२.	शाजापुर	शाजापुर	४४	१
३३.	तराना	उज्जैन	१०	१
३४.	उज्जैन	उज्जैन	–	–
३५.	हाटपीपल्या	देवास	६५	१
३६.	कन्नोद	देवास	१५	१
३७.	पानीगांव	देवास	५	१
३८.	बावडीखेडा	देवास	१२	१
३९.	लोहारदा	देवास	२०	२
४०.	सतवास	देवास	६	१
४१.	अजनास	देवास	३०	१
४२.	खातेगांव	देवास	१२५	३
४३.	संदलपुर	देवास	४	१
४४.	नेमावरजी (क्षेत्र)	देवास	४	२
४५.	हरदा	हरदा	५०	१
४६.	हरसूद	खंडवा	१५	१
४७.	खिरकिया	हरदा	२०	१
४८.	खंडवा	खंडवा	२५०	६
४९.	भीकनगांव	खंडवा	१०	१

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
५०.	बडवाह	खरगौन	११०	१
५१.	सनावद	खरगौन	२००	५
५२.	बेडिया	खरगौन	२२	१
५३.	पीपलगोन	खरगौन	२०	१
५४.	कसरावद	खरगौन	१५	१
५५.	बलसमुंद	खरगौन	७	१
५६.	धरमपुरी	धार	२५	१
५७.	धामनोद	धार	–	१
५८.	मंडलेश्वर	खरगौन	–	१
५९.	महेश्वर	खरगौन	३५	२
६०.	गुजरी	धार	३	१
६१.	महू	इंदौर	–	–
६२.	इंदौर	इंदौर	१०,०००	५०
६३.	धार	धार	१००	१
६४.	बेटमा	इंदौर	१५	२
६५.	गौतमपुरा	इंदौर	–	१
६६.	बनेडिया (क्षेत्र)	इंदौर	–	–
६७.	देपालपुर	इंदौर	–	१
६८.	पचौर	राजगढ़	–	१
६९.	ब्यावरा	राजगढ़	२५	१
७०.	कुम्भराज	गुना	७५	१
७१.	बीनागंज	गुना	४५	१
७२.	जामनेर	गुना	–	–
७३.	आवन	गुना	–	–
७४.	राधौगढ़	गुना	८०	१

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
७५.	रुठियाई	गुना	–	–
७६.	बजरंगगढ़ (क्षेत्र)	गुना	–	३
७७.	गुना	गुना	३००	७
७८.	आरोन	गुना	–	१
७९.	साढोरा	गुना	५०	१
८०.	अशोकनगर	गुना	१२५०	५
८१.	ईशागढ	गुना	–	१
८२.	खतौरा	शिवपुरी	५०	१
८३.	लुकवासा	शिवपुरी	१५	१
८४.	बदरवास	शिवपुरी	–	१
८५.	कोल्हारस	शिवपुरी	१२०	४
८६.	शिवपुरी	शिवपुरी	६००	५
८७.	नरवर	शिवपुरी	९२	४
८८.	मगरोनी	शिवपुरी	७०	५
८९.	करैरा	शिवपुरी	९०	५
९०.	भौनंती	शिवपुरी	–	२०
९१.	सिरसौद	शिवपुरी	७	२
९२.	मारोरा	शिवपुरी	३	१
९३.	परीक्षा	शिवपुरी	४	१
९४.	पोहरी	शिवपुरी	३०	२
९५.	श्योपुरकलां	श्योपुरकलां	५०	३
९६.	मोहना	ग्वालियर	२५	१
९७.	ग्वालियर	ग्वालियर	४०	३
९८.	लश्कर	ग्वालियर	–	–
९९.	मुरैना	मुरैना	४००	५
१००.	जौरा	मुरैना	१२५	३

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
१०१.	अम्बाह	मुरैना	३००	४
१०२.	पौरसा	मुरैना	१२५	३
१०३.	गौरमी	भिण्ड	१६०	४
१०४.	भिण्ड	भिण्ड	५०००	४०
१०५.	मेहगांव	भिण्ड	२२५	४
१०६.	फूप	भिण्ड	५५	४
१०७.	गोहद	भिण्ड	६५	२
१०८.	गोहद चौराहा	भिण्ड	१८	१
१०९.	मालनपुर	भिण्ड	१०	१
११०.	मुरार	ग्वालियर	–	–
१११.	थाटीपुर	ग्वालियर	१५०	१
११२.	डबरा	ग्वालियर	–	३
११३.	सोनागिरि (क्षेत्र)	दतिया	२५	–
११४.	दतिया	दतिया	२०	१
११५.	झांसी	झांसी	३५०	८
११६.	झांसी सदर	झांसी	५०	१
११७.	बबीना	झांसी	१५०	२
११८.	पावाजी	ललितपुर	–	–
११९.	तालबेहट	ललितपुर	२००	१
१२०.	खनियाधाना	शिवपुरी	१२५	४
१२१.	चमरोहा	शिवपुरी	१४	१
१२२.	बडीमुहारी	शिवपुरी	१८	१
१२३.	नयाखेड़ा	दतिया	१८	१
१२४.	गरेठा	शिवपुरी	६	१
१२५.	जखोरा	ललितपुर	६०	१

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
१२६.	बाँसी	ललितपुर	१३	१
१२७.	सेरोनजी (क्षेत्र)	ललितपुर	–	–
१२८.	लागौन	ललितपुर	२०	२
१२९.	प्राणपुर	गुना	१८	१
१३०.	बामोरकलां	शिवपुरी	६०	१
१३१.	अचरौनी	शिवपुरी	१६	१
१३२.	चंदेरी	गुना	–	–
१३३.	सेहराई	गुना	३०	१
१३४.	मुंगावली	गुना	३००	६
१३५.	बहादुरपुर	गुना	४५	१
१३६.	थोवनजी (क्षेत्र)	ललितपुर	–	–
१३७.	पाली	ललितपुर	३५	१
१३८.	नारहट	ललितपुर	५	१
१३९.	विरधा	ललितपुर	१८	१
१४०.	ललितपुर	ललितपुर	८०००	–
१४१.	बानपुर	ललितपुर	४०	३
१४२.	गुडहा	ललितपुर	४०	१
१४३.	मेहरोनी	ललितपुर	२५०	३
१४४.	सैदपुर	ललितपुर	३०	१
१४५.	साडूमल	ललितपुर	३५	१
१४६.	मंडावरा	ललितपुर	२५०	११
१४७.	कुम्हेडी	ललितपुर	१८	१
१४८.	टीकमगढ़	टीकमगढ़	१३००	७
१४९.	मवई	टीकमगढ़	३५	२
१५०.	मंजना	टीकमगढ़	१५	१
१५१.	खरगापुर	टीकमगढ़	७०	१

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
१५२.	दिगौड़ा	टीकमगढ़	२२	१
१५३.	लिधौरा	टीकमगढ़	२४	१
१५४.	पृथ्वीपुर	टीकमगढ़	८०	–
१५५.	बरुआसागर	झांसी	८	२
१५६.	निवाडी	टीकमगढ़	२०	१
१५७.	रानीपुर	झांसी	४०	३
१५८.	सकरार	झांसी	४०	१
१५९.	गुरसराय	झांसी	१२५	४
१६०.	मऊरानीपुर	झांसी	६०	५
१६१.	जतारा	टीकमगढ़	१३०	१
१६२.	हरपालपुर	छतरपुर	२५	१
१६३.	नौगांव	छतरपुर	४५	१
१६४.	छतरपुर	छतरपुर	२००	६
१६५.	लौडी	छतरपुर	२२	१
१६६.	चंदला	छतरपुर	२४	१
१६७.	राजनगर	छतरपुर	–	–
१६८.	खजुराहो (क्षेत्र)	छतरपुर	–	–
१६९.	बमीठा	छतरपुर	३०	१
१७०.	डेरापहाड़ी (क्षेत्र)	छतरपुर	–	–
१७१.	सटई	छतरपुर	२०	१
१७२.	बिजावर	छतरपुर	२२	१
१७३.	गुलगंज	छतरपुर	१५	१
१७४.	द्रोणागिरि (सिद्धक्षेत्र)	छतरपुर	–	–
१७५.	बडा मलहरा	छतरपुर	१६०	४
१७६.	भगवॉ	छतरपुर	१००	२

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
१७७.	बडागांव	टीकमगढ़	१००	१
१७८.	घुवारा	छतरपुर	१७५	७
१७९.	रामटोरिया	छतरपुर	३१	१
१८०.	बमनौराकलां	छतरपुर	२०	१
१८१.	शाहगढ़	सागर	३५०	७
१८२.	बकस्वाहा	छतरपुर	६०	२
१८३.	हीरापुर	सागर	३०	१
१८४.	दलपतपुर	सागर	१००	१
१८५.	कर्रापुर	सागर	७०	२
१८६.	बंडावेलई	सागर	६५०	४
१८७.	परसोरिया	सागर	३५	१
१८८.	सानोधा	सागर	४०	१
१८९.	पथरिया	दमोह	४००	७
१९०.	गढाकोटा	सागर	३५०	४
१९१.	रहेली	सागर	२२५	४
१९२.	देवरीकलां	सागर	–	–
१९३.	महाराजपुर	सागर	८०	२
१९४.	गोरझामर	सागर	१५०	५
१९५.	टडा	सागर	१३५	२
१९६.	केसली	सागर	१२५	३
१९७.	सुरखी	सागर	७०	२
१९८.	राजाबिलहरा	सागर	३०	१
१९९.	जैसीनगर	सागर	७०	४
२००.	सिहोरा	सागर	१२	१
२०१.	राहतगढ़	सागर	१००	३
२०२.	मालथौन	सागर	१००	३

क्र.सं.	स्थान	जिला	घर	मंदिर
२०३.	बरौदियाकलां	सागर	४०	१
२०४.	रजवास	सागर	३५	२
२०५.	बादरी	सागर	६०	१
२०६.	नरयावली	सागर	२५	१
२०७.	जरुआखेडा	सागर	६०	–
२०८.	खुरई	सागर	५००	६
२०९.	खिमलासा	सागर	११०	२
२१०.	बीना	सागर	४००	६
२११.	मकरोनिया (अंकुर कालोनी)	सागर	७०	३
२१२.	ढाना	सागर	३५	२
२१३.	सागर	सागर	२५०००	३७
२१४.	बाँसा	दमोह	८०	१
२१५.	दमोह	दमोह	१३००	१४
२१६.	बाँदकपुर	दमोह	४०	१
२१७.	कुंडलपुर (क्षेत्र)	दमोह	–	–
२१८.	पटेरा	दमोह	६०	४

दिनांक ११-९-९९ से ३०-९-९९ तक अवकाश (पर्यूषण पर्व)

क्र.सं.	स्थान	जिला
२१९.	बनगांव	दमोह
२२०.	हटा	दमोह
२२१.	अभाना	दमोह
२२२.	खमरिया	दमोह
२२३.	तेजगढ़	दमोह
२२४.	सांगा	दमोह
२२५.	तारादेही	दमोह
२२६.	तेंदूखेडा	दमोह
२२७.	नोहटा	दमोह
२२८.	जवेरा	दमोह
२२९.	सिंग्रामपुर	दमोह
२३०.	कटंगी	जबलपुर
२३१.	बोरिया	जबलपुर
२३२.	शहपुरा	जबलपुर
२३३.	सहजपुर	जबलपुर
२३४.	पाटन	जबलपुर

क्र.सं.	स्थान	जिला
२३५.	जबलपुर	जबलपुर
२३६.	पनागर	जबलपुर
२३७.	खितौला	जबलपुर
२३८.	सिहोरा	जबलपुर
२३९.	गोसलपुर	जबलपुर
२४०.	तिवरी	कटनी
२४१.	सलीमनाबाद	कटनी
२४२.	बाकल	कटनी
२४३.	कटनी	कटनी
२४४.	बडगांव	कटनी
२४५.	रीठी	कटनी
२४६.	पवई	पन्ना
२४७.	महेवा	पन्ना
२४८.	गुन्नौर	पन्ना
२४९.	सलेहा	पन्ना
२५०.	देवेन्द्रनगर	पन्ना
२५१.	पन्ना	पन्ना
२५२.	अजयगढ़	पन्ना
२५३.	ब्रजपुर	पन्ना
२५४.	सिंहपुर	सतना
२५५.	नागोद	सतना
२५६.	सतना	सतना
२५७.	अमरपाटन	सतना
२५८.	रीवा	रीवा
२५९.	देवलौंद	शहडोल
२६०.	ब्यौहारी	शहडोल
२६१.	शहडोल	शहडोल
२६२.	बुढार	शहडोल
२६३.	अमलाही	शहडोल
२६४.	चचाई	शहडोल
२६५.	अनुपपुर	शहडोल
२६६.	जैतहरी	शहडोल
२६७.	गौरेला	बिलासपुर
२६८.	पैण्ड्रा	बिलासपुर
२६९.	कोतमा	शहडोल
२७०.	महेन्द्रगढ़	सरगुजा
२७१.	चिरमिरी	कोरबा
२७२.	कोरबा	कोरबा
२७३.	अकलतरा	जांजगरी
२७४.	बिलासपुर	बिलासपुर
२७५.	भाटापारा	रायपुर
२७६.	बालोदा बाजार	रायपुर
२७७.	सिमगा	रायपुर
२७८.	नेवरा	रायपुर
२७९.	रायपुर	रायपुर
२८०.	नवापारा	रायपुर
२८१.	धमतरी	धमतरी
२८२.	जगदलपुर	बस्तर
२८३.	दुर्ग	दुर्ग
२८४.	पद्मनाभपुर	दुर्ग

क्र.सं.	स्थान	जिला
२८५.	रुआबांधा	दुर्ग
२८६.	भिलाई	दुर्ग
२८७.	वैशाली नगर	दुर्ग
२८८.	राजनांदगांव	राजनांदगांव
२८९.	डोंगरगांव	रागनांदगांव
२९०.	डोंगरगढ़	राजनांदगांव
२९१.	देवरी	गोंदिया (महा.)
२९२.	गोंदिया	गोंदिया
२९३.	बालाघाट	बालाघाट
२९४.	बारासिवनी	बालाघाट
२९५.	लालबर्रा	बालाघाट
२९६.	बरघाट	सिवनी
२९७.	सिवनी	सिवनी
२९८.	केवलारी	सिवनी
२९९.	पिंडरई	मंडला
३००.	मंडला	मंडला
३०१.	घनसोर	सिवनी
३०२.	धनौरा	सिवनी
३०३.	छपारा	सिवनी
३०४.	लखनादौन	सिवनी
३०५.	गोटेगांव	नरसिंहपुर
३०६.	करकबेल	नरसिंहपुर
३०७.	करेली	नरसिंहपुर
३०८.	नरसिंहपुर	नरसिंहपुर
३०९.	गाडरवाडा	नरसिंहपुर
३१०.	पिपरिया	होशंगाबाद
३११.	परासिया	छिंदवाडा
३१२.	चांदामेटा	छिंदवाडा
३१३.	जुन्नारदेव	छिंदवाडा
३१४.	छिंदवाडा	छिंदवाडा
३१५.	चोरई	छिंदवाडा
३१६.	मुलताई	बैतूल
३१७.	आमला	बैतूल
३१८.	बैतूल	बैतूल
३१९.	इटारसी	होशंगाबाद
३२०.	सिवनीमालवा	होशंगाबाद
३२१.	बानापुरा	होशंगाबाद
३२२.	होशंगाबाद	होशंगाबाद
३२३.	बवाई	होशंगाबाद
३२४.	औबेदुल्लागंज	रायसेन
३२५.	वाडी	रायसेन
३२६.	बरेली	रायसेन
३२७.	बम्होरी	रायसेन
३२८.	सिलवानी	रायसेन
३२९.	गैरतगंज	रायसेन
३३०.	बेगमगंज	रायसेन
३३१.	गढी	रायसेन
३३२.	रायसेन	रायसेन
३३३.	सलामतपुर	रायसेन
३३४.	विदिशा	विदिशा

क्र.सं.	स्थान	जिला
३३५.	गंजबासौदा	विदिशा
३३६.	मंडीबामोरा	सागर
३३७.	कुरवई	विदिशा
३३८.	सिरौंज	विदिशा
३३९.	बैरसिया	भोपाल
३४०.	थांदला	झाबुआ
३४१.	राणापुर	झाबुआ
३४२.	कुक्षी	धार
३४३.	लुहारी	धार
३४४.	मनावर	धार
३४५.	बाकानेर	धार
३४६.	गंधवारी	धार
३४७.	सिंधाना	धार
३४८.	बावनगजा (क्षेत्र)	बडवानी
३४९.	बडवानी	बडवानी
३५०.	अंजड	बडवानी
३५१.	ऊन (क्षेत्र)	खरगौन
३५२.	खरगौन	खरगौन
३५३.	इंदौर (तिलकनगर)	इंदौर

इंदौर में समापन समारोह

मध्यप्रदेश प्रवर्तन समिति—

डालचंद जैन (पूर्व सांसद) सागर —संरक्षक
शांतिलाल दोशी, इंदौर —संरक्षक
प्रदीप कुमार सिंह कासलीवाल, इंदौर —परामर्श प्रमुख
हुकमचंद जैन, इंदौर —अध्यक्ष
इन्दरचंद चौधरी, सनावद —उपाध्यक्ष
कैलाशचंद चौधरी, इंदौर —उपाध्यक्ष
कुंवर दिग्विजयसिंह जैन (एम.एस.जे.), इंदौर —उपाध्यक्ष
माणिकचंद पाटनी, इंदौर —उपाध्यक्ष
मगनलाल गोईल (विधायक), टीकमगढ़ —उपाध्यक्ष
नेमीचंद जैन (पूर्व विधायक), सुजालपुर —उपाध्यक्ष
पी.सी. जैन विलासपुर —उपाध्यक्ष
सुरेश जैन (आई.ए.एस.) भोपाल —उपाध्यक्ष
प्रकाशचंद जैन, सर्राफ, सनावद —महामंत्री
डा. अनुपम जैन, इंदौर —संयोजक

हसमुख गांधी, इंदौर	—मंत्री
डा. जयसेन जैन, इंदौर	—मंत्री
बाहुबली पांड्या, इंदौर	—सहमंत्री
कमलेश कुमार जैन, इंदौर	—सहमंत्री
नंदलाल टोंग्या, इंदौर	—प्रचार मंत्री
त्रिलोकचंद जैन, मनावर	—प्रचारमंत्री
पवन बागडिया, इंदौर	—कार्यालय मंत्री

सदस्यगण–

अजय सौगानी, भोपाल
आजाद कुमार शाह, उज्जैन
दुर्लभ कुमार जैन, उज्जैन
कैलाशचंद जैन, उज्जैन
भगवानदास जैन, ग्वालियर
डा. देवेन्द्र कुमार शाह, भोपाल
धर्मचंद जैन, सनावद
सुधीर जैन, सनावद
योगेन्द्र जैन, सनावद
सौभाग्यमल जैन, सनावद
हीरालाल झांझरी, इंदौर
इंजी. कैलाशवेद, इंदौर
कमलचंद जैन, सी.ए., इंदौर
डा. प्रकाशचंद जैन, इंदौर
कपूरचंद जैन घुवारा, टीकमगढ़
करण सिंह एडवोकेट, मुरैना
करन सालगिया, नीमच
निर्मल जैन, सतना
माणिकचंद पाटनी, हरदा
पवन दोशी, बाकानेर
संजीव सर्राफ, सागर
सतीश अजमेरा, गवालियर
शिखरचंद जैन, छत्तरपुर
सुमेरचंद जैन, जबलपुर
सुनील जैन–गदिया, खंडवा
सुरेश जैन–मारोरा शिवपुरी
स्वदेश जैन (गुड्डू) भैया, सागर
विजय जैन, जैन स्टोर्स, गुना
विजय जैन, राघवगढ़ गुना
विजय पाटनी, छिन्दवाड़ा

G G G G G

गुजरात प्रांत में समवसरण प्रवर्तन

निरन्तर एक ग्राम से दूसरे ग्राम व एक प्रांत से दूसरे प्रांत धर्म की ध्वजा लहराते हुए भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करते हुए एवं अहिंसा शाकाहार की ज्योति जगाते हुए सभी को अपने साथ मिलाते हुए गुजरात प्रांत का शुभारंभ हुआ।

दाहोद से शुभारंभ—

नगर पालिका के बाहर धर्मसभा हुई। सभाध्यक्ष श्री अशोक भाई भट्ट नागरिक पूर्व मंत्री गुजरात राज्य मुख्य अतिथि श्री जशवन्त भाई भामोर मंत्री गुजरात राज्य, श्री बाबु भाई कटारा संसद सदस्य, श्रीमती स्नेहलता बेन नगर पालिका सदस्य थे। विशिष्ट अतिथि ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्र कुमार जैन अध्यक्ष जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर थे।

मेन चौक पर रथ खड़े थे चारों तरफ स्वागत बैनर लगे थे। ध्वजाएं फहरा रही थी। आलीशान पंडाल बना हुआ था। चारों तफ पुलिस सुरक्षाकर्मी खड़े हुए थे। तभी माननीय मंत्री जी का आगमन हुआ रथ के दर्शन कर गदगद् हो गये। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण से हुआ। उत्साह अच्छा था। तत्पश्चात् समिति के अध्यक्ष ब्र.रवीन्द्र जी ने अपना ओजस्वी वक्तव्य प्रस्तुत किया।

श्री अशोक भाई भट्ट ने अपने भाषण में कहा पूज्य ज्ञानमती माताजी कितनी महान हैं जिन्होंने रथ यात्रा के माध्यम से एक जन जागृति का कार्य किया है। हिंसावादी युग में यह रथ एक अहिंसारूपी अणुबम है। मैं गौरव से कहूँगा कि हमारी गुजरात की धरती पूरी शाकाहारी है। आये हुए सभी नेताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया व अपना सौभाग्य माना। माननीय मंत्री जी ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर हरी झंडी दिखाकर गुजरात प्रदेश का प्रवर्तन प्रारंभ कर दिया। जगह–जगह लोगों ने आरती की एवं स्वागत किया। पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री शैलेश भाई ने किया।

यहाँ से रथ निकले तो तीन गाड़ियां पहले थीं दो प्रशासन की तरफ से प्राप्त हुई। पुलिस सुरक्षाकर्मी की एक गाड़ी रथ के आगे और एक पीछे चलती थी, सायरन

बजाते हुए। प्रशासन का सम्पूर्ण गुजरात में बहुत सहयोग मिला।

यहां से सतरामपुर होते हुए भिलोड़ा पहुँचे यहां एक मंदिर बहुत भव्य एवं विशाल है। बिल्कुल केशरिया जी के मंदिर के समान है। टाकाटुंका, विजयनगर, कडियादरा होते हुए ईडर पहुँचे। यहाँ पर समवसरण के स्वागत की विशेष तैयारियाँ थी। सभाध्यक्ष श्री पूनमचंद जी व मुख्य अतिथि श्री प्रकाशचंद को दरलाल दोषी थे। शोभायात्रा संभवनाथ मंदिर से प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई श्री सरप्रताप हाईस्कूल पहुँची। यहाँ पर शोभायात्रा सभा में परिवर्तित हो गई। काफी विशाल मंच बना रखा था। आये हुए विद्वानों का शाल श्रीफल देकर स्वागत किया। रथ के साथ चल रहे वरिष्ठ विद्वान पं. सुधर्म चंद शास्त्री के प्रवचन हुए एवं मुख्य अतिथि श्री कुमुदचंद रावल प्रमुख आर्ट्स एण्ड कामर्स कालेज के ओजस्वी भाषण हुए। यहाँ से प्रस्थान कर रथ महेसाणा पहुँचा।

महेसाणा का मंदिर बहुत सुंदर बना हुआ है। यहाँ पर पूज्य आर्यिका श्री कुशलमती माताजी के सानिध्य में कार्यक्रम हुआ। शोभायात्रा में महिलाएं गर्वा नृत्य करती हुई चल रही थीं। विसनगर का कार्यक्रम हमारी लिस्ट में नहीं था लेकिन भव्यों के भाग्य से समवसरण आता है। अतः यहाँ पर समवसरण का भव्य स्वागत हुआ। लोगों ने खूब भक्ति से कार्यक्रम किया। सलाल में रथ पहुँचने पर भव्य स्वागत हुआ। सभा में मुख्य अतिथि श्रीमती पुष्पाबेन लीनामा मामलतदार (तहसीलदार) थीं। माननीय मुख्यअतिथि ने समवसरण के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं। प्रांतिज होते हुए हिम्मतनगर पहुँचे।

हिम्मतनगर में समवसरण के स्वागत की तैयारियां पूर्व से ही थीं। जगह-जगह बैनर एवं गेट लगे थे। सभाध्यक्ष श्री अमृतलाल खेमचंदशाह व मुख्य अतिथि श्री विनोदभाई हर्ष महामंत्री प्रांतीय श्रीविहार समिति व बाबूभाई नेमचंद गांधी तलोद अध्यक्ष प्रांतीय श्रीविहार समिति थे। सभा में उत्साह अच्छा था। शोभायात्रा बहुत भव्य एवं विशाल थी।

तलोद ग्राम का मंदिर अपने आप में एक मिशाल है। यहां पर गुजरात प्रांत की सबसे अच्छी बोली हुई। उत्साह अपूर्व था। खूब स्वागत सत्कार हुआ। सौ महिलाएं

शोभायात्रा में ऐरावत रथ के आगे-आगे कलश लेकर चल रही थीं। युवा मंडल वाले भजन बोलते हुए चल रहे थे। खूब अच्छी शोभायात्रा निकली।

भावनगर से गिरनार जी पहुँचे। यहाँ पर आचार्य निर्मलसागर जी विराजमान हैं। उन्होंने भक्तिपूर्वक दर्शन किए एवं आग्रह किया कि यहाँ पर इसका कार्यक्रम हो तो मैंने कहा महाराज जी समाज तो है नहीं रथ के साथ कौन चलेगा? आचार्य श्री कहने लगे रथ पर बैठेंगे भी और साथ भी चलेंगे। खूब धूमधाम से पूरी तलहटी में रथ घुमाया व जूनागढ़ भी ले गये। वहां पर श्वेताम्बर भाइयों ने भी खूब आरती कर स्वागत किया। तीन दिन हम लोग गिरनारजी रुके।

नडीयाद, बसो, सोजीत्रा, पेटलाद होते हुए पावागढ़ क्षेत्र पर पहुँचे। यहाँ पर आ. श्री भरतसागर जी महाराज विराजमान थे। आर्यिका दृढ़मती माताजी जी ससंघ विराजमान थीं। यह स्थान सिद्धक्षेत्र है। सारे मंदिर को सजा रखा था। यहां का वार्षिक मेला था। सभी साधु साध्वियों के सानिध्य में सभा हुई। उत्साह बहुत अच्छा था। उपस्थिति काफी थी। पूरे क्षेत्र पर रथ यात्रा घुमाई गयी।

करमसद, पादरा, बड़ौदरा, पोर, भरुच होते हुए अंकलेश्वर पहुँचे। यहाँ पर आचार्य श्री पुष्पदंत एवं भूतबली ने धवला एवं जयधवला ग्रंथ लिखा था। सर्वप्रथम लेखन कार्य यहीं से शुरू हुआ था। यहां से माड़वी होते हुए महुआग्राम पहुँचे। यह स्थान अतिशय क्षेत्र है। भगवान पार्श्वनाथ की चमत्कारी प्रतिमा तलघर में विराजमान है। यहाँ पर भी समवसरण का स्वागत हुआ। यहाँ से सूरत पहुँचे। आज गुजरात प्रांत का अंतिम पड़ाव था। एक सत्र का समापन था। सभी प्रांतीय पदाधिकारी समापन कार्यक्रम में आये। सभी कार्यकर्ताओं ने खूब उत्साह के साथ प्रवर्तन में सहयोग दिया। अपने-अपने नगर में भव्य कार्यक्रम किया। यहाँ पर मेरे सभी प्रांताधिकारियों का शाल एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। इसी के साथ गुजरात प्रांत का प्रवर्तन सम्पन्न हो गया। यहां से रथ मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए जा रहे थे। मार्ग में बारडोली ग्राम वालों ने आग्रहपूर्वक रथ को रोका एवं स्वागत कर आरती की। सभी को भोजन करवाया।

एक सूक्ति है Short & Sweet उसी के अनुसार छोटा प्रांत है पर ऐसी

भक्ति एवं स्वागत हुआ जिसका वर्णन कर पाना असंभव है। गुजरात काफी शांति प्रिय स्थान है। इन सभी कार्यक्रमों में विनोद भाई 'हर्ष' का बहुत सहयोग मिला। इसी के साथ अगले प्रांत की ओर अग्रसर।

गुजरात प्रांत के तीर्थ स्थल—

१. तारंगाजी, २. पावागढ़, ३. गिरनार जी, ४. अंकलेश्वर, ५. महुआ

स्वागत हेतु पधारे विशिष्ट अतिथि—

दाहोद	— अशोक भाई भट्ट नागरिक पूर्वठा मंत्री
	— जशवंत भाई भामोर मंत्री गुजरात सरकार
	— बाबू भाई कटारा–सांसद
	— श्रीमती स्नेहलता बेन, नगर पालिका सदस्य
ईडर	— श्री कुमुदचंद रावल प्रमुख आर्ट्स एवं कामर्स कालेज
सलाल	— श्रीमती पुष्पाबेन लीनामा–मामलतदार
दहेगाम	— श्री पी.एम.सोनी मामलतदार
	— श्री गाबा जी मंगाजी ठाकुर समाजकल्याण मंत्री

साधुओं का सानिध्य—

कलोल	— आर्यिका श्री कुशलमती व आर्यिका श्रीसन्मतिमती जी
सोलारोड	— मुनिश्री निर्भयसागर जी
चांदलोडिया	— मुनिश्री नियमसागर जी, ऐलक श्री निशंक सागर जी
	— आर्यिका श्री उन्नतिमती जी
गिरनार जी	— आचार्य श्री निर्मल सागर जी
पावागढ़ जी	— आचार्य श्री भरत सागर जी महाराज
	— आर्यिका श्री दृढ़मती माताजी ससंघ
महेसाणा	— आर्यिका श्री कुशलमती माताजी

गुजरात प्रदेश प्रवर्तन कार्यक्रम

क्र.स.	गांव	घर	मंदिर
१.	दाहोद	१५०	१
२.	संतराम पुर	८५	१
३.	भिलोड़ा	१५	१
४.	टाकाटुंका	८	१
५.	विजयनगर	१४०	२
६.	कडियादरा	२०	१
७.	ईडर	२००	६
८.	महेसाणा	७०	१
९.	विसनगर	२०	१
१०.	तारगांजी	–	–
११.	सलाल	३०	१
१२.	प्रान्तिज	१५	१
१३.	हिम्मतनगर	२५०	२
१४.	तालोद	२५०	४
१५.	रखियाल	८०	३
१६.	दहेगाम	२५	१
१७.	गांधीनगर	५०	१
१८.	कलोल	१५५	१
१९.	उस्सामपुरा	२०	२
२०.	नवरंगपुरा	–	–
२१.	सोलारोड	२५०	१
२२.	चांदलोडिया	–	–
२३.	नरोडा	११५	१

क्र.स.	गांव	घर	मंदिर
२४.	ओढव	८०	१
२५.	खोखरा	–	–
२६.	मेघानीनगर	–	–
२७.	चांदलोड़िया	–	–
२८.	भावनगर	७०	१
२९.	गिरनारजी	–	–
३०.	नडियाद	४०	१
३१.	बसो खेडा	१०	१
३२.	सोजित्रा	४५	५
३३.	पेटलाद	४०	१
३४.	पावागढ़	–	
३५.	करमसद	३५	१
३६.	पादरा	६०	१
३७.	बडोदरा	६००	५
३८.	पोर	५	१
३९.	भरुच	३५	२
४०.	अंकलेश्वर	३५	५
४१.	मंडवी	२२	२
४२.	महुआ	१०	–
४३.	सूरतमाँडल टाउन	१००	२
४४.	सूरत नवापारा	४००	७
४५.	बारडोली	–	–

G G G G G

महाराष्ट्र में समवसरण प्रवर्तन

परभणी नगर से महाराष्ट्र प्रान्त में समवसरण का श्रीविहार प्रारंभ हुआ, वहाँ रथ पहुँचने पर भव्य स्वागत हुआ। उत्साह बहुत अच्छा था। सभाध्यक्ष श्री शांतिलाल जी काला महामंत्री महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी थे। पूरा मंदिर खचाखच भरा हुआ था। शोभायात्रा पूरे नगर में घूमती हुई महावीर उद्यान पहुँची। शोभायात्रा सभा में परिणत हो गयी। मुख्य अतिथि हाजी अब्दुल रसीद थे। हाजी जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि आज रथयात्रा के माध्यम से जिस संदेश को लेकर आप सारे देश में जा रहे हैं ईश्वर आपकी कामना पूर्ण करें। यह रथयात्रा देश में अमन चैन की स्थापना करे। कार्यक्रम को सफल बनाने में शांतिलाल जी का सहयोग प्राप्त हुआ।

परली में पावर हाउस के अधिकारियों ने रथ का स्वागत किया। सभाध्यक्ष श्री अनिल कुमार सुराणा अधीक्षक अभियंता थर्मल पावर हाउस, मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र कुमार जैन अभियंता थर्मल पावर स्टेशन थे। उत्साह बहुत अच्छा था। शोभायात्रा पूरे नगर में उत्साह के साथ निकाली। अंबेजोगाई होते हुए लातूर पहुँचे। यहां पर उत्साह बहुत अच्छा था। शोभायात्रा मंगल कार्यालय से जैन मंदिर तक गयी। यहां पर एक विशाल सभा का आयोजन हुआ। मुरुंड होते हुए तेर अतिशय क्षेत्र पर पहुँचे। यहां पर भगवान महावीर का समवसरण आया था। हर अमावस्या को मेला भरता है। आज भी बहुत भीड़ थी। यहां का नाम हमारी लिस्ट में नहीं था। यहां से कुंथलगिरि सिद्ध क्षेत्र पर समवसरण की सभा हुई। सभी कमेटी के पदाधिकारियों ने रथ का स्वागत किया।

बार्शी में मराठा सभागार में सभा हुई। मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश बाफना नगर अध्यक्ष थे। सभा में उपस्थिति अच्छी थी। श्री बाफना जी ने अपनी शुभ कामनाएं रथ के लिए प्रेषित कीं। करमाला ग्राम में उत्साह पूर्वक आगवानी कर स्वागत किया। सभा समंतभद्र स्वाध्याय भवन में हुई। सभाध्यक्ष श्री कांकणी जज साहब थे। मुख्य अतिथि श्री मुकुल जी पी.एस.आई. थे। सभाध्यक्ष महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा कि मुझे आज कहीं जरूरी काम से जाना था लेकिन यहाँ आकर मुझे लगा कि यदि मैं चला जाता तो जीवन का स्वर्णिम क्षण खो देता।

पढ़रपुर में मंदिर जी के प्रांगण में भव्य सभा का आयोजन हुआ। सभाध्यक्ष श्री रामचंद्र शिंदे प्रांताधिकारी व मुख्य अतिथि श्री अरुण कंडरे नगराध्यक्ष नगरपालिका, श्री सुभाष चंद्र डांगे पुलिस निरीक्षक, बसंत राव काले चेयरमैन, श्री पांडुराव (तात्या), डिंगरे माँजी आमदार, डा. सुधार पाठारे थे। सभी वक्ताओं नेअपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा अहिंसा शाकाहार पर प्रकाश डाला। शोभायात्रा ३ घंटे तक चली। अब तक की महाराष्ट्र की सबसे अच्छी रथयात्रा थी। बहुत भव्य शोभायात्रा थी।

अकलूज, मालसिरस, सदाशिवनगर होते हुए नातेपुते ग्राम में पहुँचे। सभा महावीर वाटिका में हुई। उत्साह बहुत अच्छा था। सभाध्यक्ष श्री राज मालेगांवकर अध्यापक थे। अध्यापक जी जैन नहीं थे परन्तु डेढ़ घंटे तक भगवान ऋषभदेव के विषय में वक्तव्य प्रस्तुत किया। बारामती होते हुए फलटन पहुँचे। यह स्थान ''जैनों की काशी'' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर ५ मंदिर हैं, सभी मंदिर भव्य एवं विशाल हैं। अपार जन समूह के मध्य समवसरण रथ का भव्य स्वागत हुआ। यहाँ पर आर्यिका सक्षममती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। विशाल शोभायात्रा सारे नगर में घुमाई, सभी लोगों ने अपने द्वार पर समवसरण का भव्य स्वागत कर आरती की। यहां से रथ मुम्बई महानगर के लिए प्रस्थान कर गये।

मुंबई महानगर में रथ का प्रवर्तन बहुत उत्साह के साथ हुआ। निरन्तर २३ दिन तक प्रवर्तन चला। पोदनपुर तीनमूर्ति मंदिर में ठहरने की व्यवस्था थी। नेशनल पार्क में स्थित यह स्थान अत्यन्त सुन्दर है। यहाँ पर आदिनाथ, भरत, बाहुबली भगवान की प्रतिमा विराजमान हैं।

१४ ता. को प्रातः ८ बजे गोरेगांव में कार्यक्रम हुआ। शिवसेना भवन के सामने हाल में सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री आई.सी. जैन व मुख्य अतिथि श्री नंद कुमार काले, आमदार श्री जयचंद जी कासलीवाल पूर्व आमदार (अध्यक्ष-श्रीविहार समिति महा. प्रांत) श्री प्रकाश अवाड़े मंत्री वस्त्रोद्योग आदिवासी विकास सहायक महा. राज्य, श्री आर.के. जैन महासभा अध्यक्ष महा. प्रांत, श्री शिखरचंद पहाड़िया कार्याध्यक्ष श्रीविहार समिति मुम्बई, श्री भरतकुमार काला महामंत्री श्री विहार समिति मुम्बई, डा. पन्नालाल पापड़ीवाल महामंत्री श्री विहार समिति महा. प्रांत, जसू भाई शाह

संयोजक एवं श्री सरदारी लाल जैन थे। विशिष्ट अतिथि कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन अध्यक्ष श्रीविहार केन्द्रीय समिति थे।

सभा का शुभारंभ स्थानीय बालिकाओं के मंगलगीत से हुआ। क्रम को आगे बढ़ाते हुए डा. अनुपम जैन इंदौर ने रथयात्रा उद्देश्य की भूमिका पर प्रकाश डाला। ब्र. रवीन्द्र जी ने रथ के महत्व को बताते हुए वर्तमान में इसकी आवश्यकता पर जानकारी प्रदान की। इसी कड़ी में आमदार नंद कुमार जी ने अपने क्षेत्र की जनता की ओर से रथ का स्वागत किया। श्री आई.सी. जैन साहब ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पूज्य माताजी के दर्शन से ही मन में शांति मिलती है। सभी वक्ताओं ने अपने ओजस्वी भाषण से सभा में एक धार्मिक माहौल बनाया। सभा में उपस्थिति बहुत अच्छी थी। मंच संचालन श्री मयंक भाई कर रहे थे। अब तक की सबसे अच्छी बोलियां रहीं।

यहां मलार्ड, कांदीवली, मलार्ड पू., मलार्ड प., अंधेरी प., खार प., होते हुए कुर्ला प. में जीवराज के मकान में सभा हुई। साकीनाका में पूर्व से ही अच्छी तैयारी की हुई थी। विशाल पंडाल बना हुआ था। खूब अच्छी सभा एवं शोभायात्रा हुई। मुख्य अतिथि श्री शिखरचंद जी पहाड़िया थे। मुम्बई मुख्य का प्रमुख कार्यक्रम था। रामबाग बाड़ी में सभा का आयोजन था। सभाध्यक्ष श्री सरदार हीरालाल चंदू लाल जैन थे। मुख्य अतिथि श्री आर.के. पुरोहित आमदार (पूर्व मंत्री महा. राज्य) व श्री अतुल भाई आमदार थे। माननीय उपमुख्यमंत्री श्री छगनभुजबल को आना था पर उन्होंने अपनी शुभकामनाएं पत्र द्वारा प्रेषित कर दी थीं। तीन समाज का सामूहिक कार्यक्रम था।

कार्यक्रम बहुत सुन्दर हुआ। कई टी.वी.चैनल के द्वारा सभी जगहों पर कार्यक्रम दिखाया गया। भोजन सामूहिक था। माटूंगा घाटकोपर में सर्वोदय तीर्थ में सभा हुई। यहाँ पर सभी देवी-देवताओं के मंदिर हैं। विक्रोली में जैन स्थानक में सभा हुई। यहाँ पर पं. भरत कुमार जैन काला जी का घर है। उन्होंने सभी समाजों के साथ सामूहिक कार्यक्रम कर भव्य शोभायात्रा निकाली। भांडुप में उपाध्याय श्री समतासागर जी के सानिध्य में सभा हुई। उपाध्याय श्री ने अपने प्रवचन में पूज्य माताजी की प्रशंसा करते हुए इसे एक उत्तम कार्य बताया। समाज का सामूहिक भोज था।

मुलुंड होते हुए थाना महानगर पहुँचे। केशर चौक स्थित आदीनाथ चैत्यालय में सभा हुई। यहाँ पर श्वेताम्बर समाज ने भी भक्तिपूर्वक रथ का स्वागत कर आरती की। डोबिवली, विरार होते हुए वाशी पहुँचे। यहाँ पर मुनिश्री भूतबली सागर जी के सानिध्य में सभा हुई। भिवंडी नालासोपारा होते हुए भयंकर पं. पहुँचे। यहाँ पर उत्साह अच्छा था। आज भगवान शांतिनाथ निर्वाण कल्याणक का पावन दिन है। सर्वप्रथम निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। तत्पश्चात् शोभायात्रा हुई। मीरारोड, दहिसर होते हुए बोरीबली पूज्य में कार्यक्रम हुआ। यहाँ पर मुंबई प्रवर्तन का समापन समारोह का कार्यक्रम था। २२ दिनों तक विभिन्न कालोनियों में समवसरण का प्रवर्तन हुआ। समवसरण रथ के माध्यम से भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। इन सभी कार्यक्रमों में हमें श्री भरत काला जी का काफी सहयोग प्राप्त हुआ क्योंकि हमारे लिए एक कालोनी से दूसरी कालोनी पहुँचने में बड़ी समस्या थी मार्ग मालूम नहीं था किन्तु सभी कार्यों में भरत कालाजी ने बहुत सहयोग प्रदान किया। संस्थान की ओर से उनके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ आज मुम्बई नगर का प्रवर्तन समाप्त हो गया।

पूरी मुंबई में २२ दिनों तक २९ कार्यक्रम हुए। सभी कार्यक्रम को बनाना एवं उन तक पहुँचाना, भाषण करना, बोलियाँ करवाना एवं कार्यक्रम कैसे प्रभावशाली हो यह सभी कार्य भरत काला जी के माध्यम से ही सुलभ हो सके। आर.के. जैन व शिखरचंद जी पहाड़िया जिन्होंने मुम्बई महानगर की प्रवर्तन की बागडोर अपने हाथों में संभाली और अपना सहयोग प्रदान किया। उन सभी लोगों को पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्रेषित करते हुए रथ आगे प्रस्थान कर गया।

निगड़ी होते हम लोग पूना पहुँचे। पूना में मिलिंद फड़े जी के कार्यालय में रात्रि विश्राम हुआ। प्रातः शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होती हुए मंदिर जी में पहुँची। सतारा, इस्लामपुर, किनी, पेठबड़गांव, नौगांव, हलोड़ी, चौकाक, हातकंणगले, माणगांव, आलते, कुंभोज, हिंगणगांव, कबठेसार, नेंज होते हुए कोल्हापुर पहुँचे। कोल्हापुर मठ में भट्टारक जी के सानिध्य में रथ का स्वागत हुआ। वलीवड़े, चिचवड़, बसगढ़े, सांगोड़ा, पटटन कोडोली होते हुए इंगडी पहुँचे। यहां का

कार्यक्रम हमारी लिस्ट में नहीं था। लेकिन भक्ति के आगे कुछ नहीं चलता। ग्रामवासियों ने रथ को आगे बढ़ने ही नहीं दिया। छुपरी, रंगोली होते हुए हम इचलकरंजी पहुँचे।

इचलकरंजी में उत्साहपूर्वक आगवानी हुई। सभा प्रातः ८ बजे नामदेवावन में हुई। सभाध्यक्ष श्री रतनलाल जी दोशी थे। मुख्य अतिथि का पद सुशोभित किया- माननीय श्री कलप्पा अवाड़े मांझी खासदार चेयरमैन साखर कारखाना। सभा में उपस्थिति अच्छी थी। पूरे नगर में बड़े उल्लास के साथ शोभायात्रा निकाली गयी। शिरदवाड, अब्दुललाट घोसरवाड होते हुए दत्तवाड़ नगर में हम लोग पहुँचे।

दत्तवाड़ नगर में वीर सेवा दल के सभी बच्चों ने झांझपदक (बैण्ड) बजा कर स्वागत किया। महाराष्ट्र प्रांत के हर नगर में वीर सेवादल की शाखाएं है। सभी नवयुवक बहुत सक्रिय एवं धर्मनिष्ठ हैं। यहां से जूनादानबाड़, अकिवाट, कुरुंदवाड़, आलास, गणेशवाड़ी, हसूर, शिडटी, होते हुए नांदणी ग्राम पहुँचे।

सभा नांदणीमठ में हुई। वहाँ भट्टारक जिनसेन स्वामी जी विराजमान थे। सभा में उपस्थिति ठीक थी। भट्टारक जी ने रथ के दर्शन किये। शानदार शोभायात्रा निकली। कोथली नगर में वीरसेवा दल की बालिकाओं ने शोभायात्रा में अच्छा प्रदर्शन किया। उमणवाड़ का कार्यक्रम हमारी लिस्ट में नहीं था। लेकिन समाज के विशेष आग्रह पर रथ लाया गया। दानोली, चिपरी, जैनापुर होते हुए जयसिंहपुर पहुँचे। स्वागत सभा मंदिर जी में हुई। सभाध्यक्ष-श्री शामराव जी पाटिल थे। मुनि श्री सुमेरु सागर जी महाराज सभा में विराजमान थे। रथयात्रा में पूज्य मुनिश्री साथ-साथ चले। कस्बेडिगंज, समडोली, कवठेपिरान दूधगांव पहुँचे। यहां पर मुनि श्री विद्याभूषण जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। महाराज जी काफी वृद्ध थे। उपस्थिति बहुत अच्छी थी।

आष्टा, बाणवा, बसगड़े, ब्रह्मनाल, नांद्रे माधवनगर होते हुए कुपवाड़ा पहुँचे। यहाँ पर मुनि श्री अपूर्वसागर जी व मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज विराजमान थे। उस दिन महाराज जी चातुर्मास स्थापना का दिवस था। महाराज जी ७ दिन उपवास के बाद आहार पर उठे थे। इसलिए काफी भीड़ थी। सांगली, मिरज,

म्हैशाल, टाकली होते हुए हम लोग बोलवाड पहुँचे। यहाँ का कार्यक्रम हमारी लिस्ट में नहीं था। लेकिन ग्राम वालों के विशेष आग्रह पर हम लोग रथ लेकर गये। उत्साह बहुत था। लोग पूरे दिन में भी लाभ नहीं उठा पाते हैं लेकिन यहां गाँव वालों ने एक घंटे में पूरा आनंद ले लिया। यहां से हम गांधीनगर पहुँचे।

गांधीनगर में रथ की अगवानी के लिए वीरसेवा दल के बालक आये। बहुत उत्साह के साथ रथ को नगर में ले गये। यहां पर १० दिन पूर्व से ही तैयारी थी। उत्साह बहुत अच्छा था। जहाँ पर कार्यक्रम था वहां पर रथ नहीं पहुँच सकता था। सभी लोगों ने जिनके खेत मार्ग में आते थे, उन्होंने अपने खेतों पर रोलर फिरवा कर मार्ग बना कर रथ को ले गये। यहां पर सांगली जिले का सबसे अच्छा कार्यक्रम हुआ। यहां एक लड़का रथ में कार्यरत था। नेमीचंद पाटिल ने पूरे कार्यक्रम के लिए बहुत मेहनत की। उसके लिए समिति की तरफ से मैंने माताजी का चित्र भेंट कर सम्मान किया।

एरनडोली, माणगांव, कलंबी भौसे, हिगंणगाव होते हुए सोलापुर पहुँचे। यहां पर उत्साह अच्छा था। श्राविका आश्रम में रथ रोका। एक दिन का अवकाश था। अगले दिन श्राविका आश्रम के प्ले ग्राउंड में सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री रतनचंद सखाराम शाह (महामंत्री संस्था श्राविका आश्रम) थे।सर्व प्रथम झंडारोहण हुआ। तत्पश्चात् आश्रम की बालिकाओं द्वारा स्वागतगान हुआ। इसी क्रम में ब्र. विद्युल्लता बेन का स्वागत भाषण हुआ जो कि आश्रम की संचालिका है। आज रविवार का दिन है फिर स्कूल की सभी बालिकाएं आई हुईं हैं। भाषण क्रम में डा. राजेन्द्र जी बिडकर, श्री वी.आर. कुलकर्णी में वयोवृद्ध विद्वान् पं. सुधर्मचंद शास्त्री आदि के भाषण हुए। भव्य शोभायात्रा निकली। ५००० बालिकाएं क्रम से पक्तिवद्ध होकर चल रही थीं। भजन मंडली, झांकी एवं समाज के सभी लोग शोभायात्रा में चल रहे थे। यहां का कार्यक्रम प्रभावना की दृष्टि से बहुत सुन्दर था।

तुलजापुर, उस्मानाबाद होते हुए बीड़ पहुँचे। बीड़ में समवसरण का स्वागत करने के लिए पधारे श्री शिवाजी राव धाड़े नगर अध्यक्ष बीड़। मुख्य अतिथि श्री डी.एस.पी. साहब थे। माननीय नगर अध्यक्ष महोदय ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर नगर के लिए रथ का प्रवर्तन किया। गेवराई में सभा कृषि मंडी में हुई।

सभाध्यक्ष श्री राजेन्द्र दत्ता जी राव देशमुख पी.एस.आई. थे। सभा मेनरोड पर थी। माननीय पी.एस.आई. जी ने जब सुना कि यह यात्रा अहिंसा का संदेश लेकर आयी है तो तत्क्षण मांसाहार का त्याग कर दिया। जहां तक मैं समझता हूँ कि यह इस यात्रा की सबसे बड़ी सफलता है क्योंकि एक दीप से दूजा जलाना है। रथ की सार्थकता तभी है जब आप अपने जीवन को सुसज्जित करें।

आडुलनगर में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ। सभी मजहब वालों ने अपने-अपने विचार रखें। यहां से हम अतिशय क्षेत्र कचनेर पहुँचे। कचनेर में समाज नही है। सभा मंदिर जी में हुई। सभा में गुरुकुल के विद्यार्थी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि डा.श्री पन्नालाल पापड़ीवाल (महामंत्री महा. प्रांत श्रीविहार समिति) थे। सभी लोगों ने मिलकर पूरे क्षेत्र में रथ घुमाया। यहां पर भगवान पार्श्वनाथ की चमत्कारी प्रतिमा विराजमान है। हम सभी लोगों ने प्रातः अभिषेक किया। बहुत सुंदर क्षेत्र है।

औरंगाबाद में कार्यक्रम की तैयारी पूर्व से थी। मंदिर के बाहर बने पंडाल में सभा हुई। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। सभा में पूज्य आचार्यकल्प श्री करुणा सागर जी महाराज ने अपना सानिध्य प्रदान किया। सभाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दर्ज ऊर्जा मंत्री महा. राज्य थे। मुख्य अतिथि श्री कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन अध्यक्ष श्रीविहार केन्द्रीय समिति हस्तिनापुर थे। विशिष्ट अतिथि श्री डा. भागवत जी कराड महापौर श्री बसंत जी नखडे उपमहापौर, डा. पन्नालाल पापड़ीवाल अध्यक्ष महा. प्रांत तीर्थ क्षेत्र कमेटी श्री हरिभाऊ जी वागडे पूर्व मंत्री महा. राज्य थे। सभा का शुभारंभ श्रीमती शोभा अजमेरा के मंगलाचरण से हुआ तथा स्वागत ज्ञान श्री प्रताप कोचुरे ने प्रस्तुत किया। अर्चना मासा. ने भी भगवान ऋषभदेव के विषय में अपना ओजस्वी वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभाध्यक्ष माननीय ऊर्जामंत्री ने रथ के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की व महाराष्ट्र प्रांत की पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म के विषय में प्रचलित भ्रांतियों का संशोधित कराने का आश्वासन प्रदान किया। महापौर जी ने इस चौक का नाम शासन की ओर से भगवान शांतिनाथ कर दिया। अंत में पू. महाराज जी के आशीर्वचन प्राप्त हुआ। ऊर्जा मंत्री जी ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर शोभायात्रा का शुभारंभ किया। सैकड़ों स्थान पर आरती हुई। खूब भव्य स्वागत हुआ।

लगभग ४ घंटे तक रथयात्रा चली। सड़कों पर जहां देखो वहां जन सैलाब, भीड़ ही भीड़ जिनकी संख्या लिखपाना असंभव होगा। अपार जन समूह था।

सिडको होते हुए हम श्रीरामपुर पहुँचे। यह स्थान परमपूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज की जन्मभूमि है। जहाँ आज भी उनके पुत्रगण रहते हैं। श्रीरामपुर में समवसरण रथ की स्वागत सभा का आयोजन मंदिर में हुआ। सभाध्यक्ष श्री गुलाब चंद झांझरी व मुख्य अतिथि डा. पन्नालाल पापड़ीवाल पैठण थे। रथ का स्वागत करने हेतु पधारे श्री जयंतराव ससाणे आमदार, सौ.नुरबी शेख नगर अध्यक्ष, भाऊ साहेब दगड़े प्रांत अधिकारी, किशोर राजगुरु, तहसीलदार, बसंत रावदेशमुख संपादक सार्वमत दैनिक, श्री अनिलराव कांबले अध्यक्ष पीपल्स बैंक। शाम को रथ का स्वागत शरद पहाड़े जी के घर पर हुआ। वहाँ सभी ने रथ की आरती उतारी।

कोपरगांव धर्मपरायण नगरी है। यहां पर प्रातः ही २०० लोगों ने रथ की भक्ति से पूजन की। रथ के स्वागत के लिए तहसीलदार बार्डे साहब, श्री शिंदे साहब पी.एस.आई. व खासदार (सांसद) शंकर राव जी काले व नगर अध्यक्ष श्री दारूणकर साहब आदि अनेक महानुभाव पधारे। शिर्डी में भगवान शांतिनाथ का सुंदर कांच का मंदिर है। यह स्थान साईबाबा के नाम से प्रसिद्ध है। बुलढाना नगर में उत्साह अच्छा था। सभाध्यक्ष डा. सी.एस. नगर नाई तथा मुख्य अतिथि श्री सुधाकर नारायण कस्तुरे थे। उपस्थिति अच्छी थी। अकोला नगर में रथ पहुँचने पर भव्य स्वागत हुआ। उस दिन भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण कल्याणक था। सभा शांतिनाथ चैत्यालय के समक्ष हुयी। सभाध्यक्ष श्री गोवर्धन शर्मा विधायक अकोला थे। मुख्य अतिथि श्री संजय छोत्रे विधायक व आर.एस.एस. के अकोला शाखा के अध्यक्ष थे। माननीय शर्मा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं आज तक जैनधर्म को भगवान महावीर से मानता था आज सभा में मुझे पता चला कि जैनधर्म अनादि निधन धर्म है। मैं भी अपने को आज से जैन कहूंगा क्योंकि मैं भी अहिंसक एंव शाकाहारी हूँ।

पूर्व संध्या पर रथ कारंजा नगर में पहुँचा। यहां पर चार मंदिर हैं, बहुत सुन्दर

एंव कलात्मक मंदिर है। यह मंदिर श्रमण संस्कृति की धरोहर है। काष्ठासन मंदिर में रत्नों की अमूल्य प्रतिमाएं हैं। सभा में बहुत अच्छी उपस्थिति थी। सभाध्यक्ष श्री सुरेशभाऊ एवं मुख्य अतिथि श्री मनोहर आग्रेकर नागपुर थे। पं. मनोहर आग्रेकर जी ने अपने प्रवचन में पू. माताजी व जम्बूद्वीप की प्रशंसा की। मालेगांव, शिरपुर होते हुए वाशिम पहुँचे।

वाशिम नगर की सभा में उपस्थिति अच्छी थी। सभाध्यक्ष श्री मदनलाल जी बाकलीवाल थे मुख्य अतिथि श्री मुनीर जी मुजावर कलेक्टर वाशिम, श्री राजेन्द्र पाटनी आमदार विधान परिषद महा., श्री राजेन्द्र जी राठी नगराध्यक्ष, जितेन्द्र जी पापलकर उप विभागीय अधिकारी वाशिम थे। माननीय आमदार जी ने अपने भाषण में इसे एक बहुत बड़ी उपलब्धि एवं आवश्यकता बताया। कलेक्टर साहब बहुत प्रभावित हुए एवं उन्होंने कहा कि यह रथयात्रा कभी भी बंद नहीं होनी चाहिए, यह प्रतिफल सभी को अहिंसा एवं जनजागरण का संदेश दे रही है। बहुत भव्य शोभायात्रा निकली। अनेक स्थानों पर गेट बना रखे थे। जगह-जगह पुष्पवृष्टि हो रही थी।

अमरावती नगर में समाज के ८०० घर है। धर्मपारायण नगरी है। सभा प्रातः ९ बजे मंगल कार्यालय में हुयी। सभाध्यक्ष श्री अनंतभाऊ गुठे (खासदार) अमरावती थे। भातकुली अतिशय क्षेत्र है। यहां पर भगवान ऋषभदेव की मनोज्ञ प्रतिमा है। वह रक्षाबंधन एवं स्वतंत्रता दिवस का था। भगवान श्रेयांसनाथ का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। यहां पर क्षुल्लक ध्यान सागर जी महाराज विराजमान थे। सभी लोगों ने रथ पर राखी बांधकर रक्षाबंधन पर्व मनाया। मध्यान्ह में महाराज जी ने रक्षाबंधन पर्व की कथा सुनायी।

काटोल नगर में समवसरण स्वागत के लिए एस.डी.ओ. काटोल पधारे। सभाध्यक्ष श्रीमती सौ. रंजनाताई देशमुख नगर अध्यक्ष नगर पालिका थी। उस दिन नगर के सभी बूचडखाने बंद थे। श्रीमती देशमुख ने पूरी रथयात्रा में उत्साहपूर्वक भाग लिया। आर्वी नगर में प्रातः ८ बजे सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री अभिजीत नांदगांव कर जजदीवानी कोर्ट व मुख्य अतिथि श्री रजनीकांत लाठीवाला अध्यक्ष श्वेताम्बर

समाज थे। सभा में श्वेताम्बर साध्वी सुमित्रा म.सा. एवं श्री वंदना म.सा. ने अपना सानिध्य प्रदान किया।

वर्धा नगर एक ऐतिहासिक नगर है। यहाँ पर गांधी जी रहा करते थे। सभाध्यक्ष डा. श्री प्रकाशराव पनवेलकर व मुख्य अतिथि श्री पुरकेर साहब एडवोकेट थे। सैकड़ों स्थानों पर रथ का स्वागत व आरती हुयी। नागपुर नगरी काफी बड़ी नगरी है। यहां पर दो कार्यक्रम हुए।

प्रथम दिन के कार्यक्रम में समवसरण रथ के स्वागत के लिए श्रीमती मसूरकर महापौर नागपुर थी। दूसरा कार्यक्रम इतवारी बाजार में हुआ। यहीं पर महाराष्ट्र प्रांत के समापन का कार्यक्रम हुआ। निरन्तर ५ महीने तक महाराष्ट्र के प्रत्येक गांव में भ्रमण हुआ। लगभग २१० गांवों व २८ जिलों में भ्रमण हुआ। यहां पर इन्द्रध्वज विधान चल रहा था। विधान का समापन आज है। सभा में ऐलक उदसागर जी महाराज विराजमान थे। शोभायात्रा बहुत विशाल थी। लगभग १०००० आदमी उपस्थिति थे।राजा श्रेयांस प्रसाद रूप में नारियल बांट रहे थे। एक गाड़ी भर के नारियल आये थे। जगह-जगह तोरण द्वार बने हुए थे। अपने-अपने घरों के आगे लोग आरती सजाए हुए खड़े थे। अपार जन-समूह के मध्य शोभायात्रा सम्पन्न हुई। इस प्रकार पूरे महाराष्ट्र प्रांत में समवसरण श्री विहार रथ का प्रवर्तन आशातीत सफलता व आनंदपूर्वक संपन्न हुआ।

महाराष्ट्र प्रांत विवरण

क्र.सं.	स्थान
१.	नासिक
२.	ओझरमिग
३.	लासलगांव
४.	चांदवाड़
५.	मनमाड़
६.	नांदगांव
७.	सोनज
८.	टाकली
९.	मालेगांव
१०.	सटाणा
११.	मांगीतुंगी
१२.	कुसुम्बा
१३.	धूलिया
१४.	कापडना
१५.	सोनगिर
१६.	नंटूरवार
१७.	बेटावद
१८.	पाटोला

क्र.सं.	स्थान
१९.	अमलनेर
२०.	चोपड़ा
२१.	दहीगांव
२२.	रावेर
२३.	भुसावल
२४.	जलगांव
२५.	धरणगांव
२६.	नेरी
२७.	जामनेर
२८.	शेंदुर्णी
२९.	चालीसगांव
३०.	न्यायडूंगरी
३१.	बोलठान
३२.	शिऊर
३३.	बैजापुर
३४.	लासूर स्टेशन
३५.	देवलगांव राजा
३६.	चापानेर
३७.	कन्नड
३८.	जालना
३९.	हतनूर
४०.	ऐलोरा
४१.	सज्जनपुर
४२.	पैठन
४३.	पाचौड़
४४.	अंबड
४५.	देवलगांवराजा
४६.	भोकरदन
४७.	सिल्लोड
४८.	जिंतूर
४९.	बोरी
५०.	शिरडशाहपुर
५१.	नादेड़
५२.	बसमत
५३.	सेलू

इन नामों के पश्चात् मैंने अन्य नगरों के साथ वहाँ के जैन घर और मंदिरों की संख्या भी लिखना शुरू कर दिया अतः उन्हें यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

		घर	मंदिर
५४.	मानवत	६०	४
५५.	परभणी	२५०	१
५६.	परली	८०	१
५७.	अंबेजोगाई	७५	१
५८.	लातूर	३५०	१
५९.	मुरुड	१००	२
६०.	तेर		
६१.	कुंथलगिरि		
६२.	वार्शी	२००	१
६३.	करमाला	१००	२
६४.	पंढ़रपुर	२८०	२
६५.	अकलूज	२५०	४

क्र.सं.	स्थान	घर	मंदिर
६६.	मालसिरस	२२	१
६७.	सदाशिवनगर	१०	
६८.	नातेपुते	१०५	१
६९.	बारामती	२२५	१
७०.	फलटन	२५०	५
७१.	गोरेगांव		
७२.	मलार्ड		
७३.	कांदीवली		
७४.	मलार्ड (पू.)		
७५.	मलार्ड (प.)		
७६.	अंधेरी (प.)		
७७.	खार पं.		
७८.	कुर्ला पं.		
७९.	साकीनाका		
८०.	मुंबई (मुख्य)		
८१.	माटूंगा		
८२.	घाटकोपर		
८३.	विक्रोली		
८४.	भांडुप		
८५.	मुलुंड		
८६.	थाना		
८७.	डोबीवली		
८८.	विरार		
८९.	वार्शी		
९०.	भिवड़ी		

क्र.सं.	स्थान
९१.	नालासोपार
९२.	भयंदर (प.)
९३.	मीरारोड (प.)
९४.	दहिसर
९५.	बोरीवली
९६.	बोरीवली (पं.)
९७.	निगड़ी
९८.	पूना
९९.	सतारा
१००.	इस्लामपुर
१०१.	किनी
१०२.	पेठबड़गांव
१०३.	नोगांव
१०४.	हालोडी
१०५.	चोकाक
१०६.	हाथकंणगले
१०७.	माणगांव
१०८.	आलतें
१०९.	कुंभोज
११०.	हिगंणगांव
१११.	कवठेसार
११२.	नेंज
११३.	कोल्हापुर
११४.	वलीवडे
११५.	चिचवड़

क्र.सं.	स्थान	घर	मंदिर
११६.	बसगढ़े		
११७.	सांगोड़ा		
११८.	पट्टन कोडोली		
११९.	इंगड़ी		
१२०.	हुपरी		
१२१.	रांगोली		
		घर	**मंदिर**
१२२.	इचलकरंजी	८००	४
१२३.	शिरदवाड़	२५०	१
१२४.	अब्दुललाट	४००	२
१२५.	धोसरवाड	२५०	१
१२६.	दतवाड़	५००	२
१२७.	जूनादत्तवाड	१००	१
१२८.	अकिवाट	५००	१
१२९.	कुरूदंवाड	४००	१
१३०.	आलास	२५०	१
१३१.	गणेशवाडी	२००	२
१३२.	हसूर	–	१
१३३.	शिरटी	५००	१
१३४.	नांदणी	–	–
१३५.	कोथली	५००	१
१३६.	उमणवाड	१५०	१
१३७.	दानोली	५००	१
१३८.	चिपरी	३००	१
१३९.	जैनापुर	८५	१

क्र.सं.	स्थान	घर	मंदिर
१४०.	जयसिंहपुरा	–	४
१४१.	कस्बेडिग्रज	–	२
१४२.	समडोली	५००	३
१४३.	कवठेपिरान	–	१
१४४.	दूधगांव	१०००	२
१४५.	आष्टा	१०००	४
१४६.	वणवा	५००	१
१४७.	बसगडे	४००	२
१४८.	ब्रह्मनाल	५००	१
१४९.	नांद्रे	८००	१
१५०.	माधवनगर	१००	१
१५१.	कुपवाड़	५००	२
१५२.	सांगली		
१५३.	मिरज	३००	३
१५४.	म्हैशाल	३५०	१
१५५.	टाकली	१५०	१
१५६.	बोलवाड़	१५०	१
१५७.	गांधीनगर	१००	१
१५८.	एरनडोली	१००	१
१५९.	माणगांव	३००	१
१६०.	कलंवी	१५०	१
१६१.	भौंसे	२५०	२
१६२.	हिगंणगांव	२००	१
१६३.	सोलापुर	३०००	५
१६४.	तुलजापुर	२०	१

क्र.सं. स्थान	घर	मंदिर
१६५. उस्मानाबाद	२००	२
१६६. बीड	१००	२
१६७. गेवराई	७०	१
१६८. आडुल	३५	१
१६९. कचनेर	२५	१
१७०. औरंगाबाद		

महाराष्ट्र प्रदेश प्रवर्तन समिति

साहू श्री शरद कुमार जैन, मुम्बई —संरक्षक
श्री आर.के. जैन, मुम्बई —संरक्षक
सरदार श्री चन्दुलाल जैन शहा, मुम्बई —संरक्षक
श्री शिखरचंद पहाड़िया, मुम्बई —संरक्षक
जयचंद कासलीवाल, चांदवड़ —अध्यक्ष
बी.बी.पाटिल, कोल्हापुर —कार्याध्यक्ष
जीवनदादा पाटील, कासार सिरसी —स्वागत अध्यक्ष
रमनलाल कोदरमल दोशी, मुम्बई —उपाध्यक्ष
कैलाशचंद रणदिवे, मुम्बई —उपाध्यक्ष
डी.यू. जैन, मुम्बई —उपाध्यक्ष
जे.के. जैन बोरीवली, मुम्बई —उपाध्यक्ष
धर्मचंद गंगवाल, मुम्बई —उपाध्यक्ष
डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल, पैठण —महामंत्री
एडवोकेट शांतिलाल काला, परभणी —मंत्री
माणिकचंद रूपचंद वडूजकर, बारामती —मंत्री
भरत कुमार काला, मुम्बई —प्रचार मंत्री
राजेन्द्र पहाड़े, पत्रकार, नासिक —प्रचार मंत्री
प्रदीप ठोले पत्रकार, सटाणा —प्रचार मंत्री

मिलिंद रत्नाकर फडे, पुणे —संयोजक
सी.आर.दोशी, सोलापुर —संयोजक
डी.ए. पाटिल, कोल्हापुर —संयोजक
मतिसागर पाटील, कासारसिरसी —संयोजक
तेजपाल जी झांझरी, औढ़ानागनाथ —संयोजक

कार्यकारिणी सदस्य

माणिकचंद कासलीवाल, नांदगांव
जयचंद पाटनी, नासिक
धन्नाला दगड़े, नासिक
राजेन्द्र कुमार पाटनी, गजपंथा नासिक
माणिकचंद पहाड़े, मालेगांव
प्रदीप कुमार ठोले, सटाणा
प्रमोद कुमार जैन, धूलिया
हुकमचंद गंगवाल, धूलिया
मदनलाल पाटनी, धूलिया
लालाभाई अरविंद जैन, धूलिया
अरुणकुमार पन्नालाल जैन, कुसुम्बा
सतीश जमनला जैन, सोनगीर
रविन्द्र कुमार जैन, नंदुरबार
पवन कुमार जैन, नंदुरबार
बाबुभाई जैन, नंदुरबार
बाजीराव जैन, जलगांव
मोहनगांधी, धरणगांव
महेन्द्र कुमार चांदीवाल, जलगांव
रतनलाल पहाड़े, अमलनेर
रवीन्द्र कुमार जैन

प्रकाशचंद जैन शाह
सतीश जैन, धरणगांव
कैलाश शिखरचंद जैन, चोपड़ा
अनिल श्रीचंद जैन, पारोला
महावीर मारले, बड़गांव
नंदलाल सेठी, चालीसगांव
एडवो. जम्मनलाल कासलीवाल, औरंगाबाद
एडवो. इंदरचंद ठोले, औरंगाबाद
जगदीश सावजी, औरंगाबाद
तनसुखलाल ठोले, सज्जनपुर
गौतमचंद आहेरकर, औरंगाबाद
भागचंद लखीचंद सेठी, औरंगाबाद
महावीर विनायके, औरंगाबाद
माणिकचंद गंगवाल, औरंगाबाद
एडवो. ब्रजनंद जैन, औरंगाबाद
कस्तूरंचद बड़जात्ये, औरंगाबाद
रावसाहेब पाटील, सोलापुर
कल्लप्पा अवाड़े, इचलकरंजी
प्रकाश आवाडे, इंचलकरंजी
डॉ. सुभाषचंद्र अकोले, जयसिंगपुर

मा. बापूसाहेब पाटील, ठाणे
शांतिनाथ पाटील, कोल्हापुर
अशोक पाटील, कोल्हापुर
देवेन्द्र कुमार काला, औरंगाबाद
सुधाकर सावजी, औरंगाबाद
श्रीमती अंजनाबाई अजमेरा, औरंगाबाद
शांतिनाथ जोसावी, औरंगाबाद
सुरेश कुमार ठोले, औरंगाबाद
डॉ. प्रकाशचंद पापड़ीवाल, औरंगाबाद
पन्नालाल गंगवाल, एलोरा
डॉ. सुगनचंद कासलीवाल, उमापुर
हीरालाल मोतीलाल कासलीवाल, कुंभार, पिपलगांव
गुलाबराव दिगम्बरराव लुगारे, कुंभार, पिपलगांव
शरद कुमार फूलचंद पहाड़े, श्रीरामपुर
डॉ. गुलाबचंद कासलीवाल, ओझर
डॉ. अनिल कुमार गंगवाल टाकलीभाल
बबनलाल कासलीवाल, अडुल
नरेन्द्र कुमार साहुजी, जिंतुर
मूलचंद बड़जात्ये, वर्धा
शांतिनाथ सिघलकर, देवलगांवराजा
पदमकुमार साहूजी, देवलगांवराजा
कन्हैयालाल खेडकर, नागपुर
दिनकरजी महाजन, शेगांव
शरदकुमार कांतिलाल संघवी, चौपड़ा
रतनचंद सखाराम, सोलापुर
कस्तूरचंद गुलाबचंद गांधी, सोलापुर
डॉ. रिखबचंद पहाड़े, मनमाड
अजित कुमार बड़जात्या, मनमाड
प्रो.पारस कुमार काला, लातुर
दीपक कुमार अजमेरा, लातुर
नेमीचंद बड़जात्या, सटाणा
एडवोकेट जयचंद कासलीवाल, नांदगांव
मूलचंद लोहाड़े, नांदगांव
कल्याणमल दोशी, मालेगांव
डॉ. देवेन्द्र लाड, मालेगांव
रवीन्द्र पहाड़े, मालेगांव
कल्याणमल गंगवाल सी.ए., मालेगांव
मोहनलाल कासलीवाल, मालेगांव
विजय कुमार फूलचंद शाह, लातुर
प्रभाकर आ. देशमाने, लातुर
सुधाकर शंकरराव पांगल, लातुर
अजित हीरालाल आनंदकर, लातुर
श्रीपाल जैन, अंगारवाला, भुसावल
महावीर झुंबरलाल बड़जात्या, अहमदनगर
भीकमचंद पन्नालाल परवारपुरा, नागपुर
अशोक कुमार कोमलचंद जैन, नागपुर
चंद्रशेखर उखलकर, शिरपुर
शीलचंद फूलचंद जैन, नागपुर
केशरीचंद कन्हैयालाल जैन, कामठी (नागपुर)
भरत पन्नालाल देवडिया, नागपुर
दरबारीलाल कपूरचंद वडकर, नागपुर

दीपक शंकरराव आहेरकर, उस्मानाबाद
सुभाषचंद तुलाराम जैन, शिरपुर
शशिकांत चंवरे, कारंजा
श्रीपालचंद बिलाला
राजाभाऊ, डोणगांवकर, कारंजा
यशवंत इंगोले, अकोला
एडवोकेट माणिकचंद बज, वाशिम
राजेन्द्र कुमार पाटनी, एम.एल.ए, वाशिम
एडवोकेट सुरेश कुमार बाकलीवाल, वाशिम
कैलाशचंद पाटनी, वाशिम
मदनलाल छाबड़ा, वाशिम
महेन्द्र कुमार कैलाशचंद पाटनी, अकोला
सतीश संघई, अमरावती
सुरेशचंद दे, बोबड़े अमरावती
नाना आत्माराम चांदुरकर, वाघोड़ा
मनोहर पंत परसराम, अरवाड़े, कारंजा
बसंत के. वडंनेरकर, नागपुर
राजेन्द्र कुमार, प्रेमचंद जैन, अमरावती
राजकुमार माणिक सा., अमरावती
एडवोकेट उज्वलताई के. रोकड़े, अकोला
गुलाबचंद गंगवाल, परतवाडा
कमल कुमार नेमीचंद पापड़ीवाल, परतवाड़ा
राजाभाऊ पेडारी
माणिकचंद उहापुरकर
सुंदरलाल साहूजी जैन, नागपुर
संतोष कुमार पाटणी, नागपुर
हुकुमचंद जैन, नागपुर
भगवतकर, नागपुर
धन्यकुमार रामचंद्र मेहता, मंगरूल
डॉ. विश्वनाथ बोपलकर, बार्शी
विजयकुमार मोतीलाल मादेकर, बार्शी
बाहुबली कणेकर, बार्शी
केशरीनाथ वाडुजकर, परली
महावीर छोडके, माजलगांव
कांतिलाल छोडलकर, गेवराई
पन्नालाल गंगवाल, गेवराई
बी.एन. नरूले, कुडल, सांगली
विलास कुमार मिश्री लाल पहाड़े, पैठण
मोतीलाल पलसदेवकर, सोलापुर
सुरेश हीराभाई बार्शी
शांतिलाल लोहाडे, कोपरगांव
सी.बी. गंगवाल, गोपरगांव
महिला मंडल एवं नवयुवक मंडल, कोपरगांव
सूरजमल गंगवाल, शिर्डी
हीरालाल चूड़ीवाल, श्रीरामपुर
बाबूलाल कासलीवाल, श्रीरामपुर
धीरजमल कटारिया, अहमदनगर
किशोर कुमार शांतिलाल गंगवाल
डॉ. कल्याणमल गंगवाल, पुणे
मोहनलाल कासलीवाल, पुणे
जीवराज फूलचंद जैन, फलटणकर, पुणे
सी.आर. पाटील, पुणे

शरद गंगाराम, दोशी, फलटण
जम्बूकुमार सर्राफ, बारामती
राजाभाऊ वाडीकर, बारामती
माणिकचंद तुलजाराम शाह, बारामती
श्रीमती लता अजित शहा, पूणे
डॉ. आर.बी. फडे, पंढरपुर
माणिकचंद भाई रामचंद्र भाई लेजरेकर, पुणे
जितेन्द्र शहा, पूणे
हिम्मतलाल मोहनलाल गांधी, फलटण
ज्ञानचंद रूपचंद दोशी, फलटण
सुभाषभाई गांधी, फलटण
सुवालाल सोनी, पुलगांव
भिसीकर गुरुजी, कुंभोज बाहुबली
श्रीमती सरोजनीताई खंजीरे, इंचलकरंजी
डॉ. प्रतिमा शेट्टी, इचलकरंजी
पाटनी ब्रदर्स, इचलकरंजी
डॉ. विजय कुमार शहा, सातारा
विजय कुमार रणदिवे, सातारा
महावीर पाटील, सांगली

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार समिति मुम्बई-थाणा महानगर संभाग

आर.के. जैन मुम्बई — अध्यक्ष
योगेश जैन, गोरेगांव — स्वागताध्यक्ष
शिखरचंद पहाड़िया, मुबई — कार्याध्यक्ष
भरतकुमार काला विक्रोली — महामंत्री

उपाध्यक्ष

सरदारी लाल जैन, गोरेगांव
सरदार चन्दुलाल हिराचंदशाह, वरली
धन्यकुमार ठाकुरदास झवेरी, मुम्बई
अशोक भाई साखरलाल शाह, गोरेगांव
जसुभाई शाह, गोरेगांव
अमृतलाल भाई शाह, गोरेगांव
पंकज जैन अत्तरवाला, गोरेगांव
माणिकचंद जैन छाबड़ा, गोरेगांव
जम्बूकुमार कासलीवाल, मुम्बई
रमणलाल कोदरलाल दोषी, मुम्बई
सुश्री गुणमालाबेन झवेरी, मुम्बई
आशादेवी महेन्द्र कुमार पांड्या, मुम्बई
मदनलाल पाटनी, मुम्बई
सुरेशचंद पहाड़िया, मुम्बई
जमनालाल ओंकारमल जैन, मुम्बई
डा. रमणीक बक्षी, मुम्बई
ज्ञानचंद मुन्नालाल जैन, मुम्बई
अशोकभाई मेहता, (सी.ए.), मुम्बई
के.सी. (सी.ए.), मुम्बई
चिंरजीलाल बक्षी, मुम्बई

टिकमचंद पहाड़िया, मलाड़, मुम्बई
डी.सी. जैन, मुम्बई
राजकुमार दोषी, मुम्बई
प्रेमचंद जैन, मुम्बई
चिंतामणी बज, मुम्बई
किरणभाई गांधी, मुम्बई
अजितभाई बड़जात्या, मुम्बई
ज्ञानचंद एन.सेठ, मुम्बई
अजित जैन मिंडा, मुम्बई
श्रीमती बेला धरम गोधा, मुम्बई
हीरालाल चन्दूलाल, मुम्बई
ज्ञानेन्द्र जैन, ताड़देव, मुम्बई
बाबूलाल सोमचंद, मुम्बई
भागचंद जैन, नागदा
प्रकाशचंद जैन अग्रवाल, कफपरेड
बसंतीलाल चंपालाल देवड़ा नागदा, भायखला
सोहनलाल जैन, वडाला
कांतिलाल भुरे, दादर
के.ए. शेट्टी, प्रभादेवी
भूपेन्द्रभाई, हुमड़, विलेपार्ले
नलिनीशाह, विलेपार्ले
रतिलाल भाई शाह, खार
कांतिलाल झवेरी, माहिम
चांदमल बंडी, सांताक्रुज
प्रकाशचंद छाबड़ा, सांताक्रुज
सुभाष बोहरा, जूहू
सत्यनारायण जैन, लोखड़वाला काम्पलेक्स
श्रीमती शोभारानी जैन, अंधेरी
श्रीमती शिला आर. गांधी, अंधेरी
स्वरूपचंद जैन, अंधेरी
धमरचंद गंगवाल, जे.बी. नगर
बसंतीलाल किकावत, साकीविहार रोड
पवनकुमार जैन, फिल्मसिटी रोड
जयकुमार दिवाण छाबड़ा, मालाड
राजकुमार जैन, एव्हरसाइन नगर
राजकुमार पहाड़िया, एव्हरसाइन नगर
अमृतलाल जैन, मालाड
राजेश जैन, मालाड
जयंतीलाल नेमचंद मालाड
ओमप्रकाश जैन, बोखिली
डा. सुरेन्द्र कोटड़िया बोखिली
अजित सोमचंद, बोरिवली
कांतिलाल भुता, बोरिवली
अभयकुमार काला, बोरिवली
जीवधंर के. जैन, बोरिवली
रमेशचंद कोटड़िया, बोरिवली
माणिकचंद कपूरचंद जैन, बोरिवली
शांतिलाल बज, बोरिवली
पं. प्रदीप जैन प्रतिष्ठाचार्य, बोरिवली
दीपक ताराचंदशाह, बोरिवली
शांतिलाल जैन कासलीवाल, सायन
मोहिनचंद झवेरी, माटुंगा

संपत पाटनी, योगीनगर
उमेदमल काला, योगीनगर
तरुण काला, योगीनगर
पोपटलाल भाई जैन, माटुंगा
जीवराज भाई.के. गांधी, कुर्ला
प्रशांत पिराले, काजूपाडा
के.पी. जैन नागदा, कुर्ला
के.पी. जैन, चेम्बूर
महेन्द्र बंडी, घाटकोपर
डी.यू. जैन, घाटकोपर
गुलाबचंद, ठोलिया, घाटकोपर
नेमीचंद पाटनी, घाटकोपर
जयकुमार शाह, घाटकोपर
प्रशांत शाह, घाटकोपर
प्रकाश जैन, भांडुप
कैलाश रणदिवे, मुलुंड
महावीर गांधी, मुलुंड
ज्ञानचंद बड़जात्या, थाना
तेजपाल जैन, थाना
बापू पाटील, थाना
पाचूलाल पहाड़िया, थाना
ताराचंद पाटनी, थाना
अशोक शाह, थाना
बी.एस. कोरड़े, कलवा
रमणलाल कासलीवाल, डोंबिवली
हिरालाल बुबणे, डोंबिवली
एन.सी. जैन, नवी मुम्बई
प्रो. कृष्णा गोसावी, नवी मुम्बई
शांतिलाल रारा, भिवंडी
आनंद काला, भिवंडी
राजेन्द्र प्रसाद जैन, भिवंडी
कन्हैयालाल पहाड़िया, भिवंडी
कल्याणमल जैन, सर्राफ, भिवंडी
भंवरीला जैन, बालावत, मिरारोड
नेमीचंद झांझरी, मिरारोड
बसंतभाई गांधी, दहिसार
रसिकलाल भाई कोटड़िया, दहिसर
जयंतिलाल जैन, विरार
पोपटलाल के.शाह, भायंदर

प्रवर्तन सहयोगी

महिपाल जैन, बोरिवली
महावीर सेठ, बोरिवली
सुधीर जैन,एव्हरसाइन नगर
अनिल बंडी, विलेपार्ले
सुरेश गदिया, मुम्बई
प्रकाशचंद छाबड़ा, सांताक्रुज
भुरीलाल जैन, कांदीवली
अशोक जैन, भुलेश्वर
ललित बी. जेजावत, मालाड
सनत कुमार दोशी, नालसोपारा
मयंक जैन, गोरेगांव

G G G G G

उत्तर प्रदेश प्रवर्तन कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश प्रवर्तन राजधानी लखनऊ से हुआ। निरन्तर ६ प्रदेशों में भ्रमण करता हुआ रथ उ.प्र. में आया। प्रतिभा सिनेमा में समवसरण की स्वागत सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने की। मुख्य अतिथि श्रीलाल जी टंडन (नगर आवास विकास मंत्री उ.प्र. सरकार) थे। विशिष्ट अतिथि-श्री ओमप्रकाश सिंह (सिचाई मंत्री), श्रीमती सीमा रिजवी (उच्च शिक्षामंत्री), श्री अरविन्द जैन (चिकित्सा मंत्री), डा. एस.सी.राय (नगर प्रमुख) श्री राजेन्द्र तिवारी (निगम अध्यक्ष) व प्रांतीय पदाधिकारी थे।

बहुत हर्ष एवं उल्लास का वातावरण था। कार्यक्रम की तैयारी पूर्व से थी। श्री ओमप्रकाश सिंह सिचाई मंत्री उ.प्र. सरकार ने दीप प्रज्जवल कर सभा का शुभारंभ किया। माननीय लाल जी टंडन ने अहिंसा शाकाहार पर बल दिया। ओमप्रकाश सिंह ने जैन सिद्धांत को अमर सिद्धांत बताया। सुश्री रिजवी ने कहा कि सभी धर्म अनुशासन सिखाते हैं तथा बिना अहिंसा के देश में अनुशासन नहीं बन सकता। डा. अरविन्द जैन ने जैनधर्म की प्राचीनता पर बल दिया। ब्र. रवीन्द्र जी ने रथयात्रा के उद्देश्यों पर बल दिया। तत्पश्चात् उ.प्र. प्रवर्तन के लिए लालजी टंडन ने हरी झंडी दिखायी। शोभायात्रा प्रारंभ हो गयी। खूब स्वागत के साथ शोभायात्रा निकली। शोभायात्रा डालीगंज में सम्पन्न हुयी। लखनऊ की अनेक कालोनियों में भव्य स्वागत हुआ।

दरियाबाद ग्राम में उत्साहपूर्वक जैन एवं जैनेतर लोगों ने भाग लिया। सुमेरगंज में मेनरोड पर सभा हुयी। मुख्य अतिथि श्री रतनप्रकाश जी पुलिस अधीक्षक रामस्नेही घाट थे। बाराबंकी में रात को रथ पहुँचते ही भव्य स्वागत हुआ। सभी लोगों ने आरती करी। प्रातः सभा मंदिर जी में हुयी। बोलियां हुयी। सभा में पूज्य आर्यिका श्री चंद्रमती माताजी व आर्यिका श्री दक्षमती माताजी व आर्यिका सौरभमती माताजी विराजमान थी। पू. माताजी के प्रवचन हुए। मध्यान्ह में सारे नगर में जुलूस घुमाया गया। श्री चंद्रिकाराय एस.पी. ने नगर प्रवर्तन के लिए हरी झंडी दिखाकर

किया। शोभायात्रा बड़े उल्लास के साथ निकली। शोभायात्रा मार्ग में जगह-जगह गेट व बैनर लगे थे। जगह-जगह आरती हुयी। दोनों रथों को फूलों व नारियलों से लाद दिया। सभी का सामुहिक भोज हुआ। रथ गणेशपुर पहुँचा। यहाँ पर आचार्य सिद्धान्त सागर जी विराजमान थे। सर्वतोभद्र विधान चल रहा था। शोभायात्रा बहुत अच्छी निकली आसपास के ग्राम के लोग सम्मिलित हुए।

यहाँ से रथ हरदोई पहुँचा। सभा प्रातः ९ बजे रेलवे रोड पीताम्बर गंज मेनरोड पर बने पांडाल में हुयी। मुख्य अतिथि श्री नरेश अग्रवाल ऊर्जा मंत्री उ.प्र. सरकार थे। उपस्थित बहुत अच्छी थी। माननीय मंत्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज ऐसी सभा में आकर मैं धन्य हो गया। आज से मैं कभी भी मांसाहार नहीं करूँगा एवं अपने साथ आये लोगों से भी निवेदन किया। रथ पर स्वास्तिक बनाकर एवं हरी झंडी दिखाकर रथ का प्रारंभ किया। उत्साहपूर्वक रथ सारे नगर में घुमाया गया। जगह-जगह स्वागत बैनर लगे थे गेट बने थे।

यहां से सिधौली, बिसवा, महमूदाबाद होते हुए रथ तहसील फतेहपुर पहुँचा।

सारे अवध की निगाहें जिस कार्यक्रम पर लगी हुई थी यह वह नगर है। क्योंकि सारे अवध की बागडोर संभाले हुए था यह नगर। क्योंकि यहां के श्री सरोज कुमार जैन पूज्य माताजी के अनन्य भक्त एवं समवसरण श्री विहार रथ के अवध प्रांतीय कमेटी के अध्यक्ष थे। सबसे शानदार कार्यक्रम यहाँ पर हुआ। सभा का कार्यक्रम अशोक जैन की मिल पर हुआ। सभाध्यक्ष श्री प्रकाशचंद जैन सर्राफ सनावद थे। मुख्य अतिथि श्री धनराज यादव उद्यानमंत्री भारत सरकार थे। विशिष्ट अतिथि श्री कर्णवीर जैन प्रबंधक एस.बी.आई थे। मंत्री जी ने अपने ओजस्वी भाषण में समाज की वर्तमान दशा पर प्रकाश डालते हुए धर्म की ओर युवा पीढ़ी का ध्यान आकर्षित किया। पूरे कार्यक्रम का मंच संचालन विजय जैन पत्रकार ने किया। सारे कार्यक्रम की व्यवस्था व स्वल्पाहार श्री अशोक जैन की तरफ से था। जिनका सम्मान केन्द्रीय समिति की ओर से कैलाशपर्वत की कृति भेंट कर सम्मान किया गया। शोभायात्रा पूरे नगर में घुमायी। जगह-जगह स्वल्पाहार की व्यवस्था थी।

प्रसाद वितरण हो रहा था। सैकड़ों गेट व बैनर लगा कर रथ का स्वागत किया। शोभायात्रा ऋषभदेव मार्ग पर जाकर सम्पन्न हुयी। यहाँ पर एक मार्ग का नाम भगवान ऋषभदेव मार्ग रखा गया। जिसके शिलापट का अनावरण श्रीमती डा. बीना बंसल (राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय महिला व बाल संगठन) व कुंवर कृष्ण बंसल अपर पुलिस महानिदेशक उ.प्र. के कर कमलों से हुआ। शोभायात्रा सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। सभाध्यक्ष श्रीमती बीना बंसल व मुख्य अतिथि श्री चंद्रिकाराय (पुलिस अधीक्षक बाराबंकी) थे। मंचासीन श्री रज्जूमल जैन (मुख्य संयोजक अवध प्रांतीय समिति) कुंवर सेन जैन बहराइच, विजय जैन बहराइच, के.के. जैन पत्रकार, सरोज जैन (अध्यक्ष) अशोक जैन महावीर राइस मिल थे। सभी बालकों से लेकर वृद्धों तक का सहयोग प्राप्त हुआ।

केन्द्रीय समिति ने श्री सरोज जैन को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं अशोक जैन के प्रति आभार व्यक्त किया। संपूर्ण फतेहपुर की जैन समाज को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद प्रेषित किया गया।

समवसरण त्रिलोकपुर होते हुए बहराइच पहुँचा। बहराइच समाज ने स्वागत के साथ अगवानी करी। उत्साह बहुत अच्छा था। सभा पूर्व संध्या पर हुई। ऐलक श्री गोसलसागर जी महाराज विराजमान थे। मुख्य अतिथि श्री विमल कुमार वाजपेई पुलिस अधीक्षक थे। श्री वाजपेयी सभा में आकर अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि जब मैं मेरठ में था तब पू. माता जी के दर्शन महीने में एक बार अवश्य करता था। आज मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस अवसर पर आमंत्रित किया गया। सांसद श्री पदम चंद चौधरी ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करी।

प्रतापगढ़ में नगर पालिका अध्यक्ष ने हरी झंडी दिखाकर शोभायात्रा का शुभारंभ किया। अति उत्साह के साथ शोभायात्रा निकाली गयी।

कटरा मेदनीगंज में सभा मंदिर जी के बाहर बने विशाल पंडाल में हुयी। सभाध्यक्ष श्री वी.के. जैन मुख्य न्यायाधीश थे। मुख्य अतिथि श्री हरिप्रताप सिंह नगर पालिका अध्यक्ष थे। विशिष्ट अतिथि श्री उमादेवी गुप्ता चेयरमैन कटरा थी।

वह शरद पूर्णिमा का पावन दिन था जब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का ६७वां जन्मदिवस था। सभी समाज ने माताजी की जयंती मनाई व ६७ लोगों को पुरस्कार दिया। चेयरमैन जी ने इस मार्ग का नाम ऋषभदेव मार्ग कर दिया। शोभायात्रा बहुत धूमधाम से निकली।

रायबरेली में मंदिर नहीं है, एक गृह चैत्यालय है। सभा में उपस्थिति अच्छी थी। यहां पर आज तक कभी भी कोई शोभायात्रा नहीं निकली। कभी कोई रथ नहीं आया। बहुत उत्साह के साथ सारे नगर में शोभायात्रा घुमायी गयी।

बड़ी भक्ति के साथ अवध प्रांत में रथ घूमा। हर गांव वालों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तों को लोगों ने घर-घर सुना। ऐरावत हाथी का रथ अजैन लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र था। खूब श्रद्धा एवं भक्ति से रथ का स्वागत-सत्कार कर अपने को धन्य माना।

मैनपुरी समवसरण पहुँचने पर भव्य स्वागत कर अगवानी करी। सभा बड़े मंदिर जी के प्रांगण में हुयी। परम पूज्य मुनि श्री अमितसागर जी महाराज ससंघ विराजमान थे। सभा की अध्यक्षता पं. श्री शिवचरन लाल जी कर रहे थे। मुख्य अतिथि श्री ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन हस्तिनापुर, कैलाशचंद जैन करोलबाग, प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद थे। मंच संचालन डा. सुशील जैन ने किया। पं. श्री शिवचरण लाल जी ने अपने उद्‌बोधन रथ को समाज के लिए एक उपलब्धि बताया। प्राचार्य जी अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा समवसरण यात्रा की प्रशंसा करी। डा. मालती जैन ने कहा कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी व आर्यिका श्री चंदनामती माताजी भगवान ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी व सुंदरी के सदृश हैं।

पू. महाराज जी ने सभी के लिए मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। शोभायात्रा मार्ग में माननीय जिलाधीश आर.के. रस्तोगी ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। शोभायात्रा मार्ग में जगह-जगह बैनर व गेट लगे थे। खूब आरती व स्वागत हुआ। यहां से रथ कुरावली, भौगांव होता हुआ सराय अगहत पहुँचा। यहां पर समाज के ३ घर है लेकिन बहुत सुंदर व भव्य कार्यक्रम किया। बहुत भक्ति से रथ का

स्वागत किया।

कायमगंज, अलीगंज होते हुए एटा पहुँचे। स्वागत सभा का कार्यक्रम मेहता पार्क में हुआ। विशाल पंडाल बना हुआ था। सभा में गणिनी आर्यिका विशुद्धमती माताजी ससंघ विराजमान थी। अत्यधिक उत्साहपूर्वक स्वागत किया। युवा संगठन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कासगंज, बिलराम, सकीट, घिरोर, अरांव, सिरसागंज होते हुए करहल पहुँचे। यहां पर समवसरण का स्वागत करने अनिल यादव विधायक पधारें। इटावा में नगर पालिका में सभा हुयी। श्री जयवीर सिंह भदौरिया विधायक ने रथ का स्वागत किया।

जसवंतनगर, होते हुए शिकोहाबाद पहुँचे। यहाँ पर मुनि श्री चैत्यसागर जी महाराज के सानिध्य में सभा हुयी। फिरोजाबाद में छदामीलाल जी की निशिया पर स्वागत सभा हुयी। बहुत विशाल मंदिर है। मंदिर का प्रांगण काफी बड़ा है। पूरा प्रांगण खचाखच भरा हुआ था। रथ का खूब स्वागत सत्कार हुआ। सभा में मुख्य अतिथि श्री रघुवर दयाल वर्मा विधायक (पूर्व वनमंत्री) थे। प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी के ओजस्वी भाषण हुए। पूज्य आर्यिका श्री बाहुबली माता जी के प्रवचन हुए। शोभायात्रा में खूब प्रसाद का वितरण हुआ।

राजाताल, टूण्डला, फरिहा, कोटला, अवागढ़, जलेसर बरहान होते हुए हम एत्मादपुर पहुँचे। एत्मादपुर में विशाल तीमूर्ति विराजमान है। अच्छा मनोरम क्षेत्र बना हुआ है। सभा मंदिर जी में हुयी। सभा में पूज्य मुनिश्री पुण्य सागर जी महाराज विराजमान थे। पूज्य महाराज जी ने अपने प्रवचन में कहा कि पूज्य माताजी ने धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए जो प्रयास किया है वह एक सशक्त कदम है एवं सारे देश के लिए अनुकरणीय विषय है। आज धर्म की रक्षा के लिए सभी को तत्पर रहना चाहिए। कार्यक्रम भक्तिपूर्वक हुआ।

शौरीपुर बटेश्वर, जैतपुर कला, बाह होते हुए शमशाबाद पहुँचे। उस समय नगर पालिका चुनाव हो रहे थे। शमशाबाद में शोभायात्रा के सभी पार्टी वालों ने अपने-अपने कार्यालय में रथ का स्वागत किया। फल एवं मीठा वितरण कर

आरती एवं स्वागत किया।

मथुरा, कोसी, हाथरस, सासनी, सिकन्दराऊ, हरदुआगंज, अतरौली, अलीगढ़, खुर्जा, बुलंदशहर शिकरपुर होते हुए। कन्नौज नगर में समवसरण रथ पहुँचा। समाज में उत्साह अच्छा था। आज ही इस रथ की प्रेरणास्रोत परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ नगर में आगमन हुआ। जब से रथ दिल्ली से निकला था तब से आज ये प्रथम अवसर था जब पूज्य माताजी का साक्षात् सानिध्य मिला था। कन्नौज वालों को ये स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ था।

सभा मध्यान्ह १ बजे ऋषभ शिक्षा निकेतन में प्रारंभ हुई। सभाध्यक्ष श्री सवाई लाल जैन व मुख्य अतिथि श्री ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर) व अनिल जैन प्रीत विहार दिल्ली थे। मंच पर पूज्य माताजी ससंघ विराजमान थीं। आज पूज्य माताजी का केशलोंच भी हुआ। खूब भक्ति के साथ कार्यक्रम हुआ। शोभायात्रा के साथ माताजी ससंघ चली। रथ का खूब स्वागत हुआ।

आगरा में कमलानगर में प्रथम कार्यक्रम हुआ। दूसरे दिन छीपीटोला में मुनिश्री पुण्यसागर जी विराजमान थे। मुख्य अतिथि श्री वी.के. जैन वरिष्ठ जेल अधिकारी थे। शोभायात्रा बहुत बड़ी एवं सुन्दर निकली। तीसरे दिन हरी पर्वत मंदिर परिसर में सभा हुयी। पूरा ग्राउन्ड खचाखच भरा हुआ था। सभा में मुनि श्री पुलक सागर जी विराजमान थे। मुनि श्री के ओजस्वी प्रवचन हुए। पूज्य महाराज जी अपने प्रवचन में जम्बूद्वीप रचना एवं ज्ञानमती माताजी की खूब प्रशंसा करी। आगरा में आगरा दिगम्बर जैन परिषद वालों का बहुत सहयोग प्राप्त हुआ।

बहजोई, चंदौसी, बिलारी, कुन्दरकी, मुरादाबाद बिलासपुर, मसवासी, काशीपुर, बाजपुर, हलद्वानी होते हुए बरेली पहुँचे। बरेली में समवसरण स्वागत के लिए डा. आई.एस. तोमर मेयर पधारें। सभा में आकर मेयर साहब ने अपने को धन्य माना। यहाँ से रथ कानपुर के लिए प्रस्थान कर गया।

कानपुर महानगर में रथ का भव्य स्वागत हुआ। सभा मध्यान्ह १ बजे छालसी रोड पर बने विशाल पंडाल में हुयी। सभाध्यक्ष श्री प्रेमप्रकाश जैन थे। मुख्य अतिथि

श्रीमती अनिता भट्टनागर जैन जिलाधिकारी कानपुर व आशु जैन इंकमटैक्स कमीशनर थे। परम पू. गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ विराजमान थी। पूरा पंडाल खचाखच भरा हुआ था।

सभा का शुभारंभ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के सारगर्भित प्रवचन से हुआ। इस नगर में संचालक एवं संयोजक (मेरा) का प्रशस्ति देकर स्वागत किया गया। इस यात्रा की एक कड़ी कानपुर महानगर में जुड़ी हुयी है। यह मेरी जन्मभूमि है। समाज की तरफ से सभी आगन्तुकों का स्वागत शाल, श्रीफल देकर किया गया।

इसी शृंखला में मैंने अपने उद्गार रथ के संदर्भ में व्यक्त किये। तत्पश्चात जिलाधिकारी महोदया ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं व माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने आशीर्वचन में समवसरण का महत्व बतलाया। माननीय जिलाधिकारी महोदय ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर शोभायात्रा प्रारंभ करवायी। पूरा पंडाल पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेने के लिए उमड़ रहा था।

मैं सोचता हूँ कि ये मेरा सौभाग्य है कि मेरे ही नगर में माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। क्योंकि ये गंगा-जमुना का अनूठा संगम था और माताजी भी प्रयाग की तरफ जा रही थीं। ऐसे सुअवसर कम ही प्राप्त होते हैं।

जायस होते हुए रथ पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर पहुँचा। पूरा नगर दुल्हन की तरह सजा रखा था। पू. माताजी की इस कृति का स्वागत करने के लिए हर कोई लालायित था। भव्य स्वागत के साथ आगवानी हुई। पूर्व रात्रि में रथ की आरती हुई। प्रातः मंदिर जी में सभा हुई। शोभायात्रा इतनी विशाल थी लग रहा था कि सारा गांव उमड़ रहा है। जगह-जगह मिठाई नमकीन व फल बंट रहे थे। युवक सभी नृत्य करते हुए चल रहे थे। अपने आप में एक अभूतपूर्व कार्यक्रम था। यहाँ सन् १९९४ में पूज्य माताजी द्वारा स्थापित भरतसेना का पूरे कार्यक्रम में अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।

आगे कार्यक्रम करते हुए हम लोग शाहजहाँपुर से होते हुए फरुखाबाद पहुँचे।

उत्साह बहुत अच्छा था। सभी युवाओं ने मिलकर कार्यक्रम बहुत अच्छा बनाया था। कार्यक्रम की तैयारी पूर्व से थी। सभा लोहाई रोड पर विशाल पंडाल में हुयी। मुख्य अतिथि श्री शकुन्तला गौतम मजिस्ट्रेट थी। विशिष्ट अतिथि श्री प्रवीन चंद जैन (कलकत्ता) वाले थे। सभी अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह देकर किया। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण द्वारा हुआ। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज अहिंसा की बात यदि किसी मंच से कही जाती है तो वह जैनियों के मंच से। अहिंसा जैनियों का ब्रह्मास्त्र है। प्राचार्य जी ने अपने शब्दों में कहा कि आज किताबों में भगवान महावीर को संस्थापक बताया जाता है पर भागवत के पांचवें अध्याय में भगवान ऋषभदेव का वर्णन आता है। मंच संचालन श्री अनिल कुमार मिश्रा ने किया। शोभा यात्रा बहुत भव्य एवं सुन्दर थी। ३ घंटे तक शोभायात्रा चली। कार्यक्रम को सफल बनाने में कन्हैयालाल जी व प्रदीप जी का काफी सहयोग प्राप्त हुआ।

रामपुर में श्री शिवबहादुर सक्सेना राज्यमंत्री उ.प्र. सरकार ने रथ का स्वागत किया। धनौरामंडी होते हुए अमरोहा पहुँचे। अमरोहा में पेट्रोल पम्प पर सभा हुयी। सभा में मुख्य अतिथि श्री मो. इब्राहिम मंसूरी व्यापार मंडल अध्यक्ष व एस.डी.एम. अमरोहा थे। सभा स्थल पूरा भरा हुआ था। उत्साहपूर्वक कार्यक्रम को मनाया।

नहटौर, धामपुर, शेरकोट, श्योहारा, नगीना, नजीबाबाद, कोटद्वार, कीरतपुर, बिजनौर, मीरापुर, जानसठ, होते हुए समवसरण खतौली पहुँचा। खतौली में कुन्द-कुन्द इंटर कालेज में सभा हुई। मुख्य अतिथि श्री आर.एस. चाहट एस.डी.एम. थे। शोभायात्रा में कई स्कूल के बच्चे ध्वजाएं लेकर चल रहे थे। उत्साहपूर्वक लोगों ने अपने-अपने घरों के आगे आरती उतारी।

शाहपुर बुढ़ाना, कांधला, कैराना, शामली, नानौता, रामपुर मनिहारन, इस्लामनगर, अम्बैहटा, नकुड सरसावा होते हुए सहारनपुर पहुँचे। सहारनपुर में मुख्य अतिथि श्री संजय गर्ग विधायक थे। सभाध्यक्ष श्री कुलभूषण जैन प्रिंसीपल जे.वी. इण्टर कालेज थे। माननीय विधायक जी ने दीप प्रज्जवलन कर अपनी

शुभकामनाएं प्रेषित कीं। चिलकाना सुल्तानपुर, विकासनगर होते हुए देहरादून पहुँचे।

देहरादून में सभा जैन धर्मशाला में हुई। यहां पर जुलूस अत्यधिक सुन्दर था। पाँच स्कूल की बालिकाएं चल रही थीं। अनेक झांकिया एवं मंडल नृत्य करते हुए चल रहे थे। करीब २ किमी. लम्बा जुलूस था।

रूडकी, मंगलौर, देवबन्द, बड़ौत, सुरूरपुरकला बागपत, अमीनगर सराय, बिनौली होते हुए बरनावा पहुँचे यह स्थान अतिशय क्षेत्र हैं। यहां पर आर्यिका श्री अभयमती माताजी व क्षु. शांतिमती माताजी विराजमान थीं। उन्होंने भक्तिपूर्वक दर्शन किये एवं सभी ने आरती की। सरधना में सभा में पू. श्री चारित्रभूषण जी महाराज विराजमान थे। उत्साह अच्छा था। स्कूली बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए अंत में पूज्य महाराज जी ने आशीर्वाद वचन प्रदान किये। शोभायात्रा पूरे नगर में घुमायी गई। नगर के प्रायः सभी मंदिरों पर रथयात्रा हुई। सारे कार्यक्रम में सतीश जी का सहयोग सराहनीय रहा।

हापुड़ नगर में पू. श्री पार्श्वसागर जी महाराज के सानिध्य में सभा हुई। आज गणतंत्र दिवस का पावन पर्व है। शोभायात्रा में पू. महाराज जी रथ के साथ चलें। पिलखुआ होते हुए साहिबाबाद पहुँचे। सभा में मुख्य अतिथि श्री हरिओम शर्मा नगर पार्षद थे। माननीय मुख्य अतिथि जी ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर अपनी शुभकामनाएं प्रदान कीं। ऋषभांचल तीर्थ पर ब्र. कौशल जी ने समवसरण के मध्य आकर अपना सौभाग्य माना। मोदीनगर आदि नगरों में होते हुए हम इलाहाबाद पहुँचे। इलाहाबाद नगर में महाकुंभ की काफी भीड़ थी। हर व्यक्ति कौतुहल के साथ रथों को देखता था।

उस समय भगवान महावीर का २६०० वाँ जन्मजयंती महोत्सव सारे देश के अंदर मनाया जा रहा था। केन्द्रीय एवं राज्य सरकारें बड़े उत्साह के साथ अपने-अपने स्तर से मना रही थीं। इलाहाबाद शहर के स्वरूप रानी पार्क में स्वागत सभा का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि श्री जी.बी. मेहता कुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय व कौशाम्बी के युवा जिलाधिकारी श्री पार्श्वसारथी शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती उषा मेहता थे।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ विराजमान थी। उस दिन भगवान महावीर जयंती का पावन पर्व था। पूज्य माताजी व संघस्थ साधुओं ने इन अतिथियों को सम्बोधित करते हुए उन्हें भगवान महावीर के जीवन से परिचित करवाया।

सम्मानीय अतिथियों द्वारा समवसरण श्री विहार रथ पर स्वास्तिक बनाकर रथयात्रा का शुभारंभ हुआ। विशाल शोभायात्रा थी। २६ घोड़े, हाथी, इन्द्राणियों की मंगल कलश यात्रा, महावीर अहिंसा रैली रूप २६०० बच्चों का ध्वज जुलूस जन-जन की प्रशंसा का केन्द्र बने। स्थान-स्थान पर प्रसाद वितरण व प्रतीक रूप में अनेक वस्तुए बांटी गयी। जैन समाज के प्रतिष्ठान बंद रहे। यह रथयात्रा इलाहाबाद के इतिहास में पहली बार थी। खूब सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बनारस नगर में अहिंसा रैली के रूप में समवसरण यात्रा निकाली गयी। अंत में शोभायात्रा सभा में परिणत हो गयी। अहिंसा सम्मेलन के रूप सभा हुयी। सभी धर्म के धर्मावालम्बियों ने भाग लिया। इसी के साथ उत्तर प्रदेश का प्रवर्तन सम्पन्न हो गया।

उत्तर प्रदेश एक नजर में—

यूं तो सर्वाधिक तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ एवं उनके निकटवर्ती नगरों में तो अनगिनत बार समवसरण आया होगा। पर आज इस वर्तमान समय में समवसरण की प्रतिकृति बनाकर सभी को साक्षात् दर्शन करवाने का श्रेय परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी को जाता है।

पू. माताजी ने जहां समाज को अनेक योजनाएं प्रदान कीं हैं उसी क्रम में यह एक ऐतिहासिक कदम है। जिसमें जैन-अजैन का कोई भेदभाव नहीं होता क्योंकि जिसका नाम ही समवसरण है यानी सभी प्राणियों को जहाँ समान रूप से शरण मिले वह कहलाता है समवसरण। सभी नगरों में जनता ने समवसरण का अभूतपूर्व स्वागत किया और अपने आप को धन्य माना। अनेक शासकीय अधिकारी इस सभा मे आये और गद्गद होकर गये। हरदोई नगर में उ.प्र. सरकार के ऊर्जामंत्री नरेश अग्रवाल ने इस सभा में आकर मासांहार का त्याग कर अपने जीवन को सुस्सज्जित किया। यह तो एक उदाहरण है हजारों लाखों

लोगों ने अपने हृदय में समवसरण प्रवर्तन से ज्ञानरूपी ज्योति को जलाया है जो जीवन में एक अमिट छाप है जो हृदय से कभी नहीं जायेगी। मैंने इस यात्रा के माध्यम से हजारों लोगों को सुना एवं लाखों को सुनाया है। जिसने भी इसे देखा, देखता ही रह गया।

मैं स्वयं अपने मन में सोचता हूँ कि जब समवसरण की प्रतिकृति मात्र का इतना प्रभाव है तो जिस समय वास्तविक समवसरण आता होगा तो लोगों पर क्या प्रभाव होता होगा? नगर का दृश्य कितना अद्भुत होता होगा? सभी जनता कितना हर्ष मनाती होगी? ये तो गंगा है जिसने चाहा लाभ उठा लिया और जो रह गया वो रह गया।

उत्तर प्रदेश के लगभग १३५ नगरों में समवसरण का प्रवर्तन हुआ। लगभग १५०० कि.मी. की यात्रा हुई। अत्यन्त सुन्दर एवं सफल वर्णन रहा। यह रथ सभी जीवों के लिए मंगलकारी हो ऐसी मेरी भावना है।

उत्तर प्रदेश के तीर्थ —

त्रिलोकपुर, श्रावस्ती, अयोध्या, एत्मादपुर, शौरीपुर, मथुरा, बरनावा, हस्तिनापुर, ऋषभांचल, बनारस, बड़ागांव, वहलना

साधुओं का सानिध्य—

बाराबंकी	—आर्यिका चंद्रमती, आर्यिका दक्षमती, आर्यिका सौरभमती
गणेशपुर	—आचार्य श्री सिद्धान्त सागर जी महाराज ससंघ
बहराइच	—ऐलक गोसलसागर जी
मैनपुरी	—पूज्य मुनिश्री अमित सागर जी महाराज ससंघ
एटा	—पू. गणिनी आर्यिकाश्री विशुद्धमती माताजी ससंघ
शिकोहाबाद	—पू. मुनि श्री चैत्यसागर जी महाराज
फिरोजाबाद	—आर्यिका श्री बाहुबली माताजी
एत्मादपुर	—पू. मुनि पुण्य सागर जी महाराज
कन्नौज	—परम पू. गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी ससंघ

आगरा	— पूज्य मुनिश्री पुण्य सागर जी, पुलक सागर जी महाराज
कानपुर	— परम पू. गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ
बरनावा	— आर्यिका श्री अभयमती जी व क्षु. शांतिमती जी
सरधना	— पू. मुनि चारित्र भूषण जी महाराज
हापुड़	— पू. मुनिश्री पार्श्वसागर जी महाराज
इलाहाबाद	— पू. गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ

स्वागत हेतु पधारे विशिष्ट अतिथि–

लखनऊ	— श्री लाल जी टंडन नगर आवास विकास मंत्री उ.प्र.
	— श्री ओमप्रकाश सिंह सिंचाई मंत्री उ.प्र.
	— श्री अरविन्द जैन चिकित्सा मंत्री उ.प्र.
	— सुश्री सीमा रिजवी उच्च शिक्षामंत्री उ.प्र.
	— डा. एस.सी.राय नगर प्रमुख
	— राजेन्द्र तिवारी निगम अध्यक्ष
सुमेरगंज	— श्री रतनप्रकाश पुलिस क्षेत्राधिकारी
बाराबंकी	— श्री चंद्रिका राय एस.पी. बाराबंकी
हरदोई	— श्री नरेश अग्रवाल ऊर्जा मंत्री उ.प्र.
सिंघौली	— श्री सी.ओ. साहब
फतेहपुर	— श्री धनराज यादव उद्यानमंत्री उ.प्र.
	— कर्णवीर जैन प्रबंधक एस.बी. आई.
	— श्रीमती डा. बीना बंसल राष्ट्रीय बाल एवं महिला संगठन अध्यक्ष
	— डा. कृष्ण बंसल अपर पुलिस महानिदेशक
बहराइच	— श्री विमल कुमार वाजपेयी पुलिस अधीक्षक
	— श्री पदम चंद चौधरी सांसद बहराइच

फैजाबाद	— श्रीमती निर्मला सिंह नगर अध्यक्ष
मेदनीगंज	— श्री वी.के. जैन मुख्य न्यायाधीश
	— श्री हरिप्रकाश सिंह नगरपालिका अध्यक्ष
	— उमादेवी गुप्ता चेयर परसन
करहल	— श्री अनिल यादव विधायक
इटावा	— श्री जयवीर सिंह भदौरिया विधायक
फिरोजाबाद	— श्री रघुवर दयाल वर्मा विधायक (पू. वनमंत्री)
बहजोई	— श्रीमती शकुन्तला देवी नगर अध्यक्ष
मसवासी	— श्री ख्यालीराम जिला पंचायत अध्यक्ष
बरेली	— श्री डा. आई.एस. तोमर मेयर
कानपुर	— श्री अनिता भटनागर जैन जिलाधिकारी
	— श्री आशु जैन इनकमटैक्स कमिश्नर
फरुखाबाद	— श्रीमती शकुन्तला गौतम सिटी मजिस्ट्रेट
रामपुर	— श्री शिवबहादुर सक्सेना मंत्री उ.प्र. सरकार
अमरोहा	— मो. अफताब आलम नगर पालिका अध्यक्ष
	— एस.डी.एम. अमरोहा, मो. इब्राहिम मंसूरी अध्यक्ष व्यापार मंडल
खतौली	— श्री आर.एस. चाहर एस.डी.एम.
बुढ़ाना	— श्री जितेन्द्र कुमार त्यागी नगर पंचायत अध्यक्ष
सहारनपुर	— श्री संजय गर्ग विधायक
साहिबाबाद	— श्री हरिओम शर्मा निगम पार्षद
इलाहाबाद	— श्री जी.वी. मेहता कुलपति इलाहाबाद वि.वि.
	— श्री पार्श्वसारथी जिलाधिकारी कौशाम्बी श्रीमती उषामेहता

उत्तर प्रदेश प्रवर्तन कार्यक्रम

क्रम.	गांव	घर	मंदिर
१.	लखनऊ	–	–
२.	दरियाबाद	४५	१
३.	सुमेरगंज	७	१
४.	बाराबंकी	–	–
५.	गणेशपुर	२८	१
६.	हरदोई	–	–
७.	सिधौली	२०	१
८.	सीतापुर	२२	२
९.	बिसवां	२५	१
१०.	महमूदाबाद	७५	२
११.	पैतेपुर	५	१
१२.	बिलहरा	५	१
१३.	फतेहपुर	–	–
१४.	त्रिलोकपुर	१५	२
१५.	बहराइच	५०	१
१६.	श्रावस्ती	–	–
१७.	इटियाथोक	७	१
१८.	अयोध्या	–	–
१९.	फैजाबाद	८	१
२०.	प्रतापगढ़	२०	१
२१.	कटरा	–	–
२२.	मेदनीगंज	१५	१
२३.	रायबरेली	१०	१

क्रम.	गांव	घर	मंदिर
२४.	मैनपुरी	२००	६
२५.	कुरावली	७०	२
२६.	भोगांव	३०	२
२७.	सराय अगहत	३	१
२८.	कायमगंज	३०	१
२९.	अलीगंज	–	१
३०.	एटा	७००	१२
३१.	कासगांव	४५	२
३२.	बिलराम	८	२
३३.	सकीट	१०	१
३४.	घिरोर	७०	१
३५.	अरांव	२०	१
३६.	सिरसागंज	२५०	४
३७.	करहल	४५०	६
३८.	इटावा	५००	१४
३९.	जसवंत नगर	६०	२
४०.	शिकोहाबाद	२००	१
४१.	फिरोजाबाद	३०००	–
४२.	टूण्डला	७००	६
४३.	फरीहा	५०	२
४४.	कोटला	१५	१
४५.	अवागढ़	१५०	४
४६.	जलेसर	७०	६
४७.	बरहान	४०	१
४८.	ऐत्मादपुर	११०	४

क्रम.	गांव	घर	मंदिर
४९.	सौरीपुर बटेश्वर	–	–
५०.	जैतपुरकलां	७०	२
५१.	वाह	६०	३
५२.	शमशहाबाद	१३०	४
५३.	मथुरा	–	–
५४.	कोसीकलां	१७५	४
५५.	हाथरस	१५०	५
५६.	सासनी	२०	१
५७.	सिकन्दराऊ	१०	१
५८.	हरदुआगंज	१०	१
५९.	अतरौली	१५	१
६०.	अलीगढ़	५००	४
६१.	खुर्जा	३५	३
६२.	बुलंदशहर	३५	१
६३.	शिकारपुर	४०	१
६४.	कन्नौज	५०	१
६५.	आगरा	५०००	६०
६६.	बहजोई	१५	१
६७.	चन्दौसी	४०	१
६८.	बिलारी	५	१
६९.	कुन्दरकी	७	१
७०.	मुरादाबाद	३००	२
७१.	बिलासपुर	३०	१
७२.	मस्वासी	१७	१
७३.	काशीपुर	–	–

क्रम.	गांव	घर	मंदिर
७४.	बाजपुर	–	–
७५.	हल्द्वानी	३६	१
७६.	बरेली	२००	१
७७.	कानपुर	८००	९९
७८.	जायस	१२	१
७९.	टिकैतनगर	८०	१
८०.	शाहजहांपुर	१०	१
८१.	फरूखाबाद	३५	३
८२.	रामपुर	६०	१
८३.	धनौरामंडी	३५	१
८४.	अमरोहा	४०	२
८५.	नहटौर	७०	१
८६.	धामपुर	–	–
८७.	शेरकोट	–	–
८८.	श्योहरा	–	–
८९.	नगीना	–	–
९०.	नजीबाबाद	–	–
९१.	कोटद्वार	–	–
९२.	कीरतपुर	–	–
९३.	बिजनौर	३५	१
९४.	मीरापुर	१०	१
९५.	जानसठ	५	१
९६.	खतौली	१०००	७
९७.	शाहपुर	७०	३
९८.	बुढाना	५०	२

क्रम.	गांव	घर	मंदिर
९९.	काधंला	६०	२
१००.	कैराना	–	–
१०१.	शामली	४००	३
१०२.	इस्लामनगर	२	–
१०३.	अम्बेहटा	२५	१
१०४.	नकुड	४०	१
१०५.	सरसावा	३०	२
१०६.	सहारनपुर	३००	१७
१०७.	चिलकाना	२५	२
१०८.	विकासनगर	७०	१
१०९.	देहरादून	१०००	४
११०.	रूडकी	२००	१
१११.	मंगलौर	२०	१
११२.	देवबंद	७०	४
११३.	बडौत	२०००	८
११४.	सरूरपुर कलां	३०	१
११५.	बागपत	८०	२
११६.	अमीनगर सराय	७०	१
११७.	बिनौली	७०	२
११८.	बरनावा	–	–
११९.	सरधना	७००	७
१२०.	हापुड	८०	३
१२१.	पिलखुवा	१०	१
१२२.	साहिबाबाद	२००	१
१२३.	मोदीनगर	२००	१
१२४.	इलाहाबाद	३५०	६
१२५.	बनारस	२००	२

उत्तरप्रदेश अवध प्रांत समिति

रामकुमार जैन, गणेशपुर, बाराबंकी —संरक्षक
सुभाषचंद जैन, अमीनाबाद, लखनऊ —संरक्षक
धर्मवीर जैन, इंदिरानगर, लखनऊ —संरक्षक
रज्जमूल जैन, लखनऊ —संयोजक
श्रीमती त्रिशला जैन, लखनऊ —संयोजक महिला
सरोज कुमार जैन, तहसील फतेहपुर —अध्यक्ष
हंसराज जैन, आर्यनगर, लखनऊ —उपाध्यक्ष
कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ —उपाध्यक्ष
विजयलाल जैन, डालीगंज, लखनऊ —उपाध्यक्ष
राजीव सेठ, निरालानगर, लखनऊ —उपाध्यक्ष
प्रदीप कुमार जैन 'गुड्डू' डालीगंज, लखनऊ —उपाध्यक्ष
के.के. जैन पत्रकार, तहसील फतेहपुर —उपाध्यक्ष
कैलाशचंद जैन एडवोकेट, बाराबंकी —उपाध्यक्ष
डा. विनय कुमार जैन, बाराबंकी —उपाध्यक्ष
विजय कुमार जैन, बहराइच —उपाध्यक्ष
अजय कुमार जैन, बाराबंकी —महामंत्री
विजय कुमार जैन पत्रकार, तहसील फतेहपुर —मंत्री
स्वराज जैन इंदिरानगर, लखनऊ —मंत्री
प्रद्युम्न कुमार जैन 'छोटी शाह' टिकैतनगर —कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी सदस्य

डा. एस.के. जैन, लखनऊ
विनोद कुमार सिंघई, लखनऊ
पी.के. जैन इंदिरानगर, लखनऊ
कैलाशचंद पाटोदी, डालीगंज, लखनऊ
सुशील कुमार जैन, डालीगंज, लखनऊ

अकलंक जैन, डालीगंज, लखनऊ
रूपचंद जैन, गणेशगंज, लखनऊ
अमरेशचंद जैन, अकबरी गेट, लखनऊ
विनय कुमार जैन, सहादतगंज, लखनऊ
महेशचंद जैन, सहादतगंज, लखनऊ
श्रवण कुमार जैन, अहियागंज, लखनऊ
राकेशचंद जैन अहियागंज, लखनऊ
श्रवण कुमार जैन कागजी, अहियागंज लखनऊ
अशोक कुमार जैन, तहसील फतेहपुर, बाराबंकी
मुन्नालाल जैन तहसील फतेहपुर, बाराबंकी
पदमचंद जैन, त्रिलोकपुर, बाराबंकी
रामगोपाल जैन, त्रिलोकपुर, बाराबंकी
प्रेमचंद जैन, महमूदाबाद अवध, सीतापुर
धर्मकुमार जैन, महमूदाबाद अवध, सीतापुर
श्रीकुमार जैन, महमूदाबाद अवध, सीतापुर
तोताराम जैन सिधौली, सीतापुर
कुंवरचंद जैन, रामपुर मथुरा, सीतापुर
उमा शंकर जैन, पैतेपुर, सीतापुर
मुन्नालाल जैन, सीतापुर
नवीन सेठी, सीतापुर
सुरेशचंद जैन, बाराबंकी
प्रेम कुमार जैन 'चुन्नू' बेलहरा, बाराबंकी
कन्हैयालाल जैन, सुमेरगंज, बाराबंकी
श्रवण कुमार जैन, दरियाबाद, बाराबंकी
मोहनलाल जैन, टिकैतनगर, बाराबंकी
शांतिप्रसाद जैन सर्राफ, टिकैतनगर, बाराबंकी

कस्तूरचंद जैन, टिकैतनगर, बाराबंकी
सुभाषचंद जैन सर्राफ, टिकैतनगर, बाराबंकी
पदमचंद जैन, गणेशपुर, बाराबंकी
कुंवरसेन जैन, बहराइच
प्रकाशचंद जैन, बहराइच
नरेन्द्र कुमार जैन, बहराइच
अभय कुमार जैन, जरवल रोड, बहराइच
जम्बू कुमार जैन, जरवल रोड, बहराइच
वीरेन्द्र कुमार जैन, रायबरेली
मिश्रीलाल जैन, बछरावां, रायबरेली
मक्खनलाल जैन, इटियाथोक
डा. दिलीप जैन, फैजाबाद, अवध

उत्तर प्रदेश-आगरा मण्डल समिति

विनय कुमार जैन, मैनपुरी
पद्म कान्त जैन, मैनपुरी
पं. शिवचरण लाल शास्त्री, मैनपुरी
महेश चंद जैन, कुरावली
हृदय मोहन जैन, सर्राफ, कुरावली
कमलचंद जैन, पत्रकार, कुरावली
डॉ. सुशील कुमार जैन, कुरावली
डॉ. सुधीर कुमार जैन, भौगांव
सुनील कुमार जैन, भौगांव
जयगुप्त जी जैन, भौगांव
अरिहन्त शरण जैन, सराय अगहत
नाथूराम जैन, सराय अगहत
महेशचंद जैन, सराय अगहत

सतीश चंद जैन, कायमगंज
नरेन्द्र कुमार जैन, कायमगंज
प्रमोद शरण जैन, कायमगंज
वीरेन्द्र प्रसाद जैन, अलीगंज
अशोक कुमार जैन, अलीगंज
विमल प्रकाश जैन, अलीगंज
प्रेमचंद जैन सर्राफ, एटा
कुलदीप कुमार जैन, एटा
सर्वेश कुमार जैन, एटा
अकलंक कुमार जैन, एटा
सतीश चंद जैन, कासगंज
विनोद कुमार जैन, कासगंज
सुरेन्द्र कुमार जैन, कासगंज
रमेशचंद जैन, बिलराम
विनोद कुमार जैन (पप्पू), बिलराम
निवास जी जैन, सकीट
दयाचंद जी जैन, सकीट
कपूरचंद जैन, सकीट
रामबाबू श्रेयांस कुमार जैन, घिरोर
बलबीर कुमार जैन, घिरोर
अरविन्द कुमार जैन, घिरोर
अरविन्द कुमार जैन, घिरोर
सूरजभान जैन, घिरोर
नरेन्द्र कुमार जैन, घिरोर
श्रीपाल जैन, अराँव
अजीत कुमार जैन, अराँव
सुनहरी लाल जैन, अराँव
सुभाषचंद जैन, अराँव
विजय कुमार जैन, सिरसागंज
कमल कुमार जैन, सिरसागंज
सनत कुमार जैन, सिरसागंज
अशोक कुमार जैन, रईस, करहल
नीरज कुमार मुकेश कुमार जैन, करहल
जीवन कुमार जैन, करहल
दिलीप कुमार जैन, करहल
राजीव कुमार जैन, करहल
महेशचंद जैन रपरिया, इटावा
आनन्द जैन बाबा, इटावा
मनीष कुमार जैन, इटावा
पातीराम जैन, इटावा
इन्द्रसेन जैन, जसवंतनगर
राजीव कुमार जैन, जसवंतनगर
हेमचंद जैन, जसवंतनगर
इन्द्रध्वज जैन, शिकोहाबाद
डॉ. चन्द्रवीर जैन, शिकोहाबाद
अनिल कुमार जैन, शिकोहाबाद
अभय कुमार जैन, फिरोजाबाद
ललितेश कुमार जैन, फिरोजाबाद
वीरेन्द्र कुमार जैन, फिरोजाबाद
डॉ. विमला देवी जैन, फिरोजाबाद
वीरेन्द्र कुमार जैन, फिरोजाबाद
देवेन्द्र कुमार मामा, फिरोजाबाद

प्रमोद कुमार जैन, फिरोजाबाद
हरिकिशन जैन, फिरोजाबाद
अनूपचंद जैन, फिरोजाबाद
कश्मीर चंद जैन, फिरोजाबाद
संजीव कुमार जैन, फिरोजाबाद
विनोद कुमार जैन, राजा का ताल
कमल कुमार जैन, राजा का ताल
प्रकाशचंद जैन, राजा का ताल
मनोज कुमार जैन, टूण्डला
पाण्डे वीरचंद जैन, टूण्डला
महेशचंद जैन, टूण्डला
महेन्द्र कुमार जैन, फरिहा
जयंतीप्रसाद जैन, फरिहा
प्रवीण कुमार जैन, फरिहा
विमल कुमार जैन, कोटला
प्रवीण कुमार जैन, कोटला
चंदप्रकाश जैन, कोटला
महावीर प्रसाद जैन, अवागढ़
राजेशचंद जैन कोटकी वाले, अवागढ़
चक्रेश कुमार जैन, अवागढ़
अश्वनी कुमार जैन, अवागढ़
प्रेमचंद जैन कैमिस्ट, अवागढ़
धन कुमार जैन, अवागढ़
रवीन्द्र कुमार जैन, जलेसर
आनन्द कुमार जैन, जलेसर
निर्मल कुमार जैन, जलेसर
अशोक कुमार जैन, बरहन
रामबाबू जैन, आगरा
महेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट, एत्मादपुर
विनय कुमार जैन, एत्मादपुर
गुलाबचंद जैन पत्थर वाले, एत्मादपुर
कैलाशचंद जैन पोद्दार, बाह
डॉ. विजय कुमार जैन, बाह
अक्षय कुमार जैन, बाह
आनन्दीलाल जैन, जैतपुर कला
महेशचंद गौरव कुमार जैन, जैतपुर कला
कैलाशचंद जैन, जैतपुर कला
मुन्नीलाल सुभाषचंद जैन, जैतपुर कला
राजेन्द्र कुमार जैन, शमशाबाद
सुरेश चंद जैन, शमशाबाद
डॉ. भूपेन्द्र कुमार जैन, शमशाबाद
अशोक कुमार जैन छाबड़ा, मथुरा
डॉ. जयप्रकाश जैन, मथुरा
मनोहरलालजी जैन, कोशीकला
ओमप्रकाश जी जैन, कोशीकला
दिनेशचंद जैन, कोशीकला
कैलाशचंद जैन, हाथरस
वीरेन्द्र कुमार जैन, हाथरस
रमेशचंद जैन टोंग्या, हाथरस
शान्तीलाल जैन, हाथरस
पंकज कुमार जैन, हाथरस
विजय कुमार जैन, सासनी

अतुल कुमार संतोष कुमार जैन, सासनी
सतीशचंद जैन, सासनी
सुमतचंद जैन, मास्टर साहब
उपेन्द्र कुमार जैन, सासनी
नीरज कुमार जैन, सिकन्दराऊ
अनिल कुमार जैन, सिकन्दराऊ
शिवकुमार जैन, हरदुआगंज
सुशील कुमार जैन, हरदुआगंज
मनोज कुमार जैन, हरदुआगंज
विजय कुमार रामनिवास जैन, हरदुआगंज
रामगोपाल सर्राफ, अतरौली
ऋषभकुमार जैन, अतरौली
पवन कुमार विचित्र कुमार जैन, अतरौली
राजेन्द्र कुमार जैन सर्राफ, अतरौली
ज्ञानचंद जैन, अलीगढ़
ज्ञानेन्द्र कुमार जैन, अलीगढ़
धर्मेन्द्र कुमार जैन, अलीगढ़
विजय कुमार जैन, अलीगढ़
सुभाषचंद जैन, अलीगढ़
प्रद्युम्न कुमार जैन, अलीगढ़
प्रकाशचंद जैन, अलीगढ़
जगवीर किशोर जैन, अलीगढ़
राजेन्द्र कुमार जैन, अलीगढ़
हरमुखराय नरेन्द्र कुमार जैन, अलीगढ़
इन्द्रकुमार जैन, अलीगढ़
विमल प्रसाद जैन, अलीगढ़

G G G G G

बंगाल बिहार, आसाम, नागालैंड, मणिपुर में समवसरण प्रवर्तन

जहाँ अनन्तों तीर्थंकर ने सिद्धधाम पाया है।
सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर सिरमौर तीर्थ गाया है।।
उस बिहार प्रांत में पावनता का ध्वज लहराया।
समवसरण यात्रा ने जिसका अन्तस अलख जगाया।।

प्रायः सभी प्रांतों में भ्रमण के पश्चात् पूर्वांचल में समवसरण प्रवर्तन का नम्बर आया। सभी लोगों ने सोचा कि पावन तीर्थ सम्मेदशिखर से अच्छा स्थान कोई और हो ही नहीं सकता है पूर्वांचल में शुभारंभ का।

अतः अनन्त तीर्थंकरों की सिद्धभूमि तीर्थराज सम्मेदशिखर से समवसरण का प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। प्रातः ८ बजे सरस्वती भवन में सभा हुयी। सभा में आचार्य श्री संभवसागर आचार्य श्री सन्मतिसागर, आचार्य श्री विवेक सागर,मुनिश्री निरंजनसागर, मुनि श्री मधुसागर व अनेक साध्वियाँ सभा में विराजमान थीं। यहाँ पर समाज नही है। फिर भी पूरा हाल भरा हुआ था। बोलिया हुईं व पूरे बाजार में शोभायात्रा निकली खूब उत्साह के साथ सभी साधु शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। सभी कमेटियों ने रथ का स्वागत किया व आरती करी।

सम्मेदशिखर की रज लेकर व सभी प्रांतों का आशीर्वाद लेकर पूर्वांचल का प्रवर्तन शुरू हो गया। गिरिडीह, देवघर होते हुए भागलपुर पहुँचे। समाज में अत्यधिक उत्साह था। सारे नगर में जगह-जगह बैनर व तोरणद्वार लगे थे। फूलों से जगह-जगह चौक सजा रखे थे। यहाँ पर मंदिर बहुत सुन्दर है। प्रातः सभा में मुख्य अतिथि श्री राकेश कुमार मिश्रा पुलिस अधीक्षक भागलपुर थे। दीप प्रज्वलनकर श्री मिश्र जी ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करीं। सारे नगर में शोभायात्रा घूमी। खूब स्वागत व आरती हुयी।

यहाँ से रथ किशनगंज के लिए प्रस्थान कर गया। दोनों रथों को पानी के स्टीमर में रखकर नदी पार करवायी गयी। किशनगंज वालों की असीम भक्ति थी।

रात्रि में हमें पहुँचने में थोड़ी देर हो गयी। सभी लोग देखने निकल गये कि रथों में क्या हो गया? खूब भक्ति से प्रातः पूजन हुई तत्पश्चात् सभा हुई। सभा अध्यक्ष चांदमल जी सरावगी (कार्याध्यक्ष पूर्वांचल समवसरण श्री विहार समिति) थे। शोभायात्रा बहुत सुन्दर निकली।

कानकी, ठाकुरगंज, मैनागुड़ी, माथाभागा, दीनहट्टा, कूचबिहार, गौरीपुर होते हुए आसाम में प्रवेश हुआ। धुबड़ी होते हुए बंगाई गांव पहुँचे। यहाँ पर समवसरण के दर्शनार्थ श्री अनिल भूषण चौधरी श्रमराज्य मंत्री असम सरकार पधारे। बरपेटा रोड, नलवाड़ी, रंगिया, खारूपेटिया, तेजपुर बोकाखात, बेडगांव, जोरहाट, शिवसागर होते हुए रथ डिब्रूगढ़ पहुँचा।

डिब्रूगढ़ वालों ने पूर्व से ही तैयारी की हुई थी। पहुँचते ही आरती कर स्वागत किया। प्रातः ऐतिहासिक शोभायात्रा निकली। यहाँ से तिनसुखिया नगर में पहुँचे। बड़े-बड़े गेट बने हुए थे। खूब आवभगत, सत्कार हुआ। सभाध्यक्ष श्री मदनलाल पाटनी थे। यहाँ पर पूर्वांचल की सबसे अच्छी बोलियां हुई। शोभायात्रा ५ घंटे तक चली, जगह-जगह खूब स्वागत हुआ। खूब प्रसाद वितरण हुआ। यहाँ से गोलाघाट होते हुए डीमापुर पहुँचे।

डीमापुर वालों ने रथ की आगवानी कर आरती की। मध्यान्ह में १ बजे पू. क्षुल्लक श्री सम्मेदखिर जी के सानिध्य में सभा हुई। शोभायात्रा पूरे नगर में घुमयी गयी।

डीमापुर से अगले दिन इम्फाल के लिए रवाना हुए। पहाड़ियों का दृश्य बहुत सुन्दर लग रहा था। ऊँचाई पर बसा हुआ कोहिमा बहुत सुन्दर लग रहा था। मार्ग बहुत ही दुर्गम एवं खतरनाक है लेकिन प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद लेते हुए हम लोग जा रहे थे। इम्फाल पहुँचने पर एक फैक्ट्री में रथ खड़ा हो गया। हम सभी लोग दिगम्बर जैन मंदिर में ठहरे। उत्साह अत्यधिक था। पूर्व संध्या पर मंदिर में सभा हुई। बोलिया हुई। सभी वक्ताओं के प्रवचन हुए।

प्रातः ८ बजे मंदिर जी में सभा हुयी। मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल मणिपुर वेदमार वाह जी थे। सभाध्यक्ष श्री तनसुखराय सेठी थे। सभास्थल खचाखच भरा हुआ था। सभा का शुभारंभ मेरे मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात्

समाज के अध्यक्ष श्री तनसुखराय जी ने स्वागत भाषण किया। इसी कड़ी में श्री स्वरूप चंद जी सोगानी ने रथ का परिचय प्रदान किया। महामहिम जी ने अपने भाषण में इस रथ को शांति व अमन का दूत बताया एवं पूज्य माताजी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करी। जिन्होंने इस युग में ऐसा सराहनीय कार्य किया है। अहिंसा शाकाहार व जैनधर्म की प्राचीनता के उद्देश्य को लेकर निकला है। उस कार्य में सफल हो यही मेरी शुभकामना है। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद जैन कर रहे थे। मंचासीन तनसुखराय सेठी (अध्यक्ष) स्वरूप चंद सोगानी (उपाध्यक्ष) मैं और पं.सुधर्म चंद शास्त्री (संचालक) थे। तत्पश्चात् राज्यपाल जी ने दीप प्रज्वलन कर रथ की आरती की व हरी झंडी दिखाकर मणिपुर प्रांत के लिए प्रवर्तन किया।

रथयात्रा बहुत भव्य थी। ऐरावत हाथी के आगे २०० महिलाएं कलश लेकर पंक्तिबद्ध होकर चल रही थीं। हाथी घोड़े व बच्चे ध्वजाएं लेकर चल रहे थे। मणिपुरी नृत्य वाले नृत्य करते चल रहे थे। जलपान की व्यवस्था थी। फल बांट रहे थे। लगभग १ किमी. तक लम्बा जुलूस था। आज पहली बार जैन समाज के कार्यक्रम में यहाँ राज्यपाल आये थे।

इम्फाल से विजय नगर पहुँचे। यहाँ पर हम लोग तीन दिन रहे। इलेक्शन की वजह से तीन दिन प्रर्वतन बंद रहा यहां पर हमारा व पं. जी का स्वागत शील्ड देकर व आसामी टोपी पहनाकर किया। शोभायात्रा बहुत अच्छी निकली।

गोहाटी में महावीर भवन में सभा हुयी। सभाध्यक्ष श्री हुकमीचंद जी पाण्ड्या (पूर्व महासभा अध्यक्ष) थे। मुख्य अतिथि श्री तनसुखराय सेठी व रतनलाल जी रारा थे। उत्साह अच्छा था। खूब स्वागत सत्कार किया। रथ के दर्शन करने वालों की अपार भीड़ थी। मेन बाजार से रथ यात्रा निकली उत्साहपूर्वक कार्यक्रम हुआ।

गवालपाड़ा में समाज के २ घर हैं एक चैत्यालय है लेकिन यहाँ वालों के आग्रह पर यहाँ रुके। रात्रि विश्राम यहीं पर हुआ। प्रातः आरती कर रथ प्रस्थान कर गया। सिलीगुड़ी होते हुए बारसोई पहुँचे। बारसोई का रास्ता बहुत खराब था। हम १० किमी. ६ घंटे में पहुँचे। रात्रि २ बजे ग्राम में पहुँचे। छोटी सी जगह है पर उत्साह इतना अच्छा जिसका वर्णन जितना करो कम है। यहाँ पर ब्र. वीरेन्द्र जी

ने स्वागत सभा में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

रायगंज, धुलियान, पाकुड़, अड़ंगाबाद, मिर्जापुर, गनकर, जंगीपुर, सन्मितनगर, लालगोला होते हुए जियागंज पहुँचे। सभा में मुख्य अतिथि श्री संतोष सिंह चावला चेयर मैन जियागंज थे। उत्साही समाज थी। माननीय चेयरमैन जी ने सभा में आकर अपने को धन्यमाना एवं मांसाहार का त्याग कर दिया। शोभायात्रा सारे नगर में घुमायी गई। खगड़ा बहरामपुर में सभा के मध्य मुख्य अतिथि के रूप में पुलक भट्टाचार्य आये। भट्टाचार्य जी ने बंगाली में अपना ओजस्वी भाषण किया एवं सभा से प्रभावित होकर गये। पूरे मुर्शिदाबाद जिले में प्रवर्तन बहुत अच्छा रहा। प्रतिदिन २ व्यक्ति अगले गांव से रथ को लेने आते थे। खूब भक्ति से पूरे जिले में कार्यक्रम हुए।

बंडेल बाजार से रिसड़ा पहुँचे। यहाँ पर आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी महाराज विराजमान थे। सभा तरुण पार्क में हुयी। अच्छा पंडाल बना हुआ था। मुख्य अतिथि स्थानीय विधायिका जी थी। खूब उपस्थिति थी। अच्छा कार्यक्रम हुआ।

कलकत्ता में बड़ा बाजार स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में सभा हुयी। पूरा हॉल भरा हुआ था। सभाध्यक्ष श्री सीताराम पाटनी व मुख्य अतिथि श्री मदनलाल बज व हुकमीचंद पाटनी थे। विशिष्ट अतिथि श्री सुधासुशील विधायक थे। सभी गणमान्य महानुभावों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में भाग लिया।

कोलाघाट में लोग पलख पावड़े बिछाकर रथ का इंतजार कर रहे थे। सारे मंदिर को लाइटों से सजा रखा था। खूब शानदार कार्यक्रम हुआ। सारे नगर में शोभायात्रा के माध्यम से धूम मचा दी।

बेल्दा होते हुए खड़गपुर पहुँचे। खड़गपुर में धर्म के प्रति रूचि लोगों की काफी दिखी। सभा धर्मशाला में हुयी। सभाध्यक्ष श्री सुभाषचंद जैन व मुख्य अतिथि श्री रविशंकर पाण्डेय चेयरमैन नगर पालिका थे। मंच संचालन विमल कुमार जी कर रहे थे। शोभायात्रा लगभग ३ घंटे तक चली जगह-जगह पेय पदार्थों की व्यवस्था थी। राजा श्रेयांस ने खूब फल बांटे। सारी समाज का सामूहिक भोज हुआ।

दुर्गापुर, रानीगंज, दुमानी, पूचड़ा होते हुए महिजाम पहुँचे। कार्यक्रम की पूर्व

संध्या पर हम नगर में पहुँचे एक किलोमीटर पहले ही लोगों ने फीता काटकर नगर प्रवेश करवाया। नगर आगमन के लिए नारियल भेंट किया। सभी लोग रंग गुलाल उड़ाते हुए लोग रथ को नगर में ले गये। प्रातः मंदिर में सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री धर्मचंद पाटनी थे। मुख्य अतिथि श्री ब्र. राजेश भइया जी थे। मंच संचालन श्री प्रकाशचंद जी कर रहे थे। उत्साह अच्छा था। ब्र. राजेश जी ने अपने वक्तव्य में पू. गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को जैन समाज की मदर टेरेसा बताया। पहली सौधर्म इन्द्र की बोली श्री धर्मचंद जी पाटनी ने ५१००० में प्राप्त करी। शोभायात्रा बहुत अच्छी निकली। जगह-जगह गेट व बैनर लगे थे। खूब प्रसाद बंटा एवं आरती जगह-जगह हुई।

धनबाद होते हुए कतरासगढ़ पहुँचे। यहाँ पर समवसरण का स्वागत सभी समाजों ने किया। वैष्णव समाज, महेश्वरी समाज, व्यापार मण्डल सभी ने खूब स्वागत किया। पूरे कार्यक्रम में हरी प्रसाद जी का काफी सहयोग प्राप्त हुआ। खरखरी, चासबोकारो, पुरुलिया होते हुए राँची पहुँचे।

झारखंड की राजधानी रांची में समवसरण का भव्य स्वागत हुआ। सभा में आचार्य श्री पद्मनंदी जी महाराज ससंघ विराजमान थे। सभाध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद जी सोगानी थे। मुख्य अतिथि श्री रामजी लाल जी शारड़ा झारखंड राज्य के प्रथम विधि एवं न्यायमंत्री थे। विशिष्ट अतिथि श्री शिवाजी महान केरे पुलिस महानिदेशक मिगरानी व आर.के. कटारिया आई.जी. मिगरानी थे। उत्साह अच्छा था। माननीय मुख्य अतिथि जी ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर नगर के लिए प्रवर्तन शुरू किया। जगह-जगह गेट बने हुए थे। पेय पदार्थ में पेप्सी बंट रही थी। जलपान की व्यवस्था थी। इस अवसर पर मंत्री जी ने मांसाहार का संकल्पपूर्वक त्याग किया।

रामगढ़ कैन्ट, पेटरवार, साडम, गोमिया कुलरो, ईसरीबाजार, सदिया होते हुए हजारीबाग पहुँचे। हजारीबाग में बारिश में भी रथयात्रा निकली। भीगते हुए भी लोग आनंद के साथ चल रहे थे। काफी भीड़ थी। चौपारण इटखोरी होते हुए चतरा पहुँचे। चतरा नगर में समवसरण का स्वागत करने श्री जयशंकर तिवारी जिला कलेक्टर आये। खूब उत्साह के साथ रथयात्रा घूमी।

डालटनगंज रथ पहुँचने पर सभी ने आरती करी। समवसरण रथ के स्वागत के लिए श्री इन्द्रसिंह जी नामधारी झारखंड विधान सभा अध्यक्ष पधारें। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं सिख हूँ। फिर भी मेरे घर में मांसाहार तो दूर प्याज, लहसुन भी नहीं खाया जाता है। बहुत प्रसन्न होकर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

औरंगाबाद में समवसरण रथ के स्वागत के लिए श्री प्रभूप्रसाद जी जज सिविल कोर्ट पधारे। साथ में कई वकील व रजिस्टार भी आये। बड़ी भक्ति से वे सारी क्रिया देख रहे थे। धनकुबेर ने सभी को एक-एक रत्नभेंट किये, भरतचक्रवर्ती ने पुस्तकें भेंट की व राजा श्रेयांस ने प्रसाद दिया। सभी के लिए ऐरावत हाथी एक आकर्षण का केन्द्र था। सभी लोग शोभायात्रा में साथ-साथ चले।

रफीगंज में अंचल अधिकारी ने फीता काट कर रथ का नगर भ्रमण करवाया। छोटा सा गांव है पर भक्ति बहुत थी। जैन-अजैन सभी ने रथ का स्वागत किया। गया होते हुए हम सभी लोग कोडरमा पहुँचे।

कोडरमा में उत्साह बहुत अच्छा था। जगह-जगह बैनर व गेट लगे थे। सारे नगर को सजा रखा था। यहाँ पर आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज ससंघ विराजमान थे। प्रातः मंदिर जी में बोलियां हुयी। तत्पश्चात् स्थानीय विधायिका जी ने दीप प्रज्वलन कर रथ का स्वागत व आरती उतारी। शोभायात्रा पूरे नगर में घुमायी। जगह-जगह खूब स्वागत एवं आरती हुई। कई चौराहों पर रथ रोककर अहिंसा शाकाहार के संदेश दिये गये। शोभायात्रा जैन भवन पहुँच कर सभा में परिवर्तित हो गई। यहाँ पर आचार्य श्री के सानिध्य में सभा हुई। उपस्थिति बहुत थी। आर्यिका श्री स्याद्वादमती माताजी ने भगवान ऋषभदेव के चरित्र पर प्रकाश डाला तथा पू. माताजी के बारे में बताते हुए इस युग की सर्वश्रेष्ठ आर्यिका बताया। आचार्यश्री ने इस यात्रा हेतू अपना आशीर्वाद प्रदान किया। एडवोकेट अनूप जैन फिरोजाबाद वालों ने रथ को समाज के लिए एक अनुपम देन बताया। पूरा हॉल भरा हुआ था। कार्यक्रम बहुत सुन्दर हुआ।

नवादा पहुँचे पर भव्य स्वागत हुआ। सभा जैनभवन में हुयी। सभाध्यक्ष श्री माणिकचंद जैन थे। मुख्य अतिथि श्री पवन कुमार दीक्षित थे। श्री दीक्षित एक अच्छे

जाने-माने वक्ता थे, उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा समवसरण रथ का अभिवंदन किया। यहाँ से हम लोग गुणावां क्षेत्र पर पहुँचे। यहाँ से गौतम स्वामी को मोक्ष प्राप्त हुआ है। सभी कमेटी वालों ने खूब स्वागत कर आरती उतारी।

राजगृही क्षेत्र पर समवसरण पहुँचा। सभी ने भक्तिपूर्वक स्वागत किया। यहां से विपुलाचल पर्वत दिखता है। जहाँ पर भगवान महावीर का समवसरण आया था। आज साक्षात समवसरण देखकर लोग फूले नहीं समा रहे थे। सारे नगर में रथ घुमाया। हम सभी लोगों ने भोजन किया। समवसरण पावापुरी क्षेत्र पर पहुँचा। पावापुरी क्षेत्र कमेटी एवं सभी कर्मचारियों ने माला पहनाकर हम लोगों का स्वागत किया। यहाँ का कार्यक्रम हमारी लिस्ट में नहीं था किंतु सभी लोगों के आग्रह पर रथ ले गये। सबने आरती उतारी और पुनः रथ भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपर (नालंदा) पहुंची। ।

पटना नगर में सभी लोगों ने मिलकर अभूतपूर्व स्वागत किया। शोभायात्रा ५-६ घंटे तक चली। यहाँ से आरा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग बहुत चलता हुआ है इसलिए पहुँचने में थोड़ी देर हो गयी। आरा शहर में सभी युवा संगठन वाले १० किमी. पहले ही आ गये। बड़े उत्साह के साथ रथ के आगे नारे लगाते हुए चल रहे थे। रात्रि में शहर से पहले ही रुके वहीं रात्रि विश्राम हुआ। यह धर्मपरायण नगरी है। घर-घर में चैत्यालय हैं। शोभायात्रा बहुत विशाल थी। जगह-जगह आरती हुई। शोभायात्रा सभा में परिणित हो गई। ऋषभदेव संगोष्ठी हुई। सभी विद्वानों ने बढ़-चढ़कर अपने वक्तव्य रखे। युवामंडल का बहुत सहयोग प्राप्त हुआ। इसी के साथ पूर्वांचल का प्रवर्तन सम्पन्न हो गया।

पूर्वांचल के तीर्थ—

सम्मेदशिखर, भागलपुर, चंपापुर, गुणावां, राजगृही, पावापुरी, कुण्डलपुर

स्वागत हेतु पधारे विशिष्ट अतिथि—

भागलपुर	— श्री राकेश कुमार मिश्रा पुलिस अधीक्षक
मैनागुड़ी	— कमिश्नर साहब
बंगाई गांव	— श्री अनिल भूषण चौधरी श्रमराज्य मंत्री असम

इम्फाल	— महामहिम राज्यपाल मणिपुर श्री वेद मारवाह जी
रिसड़ा	— विधायिका
कलकत्ता	— श्री सुधांशु जी शील विधायक
खड़गपुर	— श्री रविशंकर पाण्डेय चेयर मैन नगर पालिका
रांची	— श्री रामजी लालजी शारड़ा विधि एवं न्यायमंत्री झारखंड राज्य
	— श्री शिवा जी महान केरे पुलिस महानिदेशक मिगरानी
	— श्री आर.के. कटारिया आई.जी. मिगरानी
चतरा	— श्री जयशंकर तिवारी कलेक्टर
डाल्टनगंज	— श्री इन्द्रसिंह नामधारी विधान सभा अध्यक्ष झारखंड
औरंगाबाद	— श्री प्रभू प्रसाद जी जज सिविल कोर्ट
कोडरमा	— विधायिका

साधुओं का सानिध्य—

सम्मेद शिखर	— आचार्य श्री संभव सागर जी महाराज
	— आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज
	— मुनिश्री मधुसागर, मुनि श्री निरंजन सागर जी
ढोडगांव	— आचार्य श्री दयासागर जी महाराज ससंघ
डीमापुर	— क्षुल्लक श्री सम्मेदशिखर जी महाराज
सरिया	— आर्यिका श्री पद्मश्री माताजी
कोडरमा	— आचार्यश्री भरतसागर जी महाराज ससंघ

आसाम, बंगाल, बिहार, नागालैंड, मणिपुर प्रवर्तन

क्रम.	स्थान	घर	मंदिर
१.	सम्मेदशिखर	–	–
२.	गिरडीह	–	२
३.	देवधर	२०	१

क्रम.	स्थान	घर	मंदिर
४.	भागलपुर	१२०	१
५.	किशनगंज	१२०	१
६.	कानकी	४०	१
७.	ठाकुरगंज	१५	१
८.	मैनागुड़ी	१	१
९.	माथाभागा	५	१
१०.	दीनहट्टा	४०	२
११.	कूच बिहार	२	१
१२.	गौरीपुर	५	१
१३.	धुबड़ी	४१	१
१४.	बंगाईगांव	५०	१
१५.	बरपेटा रोड	१७	१
१६.	नलवाडी	१२०	१
१७.	रंगिया	३५	१
१८.	खारूपेटिया	४५	१
१९.	तेजपुर	३०	१
२०.	बोकाखात	१५	१
२१.	बेडगांव	२	१
२२.	जोरहाट	४०	१
२३.	शिवसागर	८	१
२४.	डिब्रूगढ़	११०	२
२५.	तिनसुखिया	८०	२
२६.	गोलाघाट	९	२
२७.	डीमापुर	३५०	१
२८.	इम्फाल	–	१
२९.	विजयनगर	१००	१

क्रम.	स्थान	घर	मंदिर
३०.	गोहाटी	८००	२
३१.	गोलपाड़ा	४	१
३२.	सिलीगुड़ी	२५	१
३३.	बारसोई	३५	२
३४.	रायगंज	१०	१
३५.	धुलीयान	५०	१
३६.	पाकुड	१५	१
३७.	अडंगाबाद	३०	१
३८.	मिर्जापुर गनकर	१५	१
३९.	अडंगाबाद	३०	१
४०.	सन्मतिनगर	९	१
४१.	लालगोला	३०	१
४२.	जियागंज	४८	१
४३.	खगड़ा	–	१
४४.	बंडेल बाजार	४०	१
४५.	रिसड़ा	७०	१
४६.	बाली	५०	२
४७.	कलकत्ता	–	–
४८.	कोलाघाट	३०	१
४९.	बेलदा	३२	१
५०.	खड़गपुर	७०	१
५१.	दुर्गापुर	३०	१
५२.	रानीगंज	८	१
५३.	दुमानी	४२	१
५४.	पूचंडा (आरती)	–	१
५५.	मिहिजाम	४५	१
५६.	धनबाद	४०	१

क्रम.	स्थान	घर	मंदिर
५७.	कतरासगढ़	२०	१
५८.	खरखरी	९	१
५९.	चास बोकारो	३२	१
६०.	पुरुलिया	५०	१
६१.	राँची	३००	१
६२.	रामगढ़ कैन्ट	६५	१
६३.	पेटरवार	९	१
६४.	साडम	२२	१
६५.	गोमिया	११	१
६६.	फुसरो	१	–
६७.	ईसरी बाजार	३०	५
६८.	सरिया	१५	१
६९.	हजारीबाग	१७५	२
७०.	चोपारन	८	१
७१.	इटखोरी	३	१
७२.	चतरा	१३	१
७३.	डालटनगंज	५०	१
७४.	औरंगाबाद	१२	१
७५.	रफीगंज	४०	१
७६.	गया	१६०	१
७७.	झुमरीतलैया	१६०	२
७८.	नवादा	३२	१
७९.	गुणांवा	–	–
८०.	राजगिरि	–	–
८१.	पावापुरी	–	–
८२.	कुण्डलपुर	–	–
८३.	पटना	७५	७
८४.	आरा	५००	५६

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्री विहार पूर्वांचल समिति

हरखचंद जी सरावगी, कोलकाता —संरक्षक
राजकुमार सेठी, कोलकाता —अध्यक्ष
हुकमीचंद पाण्ड्या, गोहाटी —कार्याध्यक्ष (आसाम)
चांदमल पाण्ड्या, किशनगंज —कार्याध्यक्ष (बिहार)
तनसुखराय सेठी, गोहाटी —उपाध्यक्ष
कन्हैयालाल सेठी, औरंगाबाद —उपाध्यक्ष
भागचंद पहाड़िया, कोलकाता —उपाध्यक्ष
पन्नालाल सेठी, डीमापुर —उपाध्यक्ष
अशोक कुमार पाण्ड्या, गिरीडीह —उपाध्यक्ष
तनसुखराय सेठी, इम्फाल —उपाध्यक्ष
महावीर प्रसाद गंगवाल, कोलकाता —उपाध्यक्ष
प्रकाशचंद पाटनी, कोलकाता —महामंत्री
केवलचंद पाटनी, कोलकाता —कोषाध्यक्ष
रतनलाल रारा, गोहाटी —मंत्री
शांतिलाल छाबड़ा, डीमापुर —मंत्री
केशरीमल छाबड़ा, इम्फाल —मंत्री
हरिप्रसाद पहाड़िया, कतरासगढ़ —मंत्री
शांतिलाल सेठी, पटना —मंत्री
अजित पाटनी, कोलकाता —मंत्री

सदस्य

अजित सेठी, कोलकाता
कैलाशचंद बड़जात्या, कोलकाता
पारसमल पाटनी, कोलकाता
कैलाशचंद जैन, सी.ए. कोलकाता
अभय कुमार जैन, कोलकाता
मदनलाल बज, कोलकाता
कल्याणजी झांझरी, कोलकाता
पूरणचंद जैन, कोलकाता
अनिल कुमार ठोल्या, कोलकाता
अनिल बड़जात्या, कोलकाता

सुशील पाण्ड्या हावड़ा
हंसराज सेठी, कोलकाता
मोहनलाल पाण्ड्या, कोलकाता
विमल जी पाटनी, कोलकाता
इन्द्रचंद काला, मिहिजाम
रतनलाल गंगवाल, पुरुलिया
विनोद सरावगी, पुरुलिया
सनत कुमार जैन, खड़गपुर
महेन्द्र कुमार जैन, बण्डेल
भोलानाथ जैन, बाली उत्तरपाड़ा
अशोक कुमार काला, बरहमपुर
शांतिचंद छाबड़ा, जियागंज
भागचंद छाबड़ा, लालगोला
जयकुमार सेठी, सन्मतिनगर
रतनलाल पाटनी, जंगीपुर
रतनलाल सेठी, अडंगाबाद
महेन्द्र पाटोदी, मिर्जापुर
मोहनलाल अजमेरा, धुलियान
नेमीचंद पाटनी, कानकी-दालखोल
ताराचंद छाबड़ा, किशनगंज
त्रिलोकचंद सेठी, किशनगंज

बिहार एवं झारखण्ड के सदस्य—

रतनलाल विनायका, भागलपुर
धन्यकुमार पाण्ड्या, नवादा
कैलाशचंद पाण्ड्या, पटना
सुबोध कुमार जैन, आरा
महेन्द्र कुमार जैन, गया
माणकचंद गंगवाल, राँची
विद्या प्रकाश जैन, रामगढ़
ताराचंद गंगवाल, गोमियां
कमल कुमार जैन, साड़म
ताराचंद जैन, देवधर बैजनाथधाम
सुरेश झांझरी, झुमरी तलैया
स्वरूपचंद सोगाणी, हजारीबाग
छितरमल पाटनी, हजारीबाग
उम्मेदमल शाह, गिरीडीह
राजेन्द्र कुमार जैन, ईसरीबाजार
संजय जैन, धनबाद
इन्द्रचंद रारा, बोकारो स्टील सिटी
कैलाशचंद जैन, जमशेदपुर टाटानगर
मोहनलाल ठोल्या, ठाकुरगंज
सम्पतजी पाटनी, बारसोई
पुखराज बाकलीवाल, पाकुड़
आसाम, नागालैण्ड एवं इम्फाल के सदस्य
विजय कुमार पाण्ड्या, गोहाटी
झूमरमल गंगवाल, गोहाटी
जय कुमार काला, गोहाटी
फतेहचंर काला, खारूपेटिया
मिश्रीलाल पाटनी, तेजपुर
राजकुमार सेठी, विश्वनाथ चाराली
सुरेश पाण्ड्या, उत्तर लखिमपुर
शांतिलाल जैन, शिलापथार

महावीर कासलीवाल, डिब्रूगढ़	महावीर प्रसाद सेठी, सिल्चर
हुलासचंद सेठी, तिनसुकिया	श्रीचंद गंगवाल, शिलांग
भागचंद बाकलीवाल, शिवसागर	इन्दरचंद पाण्ड्या, शिलांग
विमल कुमार पाटनी, जोरहाट	शांतिलाल बगड़ा, विजयनगर
बंसीलाल झांझरी, मरियानी	आनन्दीलाल गंगवाल, रंगिया (कामरूप)
दुलीचंद बाकलीवाल, डेरगाँव	कपूरचंद रावंका, नलबाड़ी (आसाम)
गंभीरमलजी बड़जात्या,	जयकुमार जैन, बरपेटा रोड
बोकाखात(जोरहाटा)	शिवचन्दराय रारा, बंगाई गांव
अजित कुमार बाकलीवाल,	कन्हैयालालजी कासलीवाल, गौरीपुर (धुवड़ी)
गोलाघाट (जोरहाट)	हनुमान प्रसाद बड़जात्या करीमगंज
गणपत गंगवाल, डीमापुर	विनोद कुमार छाबड़ा, दिसपुर (गोहाटी)
ओमप्रकाश सेठी, डीमापुर	ताराचंद जैन, मोरेह
मन्नालाल बाकलीवाल, इम्फाल	विमल कुमार जैन, डिफू

इस प्रकार संक्षेप में मैंने भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार की भारतयात्रा का आँखो देखा चित्रण प्रस्तुत किया है। उस समवसरण प्रवर्तन से प्राप्त अर्थराशि का सदुपयोग दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के माध्यम से भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में ''ऋषभदेव तपस्थली'' नामक तीर्थ के निर्माण में हुआ है तथा वहीं पर उस समवसरण की स्थाई स्थापना की गई है। उस तीर्थ के दर्शन कर आप सभी अपना जीवन सफल करें यही मंगल प्रेरणा है।

G G G G G

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।। टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पे खाए और खेले भी।।

भारत की वसुधा पर तब स्वर्ग उतर आया था-स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।।१।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।

इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।।२।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।

सतियों ने इनकी भक्ति करके लाभ पाया था-करके लाभ पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।४।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गन्धकुटि भी है।।

समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था-शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।।४।।

G G G G G